हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-176, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.

लखनऊ, सोमवार 09 दिसम्बर 2024

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने टीबी रोगियों को लेकर चलाया जा...02

महिलाओं का 33 प्रतिशत आरक्षण भाजपा सरकार तत्काल ...06

2025 में हम सबसे अच्छा-प्रदर्शन वाले बाजारों में शुमार होंगे

मस्क का एआई चैटबॉट ग्रोक सभी के लिए उपलब्ध

इस हफ्ते सोना सस्ता हुआ, चांदी के दाम बढ़े

युवा शक्ति पर जोर, कुछ भी न मानें असंभव

योगी की दीक्षांत समारोह में सीख, कर गुजरने का जज्बा रखें

मुख्य अतिथि के तौर पर हुए शामिल

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को रामा विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। सीएम ने डॉ. बीएस कुशवाहा आयुर्विज्ञान संस्थान का शुभारंभ भी किया। सीएम ने उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं और अभिभावकों को बधाई दी। इस मौके पर उन्होंने कई विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया। सीएम ने शिक्षा, स्वास्थ्य, ड्रेनेज, नवाचार, शोध आदि को लेकर विश्वविद्यालय प्रबंधन को कई सुझाव भी दिए। कार्यक्रम में सीएम ने पौधरोपण भी किया।

कानपुर, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कानपुर के रामा विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में भाग लिया। इस दौरान वह अलग ही अंदाज में नजर आए। उन्होंने कहा कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान बुद्ध, आदि शंकराचार्य, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोविंद सिंह, उनके चार साहिबजादों, रानी लक्ष्मीबाई, वीर सावरकर, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, लुईस ब्रेल, आइंस्टीन, न्यूटन के कृतित्व-व्यक्तित्व का जिक्र किया। उनके कार्यों का उदाहरण देते हुए युवाओं को प्रेरित किया कि आपकी आयु हर चुनौती से जूझने का जज्बा रखती है। युवा हर विपरीत परिस्थिति को अपने अनुकूल लाने का सामर्थ्य रखता है। सीएम योगी ने कहा कि जिन लोगों ने देश की धारा को बदलने का कार्य किया, वे सब युवा थे। युवाओं के लिए कुछ भी असंभव नहीं, बस करने का जज्बा होना चाहिए। युवा पलायनवादी नहीं हो सकता। उसे देश-काल, समाज की वर्तमान स्थितियों की जानकारी भी होनी चाहिए। युवाओं को नवाचार, नए शोध व आसपास घटित होने वाली घटनाओं का अवलोकन करने की कार्यशैली को विकसित करना होगा।

सत्य के साथ पकड़ें धर्म का मार्ग

सीएम योगी ने विद्यार्थियों से कहा कि सत्य के आचरण के साथ धर्म के मार्ग का अनुसरण करना है। धर्म का मार्ग बहुत विराट है। वास्तव में दुनिया के अंदर धर्म को भारतीय ऋषियों ने समझा है। यह सिर्फ उपासना विधि नहीं है। किसी ऋषि ने यह कभी नहीं कहा कि जो मैं कह रहा हूं, वही सत्य है। ऋषियों ने कहा है कि देश, समाज के लिए जो अच्छा लगे, उसका आचरण कर आगे बढ़ो। सीएम ने कहा कि कोई सनातन धर्मावलंबी यह नहीं कह सकता कि जो मंदिर जाए, वही हिंदु है। वेदों-शास्त्रों में विश्वास करु या नहीं, तब भी मेरा हिंदुइज्म मुझे लेकर चलेगा। हमने धर्म को उपासना विधि, ईष्ट या ग्रंथ तक सीमित नहीं किया। कर्तव्य, सदाचार और नैतिक मूल्य का प्रवाह ही भारतीय परंपरा में धर्म माना गया है।

गुरुजनों के सम्मान की सीख

सीएम योगी ने कहा कि श्रद्धावान ही ज्ञान प्राप्त करने का अधिकारी है। जिसके मन में गुरुजन, माता-पिता और वरिष्ठों के प्रति श्रद्धाभाव नहीं है, उसे ज्ञान प्राप्त हो भी नहीं सकता। देशकाल और पात्रता का ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके बाद ही उसके अनुरूप ज्ञान से परिपूर्ण करना चाहिए। सीएम योगी ने विद्यार्थियों से कहा कि जीवन में अनेक अवसर आते हैं, जो व्यक्ति को महान बनने का मौका प्रदान करते हैं। यह आपके विवेक पर निर्भर करता है कि उसके अनुरूप खुद को ढालने का सामर्थ्य रख पा रहे हैं या नहीं।

सीएम ने की संस्थान की तारीफ

सीएम योगी ने कहा कि कानपुर जिले के अर्धविकसित क्षेत्र में चार दशक पहले जो बीज रोपा गया था, वह आज वटवृक्ष बनकर विश्वविद्यालय के रूप में शिक्षा-स्वास्थ्य, तकनीकी ज्ञान, नवाचार, शोध, निवेश व रोजगार का बेहतरीन केंद्र बनकर उभरा है। एक संस्थान विकास का माध्यम कैसे बन सकता है, यह रामा कॉलेज ने साबित किया है।

इंडिया समूह का नेतृत्व करने में सक्षम हैं ममता : पवार

मुंबई, एजेंसी।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (सपा) प्रमुख शरद पवार ने कहा है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इंडिया समूह का नेतृत्व करने में सक्षम हैं। श्री पवार ने कोल्हापुर में शनिवार को पत्रकारों से कहा कि तृणमूल कांग्रेस प्रमुख को विपक्षी गठबंधन का नेतृत्व करने की अपनी मंशा दिखाने का अधिकार है। इंडिया समूह के भीतर कई नेताओं ने भी सुश्री बनर्जी के बयान का स्वागत किया है। राकांपा (सपा) की नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि वह सुश्री बनर्जी की अतिरिक्त जिम्मेदारी उठाने की इच्छा से प्रसन्न हैं। इस पर मुद्दे पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवसेना (शिंदे गुट) के सांसद उदय सावंत ने कहा कि यह कांग्रेस का अपमान है। इससे साबित होता है कि कांग्रेस नेतृत्व नेतृत्व करने में सक्षम नहीं है। श्री पवार ने खुद इसे स्पष्ट कर दिया है। विपक्षी इंडिया समूह आंतरिक कलह का सामना कर रहा है, जिसमें इसके सदस्य दलों के बीच मतभेद सामने आ रहे हैं। महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी गठबंधन की हार के बाद सुश्री बनर्जी ने इंडिया समूह का नेतृत्व संभालने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि इस गठबंधन को चलाने वाले विपक्षी गुट का प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने में असमर्थ हैं। 23 नवंबर को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का रिजल्ट आया था। सोलापुर जिले की मालसिरस विधानसभा सीट से एनसीपी (शरद गुट) उम्मीदवार उत्तमराव जानकर ने जीत हासिल की थी। उन्होंने बीजेपी के राम सातपुते को हराया था। रिजल्ट के बाद मालसिरस विधानसभा के मारकडवाडी गांव के लोगों ने दावा किया था कि गांव के ज्यादातर लोगों ने एनसीपी प्रत्याशी को वोट दिए थे, लेकिन ईवीएम के आंकड़े के मुताबिक बीजेपी प्रत्याशी को 1003 वोट मिले हैं और एनसीपी प्रत्याशी को 843 वोट। ये गलत है। गांववालों का दावा है कि बीजेपी प्रत्याशी को 100-150 वोट से ज्यादा नहीं मिल सकते हैं। गांववालों ने खुद के खर्चे पर स्थानीय प्रशासन ने बैलट पेपर पर दोबारा मतदान कराने की अपील की थी।

महाराष्ट्र में 103 किसानों को वक्फ बोर्ड का नोटिस

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में किसानों ने शनिवार को आरोप लगाया है कि राज्य वक्फ बोर्ड उनकी जमीन पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। दरअसल, करीब 300 एकड़ जमीन पर दावे का मामला महाराष्ट्र स्टेट वक्फ ट्रिब्यूनल में चल रहा है। इस संबंध में बोर्ड ने लातूर के 103 किसानों को नोटिस भेजा है। मामलें में दो सुनवाई हो चुकी हैं। अगली सुनवाई 20 दिसंबर को होनी है। इस पर किसानों ने दावा किया है कि यह वक्फ की संपत्ति नहीं है, उनकी पुश्तैनी जमीन है। वे पीढ़ियों से इस पर खेती करते आ रहे हैं। किसानों ने महाराष्ट्र सरकार से न्याय दिलाने की अपील की है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष समीर काजी ने इससे इनकार किया है। उन्होंने मीडिया को बताया कि बोर्ड की तरफ से किसी को नोटिस नहीं भेजा गया है। किसी जमीन पर दावा भी नहीं किया गया है। एक व्यक्ति ने ट्रिब्यूनल में अपील की है, सिर्फ उसे नोटिस भेजा गया है।

शंभू बॉर्डर से पीछे हटे किसान, नहीं लांघ पाए हरियाणा पुलिस के बैरिकेड, टला दिल्ली कूच

चंडीगढ, एजेंसी।

पंजाब के 101 किसान दोपहर 12 बजे पैदल शंभू बॉर्डर से दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन बॉर्डर पर हरियाणा पुलिस ने उन्हें रोक लिया। यहां पुलिस और किसानों के बीच बहस हुई। इसके बाद किसानों पर आंसू गैस के गोले दागे गए। 5 किसान घायल हुए है। जिसमें एक की हालत गंभीर है। उसे चंडीगढ़ पीजीआई रेफर किया गया है। आज फिर शंभू बॉर्डर से किसान पीछे हट गए। सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि मीटिंग कर आगे की रणनीति बनाई जाएगी। बता दें कि किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा था कि हमने 101 किसानों की लिस्ट जारी की है। उधर हरियाणा पुलिस का कहना है कि हम पहले किसानों की पहचान करेंगे और फिर उन्हें आगे जाने देंगे। हमारे पास 101 किसानों के नामों की लिस्ट है और वे (किसान) लोग नहीं हैं। वे हमें अपनी पहचान नहीं करने दे रहे हैं। किसान हथियार लेकर आए हैं। आंसू गैस के गोले छोड़े जाने के बाद शंभू बैरियर पर भगदड़ मच गई थी। क्योंकि आज हवा अंबाला से पंजाब की साइड चल रही है। इससे पंडाल की तरफआंसू गैस आ रही थी। हरियाणा पुलिस किसानों और मीडिया कर्मियों को चाय-बिस्किट ऑफर कर रही है। हालांकि किसान चाय और बिस्किट नहीं ले रहे हैं। इस दौरान जय जवान जय किसान के नारे भी लगाए गए। हरियाणा पुलिस की तरफसे किसानों की हाजिरी लगाई जा रही है। किसानों को कहा गया है कि वह वेरिफिकेशन करवाएं। पुलिस ने कहा कि पहचान पत्र साथ होना चाहिए। आगे की बाद बाद में देखेंगे। पुलिस का कहना है कि किसान सहयोग नहीं कर रहे हैं। किसान केंद्र सरकार से फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की गारंटी के कानून समेत 13 मांगें कर रहे हैं।

राहुल गांधी पहुंचे जयपुर, नेतृत्व संगम ट्रेनिंग कैम्प में होंगे शामिल

जयपुर, एजेंसी। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी रविवार सुबह राजस्थान की राजधानी जयपुर पहुंचे। यहां वो श्नेतृत्व संगम ट्रेनिंग कैंपश् में हिस्सा लेंगे। हवाई अड्डे पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने उनका स्वागत किया। जयपुर में कांग्रेस की तरफसे संगम नेतृत्व कैंप का आयोजन किया जा रहा है। राहुल इस कार्यक्रम में छह घंटे तक रुकेंगे। इसके बाद वो खेड़ापति बालाजी जाएंगे। इस कार्यक्रम में शिरकत करने के बाद वह शाम 5रू25 बजे दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे। कांग्रेस का यह ट्रेनिंग कैंप हर साल होता है। राहुल गांधी नेतृत्व संगम कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं संग पार्टी की मौजूदा विचारधाराओं के संदर्भ में चर्चा परिचर्चा करेंगे।

बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफ अत्याचार, 11 दिसम्बर को प्रदर्शन

लखनऊ, संवाददाता। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के गोरखपुर से सांसद रवि किशन ने कहा कि बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफहो रहे अत्याचार के खिलाफ11 दिसम्बर को गोरखपुर में बड़ा प्रदर्शन होगा। भाजपा सांसद रवि किशन ने कहा कि बांग्लादेश में हिन्दुओं और साधू संतों के साथ जो अत्याचार हो रहा है। उसके खिलाफ गोरखपुर में बड़ा प्रदर्शन होगा। इसमें सभी संगठन आरएसएस, बजरंगदल जैसे बड़े संगठन भी हिस्सा लेंगे। उन्होंने बताया कि इस अत्याचार के खिलाफपूरे देश में गांव-गांव तक विरोध हो रहा है। हम लोग वहां हो रहे अत्याचार से काफी विचलित हैं। मन बहुत दुखी है। इंडिया गठबंधन में ममता बनर्जी के लीड करने के सवाल पर उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन में शामिल सभी दल तितर-बितर हो गए हैं। यह लोग मौका परस्त हैं।

भारत का वास्तविक स्वरूप देखने के लिए ज्ञानेंद्रियां खोलने की आवश्यकता :धनखड़

नयी दिल्ली, एजेंसी। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने रविवार को कहा कि आधुनिक भारत का वास्तविक स्वरूप देखने के लिए कुछ लोगों को अपने ज्ञानेंद्रियां खोलने की आवश्यकता है। श्री धनखड़ ने हरियाणा के कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत आज दुनिया भर के निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भारत की आर्थिक प्रगति का सकारात्मक आकलन कर रही है और इसे आकर्षक स्थान बता रही हैं। इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी उपस्थित रहे। उप राष्ट्रपति ने कहा कि भारत ने दस वर्ष में असाधारण समय देखा है। अकल्पनीय आर्थिक प्रगति और अविश्वसनीय संस्थागत ढाँचा भारत को मिल रहा है। भारत की आवाज बुलंदी पर है। उन्होंने कहा,दुनिया की हम महाशक्ति तो हैं ही पर हमने एक रास्ता चुन लिया है, वह रास्ता चुन लिया है। वह वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाना का है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत अब सपना नहीं है। विकसित भारत हमारे सामने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्ति में गीता का ज्ञान ध्यान रखना पड़ेगा। श्री धनखड़ ने कहा कि विदेशी मुद्रा भंडार 700 डालर तक पहुँच गया है। पिछले दो साल में जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों की संख्या दो करोड़ से ज्यादा है।

मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद सीमा सुरक्षा नीति में महत्वपूर्ण सुधार हुआ : अमित शाह

नयी दिल्ली, एजेंसी।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के 60वें स्थापना दिवस परेड समारोह में भाग लेते हुए कहा कि कई वर्षों से अस्पष्ट रही सीमा सुरक्षा नीतियों में मोदी सरकार के तहत महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। इस कार्यक्रम में बोलते हुए शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में मजबूत बुनियादी ढांचे का विकास किया गया है और आधुनिक बाड़ लगाने की प्रणालियां स्थापित की गई हैं। उन्होंने कहा कि जब भी सीमा से किसी दुर्घटना के बारे में कोई सूचना आती है तो देश के गृह मंत्री को इसकी जरा भी परवाह नहीं होती, क्योंकि वहां बीएसएफ मौजूद होती है। गृह मंत्री ने कहा कि बीएसएफ को रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में जाना जाता है और इसके जवानों ने सीमा पर सभी चुनौतियों का अत्यंत बहादुरी से सामना किया है। उन्होंने कहा, ''जब भी सीमा पार से किसी चुनौती या अप्रिय घटना की सूचना मिलती है और यह पुष्टि होती है कि वहां बीएसएफ का कोई जवान मौजूद है, तो हम निश्चिंत और चिंतामुक्त महसूस करते हैं।'' शाह ने कहा कि बीएसएफ की शुरुआत 25 बटालियनों से हुई थी और अब इसकी संख्या 193 हो गई है, जिससे यह दुनिया का सबसे बड़ा सीमा सुरक्षा बल बन गया है। गृह मंत्री ने कहा, ष्पिछले वर्षों तक सीमा सुरक्षा नीति अस्पष्ट रही, लेकिन मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद स्पष्ट रणनीति के तहत सीमा सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। मोदी जी के कार्यकाल में सीमावर्ती क्षेत्रों में मजबूत बुनियादी ढांचे का निर्माण किया गया है और आधुनिक बाड़ लगाई गई है।ष् गृह मंत्री ने आगे बताया कि सीमावर्ती क्षेत्रों में जीवंत गांव कार्यक्रम की शुरूआत मोदी सरकार की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है।

संक्षिप्त समाचार

देहरादून पुलिस की हरिद्वार में बदमाशों से मुठभेड़

देहरादून, एजेंसी। उत्तराखंड के देहरादून जनपद पुलिस की रविवार की मध्य रात्रि को हरिद्वार में बदमाशों से मुठभेड़ हुई। दोनों तरफ से हुई फायरिंग में एक बदमाश पुलिस की गोली से घायल हो गया, जबकि दो अन्य फरार हो गए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) अजय सिंह ने रविवार सुबह कहा कि आज रात्रि समय करीब 01.00 बजे रात्रि में जनपद पुलिस द्वारा रायवाला क्षेत्र मैं हुई चोरी की घटना के संदिग्ध बदमाश व संदिग्ध एक आई10 कार का रुड़की की ओर से हरिद्वार की तरफ पीछा किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि जनपद हरिद्वार के थाना बहादराबाद पुलिस को उक्त गाड़ी की चेकिंग व रोकने के लिए सूचना दी गई। सूचना पर शांतरशाह चौकी क्षेत्र अंतर्गत, आरोग्यम के पास बहादराबाद पुलिस ने चेकिंग को जब उक्त कार रोकने का प्रयास किया गया तो वह गाड़ी बड़ेरी की ओर भागी।

चीन मुद्दे पर संसद में व्यापक चर्चा कराये सरकार : कांग्रेस

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने कहा है कि चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने हाल में संसद में जो बयान दिया है, उसमें स्पष्टीकरण का मौका नहीं दिया गया है इसलिए इस मुद्दे पर संसद में व्यापक चर्चा की जानी चाहिए। पार्टी ने कहा है कि चीन के साथ सीमा पर विवाद की जो स्थिति है, उसमें चीन की तरफ से किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। हाल के वर्षों में चीन के साथ हमारी आर्थिक निर्भरता बढ़ी है, इसलिए संसद में इस मुद्दे पर रणनीतिक और आर्थिक स्थिति को लेकर सरकार को चर्चा करानी चाहिए और जो सवाल इस मुद्दे पर आए उन पर स्पष्टीकरण देना चाहिए। कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने रविवार को यहां जारी एक बयान में कहा, हमें विदेश मंत्री के बयान पर किसी भी तरह के स्पष्टीकरण की मांग नहीं रखने दी गई थी। संसद को चीन के साथ सीमा पर चुनौतियों से निपटने के सामूहिक संकल्प पर बात करने का मौका नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 19 जून 2020 को चीन को लेकर बयान दिया था कि हमारी सीमा में ना कोई घुस आया है।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में दो पुलिसकर्मियों की मौत

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में रविवार सुबह एक संदिग्ध घटना में दो पुलिसकर्मियों की मौत हो गई और एक घायल हो गया। पुलिस ने एक बयान में कहा कि सुबह करीब साढ़े छह बजे पुलिस स्टेशन रहमबल में पुलिस को सूचना मिली कि विभाग के वाहन में सोपोर से रियासी जिले के तलवाड़ा ट्रेनिंग सेंटर की ओर जा रहे दो पुलिसकर्मी गोलीबारी के कारण घायल हो गए हैं। बयान में कहा गया, शुरुआती जांच से पता चला है कि यह हत्या और उसके बाद आत्महत्या का मामला है। इस बीच, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और जांच शुरू कर दी है। उधमपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आमोद नागपुरे ने कहा, प्रारंभिक जांच के अनुसार, यह साबित हो गया है कि घटना में एके -47 राइफल का इस्तेमाल किया गया था।

आंध्र के पलनाडु में कार के पेड़ से टकराने से चार की मौत

गुंटूर, एजेंसी। आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले में रविवार को एक कार के पेड़ से टकरा जाने से चार लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने कहा कि मृतकों में से एक तुल्लुरी सुरेश ने एक नई कार खरीदी थी। वह और उनके परिवार के सदस्य अपनी मन्नत पूरी करने के लिए तेलंगाना के कोंडागुट्टा अंजनेय स्वामी मंदिर गए थे।

सीरिया में विद्रोहियों ने दमिश्क पर किया कब्जा देश छोड़कर भाग गए राष्ट्रपति असद

दमिश्क, एजेंसी।

सीरिया के विद्रोहियों ने रविवार को राज्य टेलीविजन पर ऐलान किया कि उन्होंने राजधानी दमिश्क को आजाद कर लिया है और राष्ट्रपति बशर अल-असद की सरकार को हटा दिया है। विद्रोहियों ने जेल में बंद सभी कैदियों को रिहा कर दिया है। बताया जा रहा है कि असद देश छोड़कर किसी अज्ञात स्थान पर चले गए हैं। विद्रोहियों ने राजधानी में प्रवेश किया और सरकारी सेना की कोई तैनाती नहीं देखी गई। दमिश्क पर कब्जा करने के बाद विद्रोही असद सरकार को बड़ा झटका देने की कोशिश कर रहे हैं। फिलहाल, असद सरकार केवल तीन प्रांतीय राजधानियों दमिश्क, लताकिया और टार्टस पर नियंत्रण रखती है। सीरियाई सेना का कहना है कि वह अभी भी हमा, होम्स और डेरा के ग्रामीण इलाकों में आतंकवादी समूहों के खिलाफ कार्रवाई कर रही है।

अखिलेश यादव बोले, जनता में असंतोष पनप रहा है, जो कल को हड़ताल बनकर उभरेगा

लखनऊ, संवाददाता।

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश आवश्यक सेवा रखरखाव अधिनियम के तहत अगले छह महीने के लिए अपने विभागों, निगमों और स्थानीय प्राधिकरणों में हड़ताल और प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगाए जाने को लेकर योगी सरकार जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि उप्र सरकार का ये फरमान अपने आप में उप्र में लगातार बढ़ते खराब हालातों को बयां कर रहा है कि अगले 6 महीनों तक अनिवार्य सेवा अनुरक्षण कानून के तहत हड़ताल पर प्रतिबंध होगा। उन्होंने कहा कि सच्चाई ये है कि भाजपा को जोड़-तोड़ और हेराफेरी से सरकार बनाना तो आता है पर भ्रष्ट आचार-विचार के कारण सरकार चलाना नहीं। जो सरकार अपने अधीन लोगों पर ही पाबंदी लगा रही है, इसका तो सीधा मतलब यही हुआ ना कि वो मान रही है कि कर्मचारियों-अधिकारियों के बीच विरोध और आक्रोश का सुषुप्त ज्वालामुखी कभी भी फट सकता है।

भारतीय पादरी को कार्डिनल नियुक्त करने पर मोदी ने जताई खुशी

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारतीय पादरी आर्कबिशप जॉर्ज जैकब कूवाकड को पोप फ्रांसिस द्वारा कार्डिनल नियुक्त किया जाना देश के लिए बहुत खुशी और गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि जॉर्ज कूवाकड ने ईसा मसीह के अनुयायी के रूप में मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ष्भारत के लिए बहुत खुशी और गर्व की बात है। परम पावन पोप फ्रांसिस द्वारा जॉर्ज जैकब कूवाकड को पवित्र रोमन कैथोलिक चर्च का कार्डिनल बनाए जाने पर प्रसन्न हूं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने टीबी रोगियों को लेकर चलाया जा रहा है विशेष सघन क्षय रोगी अभियान

तीसरा विकल्प न्यूज़ * संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिला क्षय रोग अधिकारी ने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व को वर्ष- 2025 तक टी.बी. मुक्त कराये जाने का लक्ष्य रखा है जिसे गंभीरता से लेते हुए प्रधानमंत्री द्वारा भारत को वर्ष-2025 तक टी.बी. मुक्त कराये जाने का आह्वान किया है।इसी क्रम में भारत सरकार एवं राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से जनपद में एक सौ दिवसीय विशेष सघन क्षय रोगी अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान की शुरुआत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, खैराबाद से की गई।इस कार्यक्रम का उद्घाटन नगर विकास राज्य मंत्री,उ.प्र. शासन राकेश राठौर गुरू द्वारा किया गया। इस उद्घाटन समारोह में नगर पालिका परिषद खैराबाद प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता,डा. हरपाल सिंह मुख्य चिकित्सा अधिकारी सीतापुर,डा. मनोज कुमार देशमणि जिला क्षय रोग अधिकारी,डा. आर.एस. यादव अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खैराबाद आदि उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त राज्य स्तर से नामित प्रतिनिधि के रूप में विवेक द्विवेदी महा प्रबंधक आयुष उ.प्र. बन वारी लाल सहायक कार्य क्रम अधिकारी,डा. रजनीश त्रिपाठी सलाहकार राज्य टेक्निकल सपोर्ट यूनिट उ.प्र. लखनऊ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आशीष कुमार दीक्षित जिला पी.पी.एम. समन्वयक द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि इस अभियान के लिए तीन मुख्य लक्ष्य स्थापित किये गये हैं- अतिसंवेदनशील जन संख्या में क्षय रोगियों की खोज करना। क्षय रोगियों की मृत्यु दर को कम करना। क्षय रोग के संक्रमण से बचाव की औषधि प्रदान करना। इस अभियान के अन्तर्गत व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा उच्च जोखिम वाली जन संख्या में टी.बी. के लक्षणों जैसे दो हफ्ते से अधिक खांसी,लगातार बुखार रहना वजन घटना,सीने मे दर्द,बल गम में खून आना,रात में अत्यधिक पसीना आना, थकान, शरीर के किसी भाग में गाँठ होना, हाल में हुए शारीरिक बदलाव,बांझपन आदि के आधार पर स्क्रीनिंग की जायेगी।टी.बी. से पीड़ित व्यक्तियों में डिफरेंशिएटेड टी.बी. केयर अप्रोच पद्धति को लागू कर पोषण संबंधी सहाता प्रदान कर मृत्यु की सम्भावना को कम किया जायेगा। इसके अतिरिक्त उच्च जोखिम वाली जनसंख्या यथा पूर्व में टी.बी. का उपचार ले चुके व्यक्ति,साठ वर्ष से अधिक आयु, 18.5 किग्रा/मी दो से कम बी.एम.आई. वाली कुपोषित जनसंख्या,मधु मेह रोगी,धूम्रपान व नशा करने वाले,इलाज प्राप्त कर रहे टी.बी. रोगियों के साथ रहने वाले सदस्य,इलाज पूरा कर चुके टी.बी. रोगी व एच.आई.वी. ग्रसित व्यक्तियों की स्क्रीनिंग की जायेगी। इस अभियान के लिए सरकार द्वारा चार मोबाइल वैन उपलब्ध करायी गयी हैं जो कि जनपद के दूरस्थ स्थानों में नि:क्षय शिविरों पर जा कर प्रचार-प्रसार करेंगी तथा व्यक्तियों की स्क्रीनिंग में सहायता करेंगी।समस्त संदिग्ध मरीजों का टू-नॉट, सी.बी. नॉट व एक्स-रे कराया जायेगा। इस अभियान के अन्तर्गत खोज गये मरीजों को अड़तालिस घण्टों में उपचार पर रखा जायेगा तथा उन्हें समस्त सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाएं। नि:शुल्क प्रदान की जायेगी व उन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा गोद दिलाये जाने का प्रयास किया जायेगा। और जो जांच टी.बी.रोग से ग्रसित नहीं पाये जायेंगे उनको टी.बी.के संक्रमण से बचाव के लिए औषधियां प्रदान की जायेंगी।इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा पोषण सुधार के लिए उपचार अवधि मे एक हजार रुपए प्रति माह मरीज को डी.बी.टी.के माध्यम से प्रदान किये जायेगे। कार्यक्रम में उपस्थिति जन समान्य को सम्बोधित करते हुए राज्य मंत्री द्वारा समस्त संदिग्धों को अपनी जाँच कराने तथा जाँच टीमों का सहयोग करने समय से औषधियाँ लेने पर बल दिया।इसके अतिरिक्त स्वयं सेवी संस्थाओं से टी.बी. मरीजों को गोद लेने हेतु आगे आने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम के अन्त में पांच टी.बी. मरीजों को मंत्री द्वारा पोषण पोटली प्रदान की गयी तथा पांच निक्षय मित्रों एवं पांच टी.बी. चैम्पियनों को भी प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

जिला पंचायत अध्यक्ष और मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बच्चों को पोलियो खुराक पिलाकर बूथ का किया उद्घाटन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता शाहजहांपुर

शाहजहांपुर। जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आर के गौतम ने संयुक्त रूप से नगरीय आयुष्मान आरोग्य मंदिर मोहल्ला सराय काइयां में सघन पल्स पोलियो अभियान के बूथ का उद्घाटन फीता काट कर किया। जिला पंचायत अध्यक्षा श्रीमती ममता यादव ने 5 बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक देकर समस्त नागरिकों से अपील की अपने 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो के खुराक़ अवश्य पिलाएं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आर के गौतम ने बताया भारत पोलियो से मुक्त हो गया है लेकिन पड़ोसी देशों में पोलियो के वायरस मौजूद हैं इसलिए एहतियातन भारत के सभी 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो से पूर्ण रूप से प्रतिरक्षित किया जाना जरूरी है इसलिए सभी नागरिकों से अपील है अपने बच्चों को पोलियो की खुराक अवश्य पिलाएं। जिला प्रशिक्षण अधिकारी डॉ पी पी श्रीवास्तव ने बताया कि जनपद में रविवार को 1976 बूथों पर पोलियो की खुराक पिलाई जा रही है 09 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2024 तक स्वास्थ्य विभाग की 991 टीमें घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाएंगी एवं ट्रांजिट टीमों द्वारा ईंट भट्ठे, घुमंतू लोगों एवं भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक स्थानों पर पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। उद्घाटन के अवसर पर डॉ वी एस चंदेल एस आर एल डब्ल्यू एच ओ, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ मनोज मिश्रा, यूनिसेफ से हुदा जेहरा, एसएमओ डॉ आकांक्षा यादव ,जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी वीरेंद्र शर्मा, डीपीएम इमरान, डीसीपीएम पुष्पराज, अर्बन कोऑर्डिनेटर पुनीश, शशिविन्द शुक्ला ,सर्वेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

बहू और बेटे ने 1 घंटे तक नहीं लगने दी पिता की चिता में आग

❑ थाना पुलिस ने समझा बुझाकर जाकर कराया अंतिम संस्कार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

बिछवा। थाना क्षेत्र के गांव करीमगंज के समीप बिछवा मार्ग पर एसपी कोल्ड स्टोर के सामने जमीन के विवाद के चलते एक लड़के और बहू ने अपने ससुर की चिता में 1 घंटे आग नहीं लगने दी। कंट्रोल रूम को सूचना दी कि यदि चिता में आग लगी तो वह खुद कर अपनी जान दे देगी। मामले की सूचना पर आनन फानन में थाना पुलिस ने पहुंचकर महिला व उसके पति को समझाया उसके बाद अंतिम संस्कार किया गया। गांव करीमगंज निवासिनी सुमन देवी पत्नी गिरीश कठेरिया ने हंगामा काटते हुए आरोप लगाया कि उसके पिता ससुर की जमीन उसकी जेठानीसुमवन पत्नी अमर सिंह बबीता पत्नी प्रेम सिंह ने अपने नाम कर ली और उसकी जगह में जबरिया उनकी मौत होने पर उनका चिता जलने का प्रयास कर रहे हैं 1 घंटे तक उसने हंगामा किया पुलिस पहुंचने के बाद समझा वह जाकर सब का अंतिम संस्कार कर दिया गया

मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने पलाशबाड़ी-शुवालकुची पुल के निर्माण के भूमि-पूजन पुल को जून 2028 तक लक्ष्य रखा गया है: सीएम

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। प्रदेश की सड़क कनेक्टिविटी में एक नया आयाम जोड़ते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने आज पलाशबाड़ी - शुवालकुची पुल के निर्माण कार्य के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित भूमि-पूजन समारोह में भाग लिया। राज्य के सड़क संपर्क बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाने की दिशा में आज का दिन ऐतिहासिक बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्मपुत्र पर पलाशबाड़ी-शुवालकुची पुल के निर्माण के लिए भूमि पूजन आज किया गया।मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 अप्रैल, 2023 को असम की अपनी यात्रा के दौरान असम के लोगों को एम्स, सार्वजनिक सेवा के लिए तीन नए मेडिकल कॉलेज समर्पित किए और नहरकटिया में पेट्रोकेमिकल्स परियोजना का उद्घाटन करने के अलावा उसी दिन उन्होंने सरुसजाई खेल परियोजना से 3197.20 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले पलाशबाड़ी-शुवालकुची पुल की आधारशिला रखा था। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा शिलान्यास के बाद इसके परियोजना रिपोर्टों, निविदाओं और जनता से भूमि संग्रह का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि सभी औपचारिकताओं के बाद, आज भूमि पूजन किया गया। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जून 2028 तक पुल को पूरा करने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि पुल 3.6 किमी लंबा होने के साथ पलाशबाड़ी की दिशा में 5.3 किलोमीटर लंबा चार लाइन वाले रास्ते होगें और शुवालकुची की ओर 2 किमी लंबी सड़क का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बाथन, शुवालकुची और पलाशबाड़ी के लोग सीधे आ सकें, यह सुनिश्चित करने के लिए भी व्यवस्था की गई है, उन्होंने कहा कि पलाशबाड़ी की तरफ भी व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस पुल के निर्माण से पूरे उत्तर और दक्षिण के बीच कनेक्टिविटी का पथ-प्रदर्शक परिवर्तन होगा और सरायघाट पुल से गुजरे बिना गौहाटी विश्वविद्यालय, मेघालय के तुरा, गोवालपारा आदि जैसे स्थानों पर जाना सुविधाजनक होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर पुल बन जाता है, तो गुवाहाटी में सरकारी योजनाओं को लागू करने की सुविधा नहीं होने पर हाजो, रामदिया, शुवालकुची आदि जगहों पर योजनाएं लागू की जा सकती हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जोरहाट और माजुली के बीच ब्रह्मपुत्र नदी पर नए पुल का काम शुरू हो गया है। गहपुर और गोलाघाट के बीच 12,000 करोड़ रुपये की सुरंग सड़क का निर्माण अगले साल तक शुरू हो जाएगा। उन्होंने यह भी घोषणा की कि बाढ़ के दौरान काजीरंगा के वन्यजीवों की रक्षा के लिए 32 किलोमीटर की 8,000 करोड़ रुपये की लागत से बनाए जाने वाले एलिवेटेड कॉरिडोर पर काम इस साल शुरू हो जाएगा। कालियाभोमोरा में ब्रह्मपुत्र नदी पर दूसरे पुल का निर्माण पूरा होने का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मोरीगांव और दरंग के बीच ब्रह्मपुत्र नदी पर एक और नया पुल बनाने के लिए कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि गुवाहाटी और उत्तरी गुवाहाटी को जोड़ने वाले पुल का उद्घाटन अगले साल किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इसी वर्ष नरेंगी और कुरुवा के बीच एक और पुल का काम शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पलाशबाड़ी और शुवालकुची पुलों पर काम आज से पूरी गति से शुरू हो जाएगा, उन्होंने कहा कि फूलबाड़ी पुल का निर्माण कार्य भी तेज गति से चल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बराक में भी छह पुलों के निर्माण की योजना बनाई गई है और कार्य पूरी गति से चल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम आज पूरे भारत में चर्चा का विषय बन गया है।

दहेज हत्या की रिपोर्ट दर्ज होने से परेशान युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर में दहेज हत्या की रिपोर्ट दर्ज होने से परेशान युवक ने कमरे के अंदर फांसी का फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। जानकारी होने पर परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताते चलें कि सरोजनीनगर के नादरगंज स्थित रामनगर में रहने वाले अजय कश्यप (28) की पत्नी काजोल (22) ने बीते मंगलवार को संदिग्ध परिस्थितियों में घर के अंदर फांसी का फंदा लगाकर जान दे दी थी। उन्नाव जिले के सोहरामऊ थानान्तर्गत चौपई गांव में रहने वाली काजोल की शादी 2 वर्ष पहले अजय से हुई थी। काजोल के फांसी लगाने पर उसके मायके वालों ने अजय और उसके पिता श्रीपाल के खिलाफ दो दिन पहले ही सरोजनीनगर थाने में दहेज हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। बताते हैं कि रिपोर्ट दर्ज होने पर अजय काफी परेशान रहने लगा था। शनिवार रात वह खाना खाकर घर की दूसरी मंजिल पर कमरे में सोने चला गया। लेकिन रविवार सुबह देर तक नहीं उठा तो मकान के निचले हिस्से में घर के अन्य लोगों के साथ रह रही उसकी मां रानी उसे जगाने पहुंची। उसने दरवाजा खोला तो अजय कमरे के अंदर पंखे के हुक से दुपट्टे के सहारे मृत लटका मिला। यह देख रानी के होश उड़ गए और वह चीखने चिल्लाने लगी। परिजनों को जानकारी हुई तो उन्होंने सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची सरोजनीनगर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस को मृतक की जेब से सुसाइड नोट भी मिला है। जिसे उसने कब्जे में ले लिया है। मृतक की माँ रानी ने अजय के ससुराल वालों पर आत्महत्या के लिये उकसाने का आरोप लगाया है। उसका कहना है कि बहू काजोल की मौत के बाद उसके मायके वालों ने अजय से कहा था कि असली बाप के बेटे हो तो तुम भी आत्महत्या कर लो। फिलहाल पुलिस मामले की जाँच पड़ताल कर रही है।

सौरव गुप्ता स्मारक चतुर्थ पंचायत स्तरीय ग्रामीण क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रशिक्षु आईएस नितिन सिंह खिलाड़ियों का किया उत्साह वर्धन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। मैग्ना शुगर मिल के खेल मैदान में शनिवार खेले गए सौरभ गुप्ता स्मारक चतुर्थ पंचायत स्तरीय ग्रामीण क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मैच में रोमांचक मुकाबला देखने को मिला।पहले सेमी फाइनल मैच में सुजौलिया और महोली के बीच कांटे की टक्कर हुई।मैच में सुजौलिया ने बाजी मारी। इसके पहले सुजौलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का साहसिक निर्णय लिया, लेकिन उनकी पारी केवल 12 ओवरों में 138 रन पर समाप्त हो गई। महोली ने इस लक्ष्य को 12 ओवर में हासिल नहीं कर पाई पहले सेमीफाइनल मैच के मैन ऑफ द मैच बने मुनेन्द्र सिंह जिन्होंने अपनी वालिंग में कमाल दिखाते हुए 31 गेंदों में केवल 88 रन बनाए दूसरेसेमीफाइनल मैच में सरैया और नेवादा की टीमों ने एक-दूसरे को कड़ी चुनौती दी। नेवादा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 12ओवर में 90 रन बनाए, लेकिन सरैंया की टीम 7- 4 ओवर में सरैंया ने जीत लिया।इस मैच के मैन आफ द मैच आर्यन शुक्ल रहे जिन्होंने बारह गेंदों में तीस रन की शानदार पारी खेली।जिसमें उन्होंने तीन छक्के और तीन चौके लगाए गेंद बाजी में तीन ओवर मे चार विकेट हासिल किया। इसके पहले प्रशिक्षु आईएस खण्ड विकास अधिकारी कसमण्डा नितिन सिंह ने चारों टीमों के खिलाड़ियों से बतौर मुख्य अतिथि परिचय प्राप्त कर उनका उत्साह बढ़ाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथिति ने कहा कि सौरभ गुप्ता स्मारक चतुर्थ पंचायत स्तरीय ग्रामीण क्रिकेट टूर्नामेंट जैसे आयोजन से हमारे ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं का शारीरिक विकास होगा। वहीं एक समरस समाज की स्थापना में इस तरह का आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खेलों पर जोर देते हुए प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में विविध प्रकार के खेलों के आयोजन को टूर्नामेंट के अयोजक जिलापंचायत सदस्य दीपक शुक्ल प्रदेश सरकार प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर एक स्टेडियम की स्थापना के लिए कृत संकल्प है। प्रदेश सरकार का जोर है कि हर एक न्याय पंचायत में कम से कम एक खेल मैदान बनाया जाए। इस अवसर पर पूर्व प्रधान बृजपाल सिंह श्यामू सिंह जेई शिवकुमार पटेल युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अंकित कश्यप रोशन मिश्र कुलदीप शुक्ल गोपाल शुक्ल मोनू सिंह आसिफ खां आदि लोग मौजूद रहे।

साईं कंप्यूटर एजुकेशन में प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर के चिल्लावां में युवा समाज कल्याण समिति (वाईएसएस) संस्था द्वारा संचालित साईं कंप्यूटर एजुकेशन में रविवार को प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राजा बिजली पासी प्रथम वार्ड के पार्षद प्रतिनिधि प्रमोद यादव ने मौजूद प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि कंप्यूटर आज के युग में युवाओं के लिए पहली जरूरत बन गई है। उन्होंने कहा कि हर विभाग व संस्थान में कंप्यूटर महत्वपूर्ण हो गया है। बिना कंप्यूटर के अब किसी भी कार्यालय में काम संभव नहीं रह गया है। इसलिए नई पीढ़ी के लोगों को चाहिए कि वह कंप्यूटर का ज्ञान अवश्य लें, क्योंकि कंप्यूटर के ज्ञान के बिना अब किसी संस्थान व कार्यालय में कोई भी काम करना मुश्किल है। इस दौरान संस्थान में डीसीए, एडीसीए, टैली व ट्रिपल सी में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवक और युवतियों को पार्षद प्रतिनिधि ने अपने हाथों से सर्टिफिकेट वितरित किए। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में एडवोकेट अनुज यादव और संस्था अध्यक्ष पंकज यादव, मोहम्मद जुनेद, मुजम्मिल अंसारी, नरेंद्र यादव, शिक्षक देवाशीष चौधरी व चंद्र प्रकाश सहित संस्थान का पूरा स्टाफ और प्रशिक्षणार्थी मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में मजदूर की मौत

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर में एक मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। सूचना के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। अयोध्या के देवगढ़ में रहने वाले किसान रामबचन वर्मा का बेटा रामकुमार (24) बिजनौर के मुल्लाही खेड़ा स्थित बालाजी काम्पलेक्स में अपने एक दोस्त के साथ किराए पर रहकर बिजनौर रोड स्थित मदरसन सुमी वायरिंग इंडिया लिमिटेड कंपनी में काम करता था। बताते हैं कि शनिवार को दिन में वह कमरे पर अकेले था। शाम करीब 4 बजे उसका साथी जब ड्यूटी से वापस कमरे पर पहुंचा तो रामकुमार बेड पर बैठा हुआ मिला। उसने जब रामकुमार को हिलाया डुलाया तो उसके शरीर में कोई हरकत नहीं हुई। इसके बाद उसके साथी ने रामकुमार को आनन फानन इलाज के लिए सरोजनीनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां पहुंचते ही चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बाद में घटना की सूचना पुलिस व मृतक के परिजनों को दी गई। सूचना के बाद पहुंचे परिजनों ने पहले तो पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया। लेकिन जब पुलिस ने समझाया तो वह तैयार हो गए। इसके बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सरोजनीनगर पुलिस का कहना है कि मृतक रामकुमार कई दिनों से बीमार चल रहा था और बीमारी से ही उसकी मौत हुई है। उधर मृतक के परिजनों ने इस मामले में किसी के ऊपर कोई आरोप नहीं लगाया है।

आखिर किसकी सरपरस्ती में बेखौफ हैं खनन माफिया ?

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले में कमलापुर व मानपुर थाना क्षेत्र में स्थानीय जिम्मेदारों की मिली भगत से मिट्टी के खनन का अवैध कार्य जोरों पर है। खनन माफिया धरती का सीना चीर रहे हैं। जिम्मेदार मूकदर्शक बने हुए हैं। इस समस्या पर लगाम लगाने को लेकर जिम्मेदार खनन माफियाओं पर अंकुश नहीं लगा पा रहा है। सूचना के बाद भी स्थानीय प्रशासन मौन बैठा हुआ है। लोगों का आरोप है कि खनन माफिया पुलिस को मोटी रकम देकर यह अवैध धंधा कर रहे हैं।खनन माफियाओं द्वारा रातभर ट्रैक्टर-ट्राली से मिट्टी का खनन कर राजस्व विभाग को चूना लगाया जा रहा है। समाचार पत्रों का संज्ञान लेकर लगभग एक सप्ताह पूर्व खनन अधिकारी सीतापुर द्वारा थाना क्षेत्र कमलापुर के अन्तर्गत ग्राम पंचायत रेवरी सरांय एवं वसई डीह का क्षेत्र भ्रमण किया था। जिस पर क्षेत्र में भारी मात्रा में राजस्व की जमीन पर अवैध खनन पाया गया था। बताते हैं कि यह खनन माफिया इतने बेखौफ हो गए हैं कि पुलिस पिकेट के पास से ही मास्टरबाग मार्ग पर देर रात्रि को मिट्टी भरे हुए ट्रैक्टर तेज रफ्तार सर पट भरते रहते हैं। न तो पुलिस की परवाह है और न ही प्रशासन का डर। क्षेत्र में जगह-जगह खनन का कार्य जोरों पर चल रहा है। जिससे तहसील प्रशासन व पुलिस विभाग की कार्य प्रणाली भी सवालों के घेरे में है?

पुलिस प्रशासन तहसील प्रशासन की मिलीभगत

अवैध खनन प्रशासनिक जिम्मेदारों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान लगा रही है। इसके बावजूद खनन विभाग सब-कुछ जानकर अनजान बना हुआ है।प्रशासनिक अक्षमता के चलते सरकार के राजस्व का भारी नुकसान हो रहा है। क्षेत्र अवैध खनन के लिए बदनाम है। कमलापुर थाना क्षेत्र व मानपुर अवैध खनन से भरे ट्रैक्टर-ट्राली मिट्टी ले जाते साफ देखे जा सकते हैं।

एनजीटी के आदेशों का उड़ाया जा रहा मखौल

एनजीटी के आदेशों को पूरी तरह से हवा में उड़ाते हुए खनन माफिया,पुलिस प्रशासन और खनन विभाग तीनों से सेटिंग कर धड़ल्ले से अपना काम कर रहे हैं। क्षेत्र में बन रही कालोनियों में भराव के नाम पर रातों- रात खनन कर सैकड़ों ट्रालियां डंपर सड़कों पर दौड़ रहे हैं।मिट्टी खनन की शिकायतें लोगों ने कई बार जिम्मेदार अधिकारियों से की,लेकिन खनन माफिया पर कोई कार्रवाई नहीं की गई।इस कारण खनन माफिया भराव के नाम पर ठेका ले रहे हैं।

देहात में धड़ल्ले से चल रहा अवैध मिट्टी खनन

देहात क्षेत्रों में मिट्टी के अवैध खनन का कारोबार बड़े स्तर पर चल रहा है। रात भर सड़कों पर मिट्टी से भरे डंपर दौड़ते रहते हैं। खनन माफिया द्वारा धड़ल्ले से अवैध मिट्टी का खनन किया जा रहा है। खनन विभाग को इसकी भनक तक नहीं है या ये कहें कि स्थानीय पुलिस की सर परस्ती में ही यह खेल खेला जा रहा है। इस अवैध कारोबार में रात के समय नियमों की अनदेखी कर मिट्टी उठाई जा रही है। जबकि पुलिस जानकारी न होने का हवाला देकर चुप्पी साधे हैं और मिट्टी लदे ट्रैक्टर-ट्राली थाने के सामने से ही गुजरते हैं।

विरोध पर ग्रामीणों को दी जाती है धमकी

क्षेत्र के कई जनप्रतिनिधि व ग्रामीणों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि माफियाओं को स्थानीय पुलिस का संरक्षण प्राप्त है। माफियाओं द्वारा कार्य के बदले पुलिस को बंधी बंधाई मोटी रकम प्रदान की जाती है। जिसके कारण माफियाओं का मनोबल यहां सातवें आसमान पर है और खनन माफिया बेखौफ होकर धड़ल्ले से अवैध मिट्टी खनन को अंजाम दे रहे हैं। क्षेत्र के लोग अगर इसका विरोध करते हैं तो उन्हे माफियाओं के द्वारा जान से मारने तक की धमकी दे दी जाती है।

क्या बोले नहर विभाग के कर्मचारी

इस सम्बन्ध मे जेई विनय यादव से फोन पर बात की गयी तो उन्होंने बताया कि अभी एक हफ्ते पहले एक एफआईआर लिखवाई गयी थी। लेकिन जिम्मेदारों की मिली भगत से खनन का कारोबार बदस्तूर जारी है। इस सम्बन्ध में खनन अधिकारी से जानकारी चाही तो उनका फोन नहीं लगा।

स्वास्थ्य विषेष क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग द्वारा एनिमिया रिडक्शन विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी संपन्न

➪ माताओं और बच्चों में एनीमिया के प्रसार को कम करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता- बृजेश पाठक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं सोसाइटीज ऑफ इंडिया तथा फेडरेशन ऑफ ऑब्स्ट्रेटिक तथा गायनेकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में एनिमिया रिडक्शन जैसे अति महत्वपूर्ण विषय पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन राजधानी लखनऊ मे सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम में उप्र सरकार के उपमुख्यमंत्री तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक उपस्थित रहे। इस अवसर पर केजीएमयू की कुलपति प्रो. सोनिया नित्यानंद, क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अविनाश अग्रवाल, वाइस प्रेजिडेंट, ग्लोबल हेल्थ स्ट्रेटेजीज, इंडिया, डॉ जयदीप टेंक, प्रेजिडेंट फेडरेशन ऑफ ऑब्स्ट्रेटिक तथा गायनेकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया(फोगसी) एवं डॉ. शुरूचि शुकला, एसोसिएट प्रो. माइक्रोबायोलॉजी विभाग,केजीएमयू भी मौजूद रहे। गोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों

से 200 से अधिक विशेषज्ञों ने प्रतिभाग कर अपने अनुभव को साझा किया। अपने उद्बोधन में बोलते हुए उप्र के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने आयोजक मण्डल को इतने महत्वपूर्ण विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित करने के लिए बधाई देते हुए बताया कि उप्र सरकार पहले से ही एनिमिया के निदान के लिए व्यापक स्तर पर कार्य कर रही है। ब्रजेश पाठक ने मातृ एनीमिया से निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए अभिनव स्वास्थ्य सेवा हस्तक्षेप की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और कहा कि, ''एनीमिया एक महत्वपूर्ण चुनौती है, और माताओं और बच्चों में इसके प्रसार को कम करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह एक ऐसी बीमारी है जिसके दूरगामी सामाजिक-आर्थिक परिणाम हैं, और मुझे उम्मीद है कि सम्मेलन में मौजूद सभी हितधारक इस पर विचार-विमर्श करेंगे और हर स्तर पर इससे निपटने के लिए प्रभावी समाधान निकालेंगे।'' इस असवर पर ब्रजेश पाठक ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, हमने कोविड-19 से निपटने से लेकर जल जीवन मिशन के माध्यम से स्वच्छ पेयजल तक पहुंच सुनिश्चित करने तक परिवर्तनकारी पहल देखी हैं, जो दर्शाता है कि दृढ़ संकल्प और जमीनी स्तर पर कार्रवाई के साथ कोई भी चुनौती असंभव नहीं है।'' उन्होंने एनीमिया की समस्या से व्यापक रूप से निपटने के लिए हितधारकों के बीच सहयोग पर भी जोर दिया और आश्वासन दिया कि चर्चाओं से प्राप्त सुझावों को पूरी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ाया जाएगा। एनीमिया, एक ऐसी स्थिति है जो उत्तर प्रदेश में लगभग आधी गर्भवती महिलाओं को प्रभावित करती है, जो मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करती है। इसके स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों से परे, एनीमिया आर्थिक उत्पादकता और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है। इसके दूरगामी परिणामों को पहचानते हुए, सम्मेलन ने बेहतर परिणामों के लिए सटीक परीक्षण और उन्नत उपचार विकल्प के लिए डिजिटल स्क्रीनिंग उपकरणों के उपयोग जैसे कार्रवाई योग्य समाधानों को प्राथमिकता दी। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) के हालिया आंकड़ों से पता चलता है कि मातृ एनीमिया के प्रसार में 2016 में 51 प्रतिशत से 2021 में 45.9 प्रतिशत की गिरावट आई है, जो महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है। केजीएमयू अनुसंधान, प्रशिक्षण और उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से एनीमिया से निपटने के प्रयासों में सबसे आगे रहा है। केजीएमयू की कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानंद ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए कहा कि ''स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, सामुदायिक कार्यकर्ताओं और सरकार के बीच सहयोग एनीमिया की समस्या को हल करने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, अभिनव नैदानिक समाधान और डिजिटल तकनीकें एनीमिया के इलाज और प्रबंधन के तरीके को बदलने में सहायक होंगी।'' राष्ट्रीय सम्मेलन में एनीमिया, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य तथा सामुदायिक चिकित्सा के क्षेत्र में अग्रणी विशेषज्ञों के साथ तकनीकी चर्चा की गई। स्वह्लस्द्ध के अध्यक्ष डॉ. जयदीप टांक ने निजी क्षेत्र के अनुभव से जानकारी दी तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में अंत:शिरा (Intravenous-IV) फेरिक कार्बोक्सिमाल्टोज (FCM) जैसे उन्नत उपचारों को एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित किया। सम्मेलन में डिजिटल हीमोग्लोबिनोमीटर जैसे डिजिटल उपकरणों की परिवर्तनकारी क्षमता पर भी चर्चा की गई, जो एनीमिया की त्वरित और सटीक जांच करते हैं, और अंत:शिरा आयरन जैसे उन्नत उपचार, जो न्यूनतम दुष्प्रभावों के साथ प्रभावी समाधान प्रदान करते हैं। ये नवाचार, मजबूत सामुदायिक जुड़ाव और स्वास्थ्य कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण के साथ मिलकर एनीमिया कम करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। विशेषज्ञों ने गहन देखभाल इकाइयों (आईसीयू) में खराब परिणामों में एनीमिया की महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाया, विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं के बीच, साथ ही कमजोर आबादी में एनीमिया के प्रसार को बढ़ाने में संक्रमण और भारी धातु के संपर्क के प्रभाव का भी पता लगाया। विशेषज्ञों ने संभावित समाधानों पर चर्चा की, जिसमें बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप, पर्यावरण सुरक्षा उपायों को मजबूत करना और एनीमिया में इन अद्वितीय योगदानकर्ताओं को संबोधित करने के लिए लक्षित नीति सुधारों को लागू करना शामिल है। इन सत्रों ने कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान कीं, जो सभी आयु समूहों और जनसांख्यिकी में एनीमिया से निपटने के लिए एक व्यापक, बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता को प्रदर्शित करती हैं।

भारतीय कलाकार संघ का क्रिएटिव सेमिनार संपन्न

➲ मैं भारत हूं वेबसीरीज की शूटिंग अगले माह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

नई दिल्ली/लखनऊ। जलज बॉलीवुड एकेडमी एण्ड फिल्म मेकिंग स्टूडियो दिल्ली

द्वारा एक सेमिनार का आयोजन किया गया। भारतीय कलाकार संघ दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष एवं फिल्मकार आदित्य वर्मा 'जलज' के नेतृत्व 'क्रियेटिव सेमिनार' संपन्न हुआ। सेमिनार के मुख्य अतिथि प्रख्यात होम्योपैथ चिकित्सक डॉ. वी.बी. धुरिया समेत 'दिल्ली कलाकार संघ' तथा 'जलज फिल्म यूनिट' सहित फिल्मी दुनिया की विशेष हस्तियां इस मौके पर मौजूद रहीं। बॉलीवुड कलाकार मनोज चड्ढा जी,जी.एस. अरोड़ा कलाकर संघ की उपाध्यक्ष आशा यादव, महासचिव डॉ. अमीन, संयोजक अमित कुमार बांगा एवं विशिष्ट अतिथि सत्यप्रकाश सक्सेना, किशोर श्रीवास्तव, तूलिका सेठ, साक्षी, अमित कुमार, नितिन कुमार, टी.सी. चैहान, मुकेश उपस्थित रहे। सेमिनार का उद्देश्य भारतीय कलाकार संघ का विस्तार करना, कलाकारों को मंच प्रदान करना। इस मौके पर जलज बॉलीवुड एकेडमी एण्ड फिल्म मेकिंग के अध्यक्ष एवं फिल्म निर्देषक आदित्य कुमार जलज ने अपनी आने वाली वेबसीरीज ''मैं भारत हूं'' पर चर्चा करते हुए बताया कि इस वेबसीरिज़ की शूटिंग अगले माह से की जा रही है। उन्होंने इस अवसर पर अपनी इस वेबसीरिज के लिए कलाकारों का चयन भी किया।

माध्यमिक शिक्षणेत्तर कर्मचारी संघ की आवश्यक प्रदेशीय स्तरीय बैठक सम्पन्न हुई

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। माध्यमिक शिक्षणेत्तर कर्मचारी संघ की प्रदेशीय बैठक प्रदेश अध्यक्ष आलोक सिंह चौहान की अध्यक्षता में ए.पी. सेन मेमोरियल गर्ल्स इण्टर कॉलेज, चारबाग लखनऊ में सम्पन्न हुई। बैठक में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के मृतक आश्रितों को उसी संवर्ग में नियुक्ति प्रदान किए जाने के फैसले पर रोष व्यक्त किया गया। प्रदेश अध्यक्ष आलोक सिंह चौहान ने कहा कि परिचारक संवर्ग के साथ सौतेला, भेदभाव पूर्ण व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने प्रदेश सरकार से शिक्षणेत्तर कर्मियों को कैशलैस चिकित्सीय सुविधा, उपार्जित अवकाश का राशिकरण एवं प्रबंध समिति में प्रतिनिधित्व दिए जाने का शासनादेश जारी किए जाने की मांग की है। इस अवसर पर सर्वसम्मति से माध्यमिक

शिक्षणेत्तर कर्मचारी संघ का महासंघ में विलय करते हुए आलोक सिंह चौहान को शिक्षणेत्तर कर्मचारी महासंघ का कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष एवं संतोष सिंह को प्रदेश सचिव घोषित किया गया। बैठक में उपस्थित शिक्षणेत्तर कर्मचारी महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष विजय द्विवेदी ने बताया कि आगामी 28 दिसंबर को शिक्षणेत्तर कर्मचारी महासंघ का अयोध्या में प्रदेश स्तरीय सम्मेलन आयोजित हो रहा है। बैठक में प्रदेश महासचिव अवधेश मिश्र ने संचालन करते हुए अयोध्या सम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया। प्रदेश सचिव संतोष कुमार सिंह ने कहा कि डी.ए.वी* इण्टर कॉलेज, लखनऊ में पचास प्रतिशत पदोन्नति कोटे के अंतर्गत रिक्त लिपिक पद पर पात्र कर्मचारी राजेन्द्र मिश्र को पदोन्नति दी जाये। इस मौके पर शैलेन्द्र गिरि, रमेश कुमार पाल, अमलेश्वर नारायन सिंह, दीपेश श्रीवास्तव, प्यारे लाल, अवधेश सिंह तोमर, वीरेन्द्र बहादुर सिंह, लाल सुधाकर, लाल चन्द सरोज, प्रमोद कुमार, देव कुमार,रणवीर सिंह,सुदेश चतुर्वेदी, चंद्रसेन, दिनेश कुमार वर्मा आदि मौजूद रहे।

समाचार

जय श्री राम... कवि सम्मेलन सम्पन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। नवसमानुभूति, पंजीकृत साहित्यिक साँस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था द्वारा अमर शहीद कोठारी बन्धु स्मृति पार्क में जय श्री राम कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों से सुविख्यात कवियों द्वारा भगवान श्रीराम का गुणगान किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके व माल्यार्पण करके किया गया, तत्पश्चात डॉ. शिवा त्रिपाठी,

बस्ती द्वारा माँ की वाणी वन्दना की गई। कार्यक्रम में भक्ति एवं राष्ट्र रस के रचनाकारों में डॉ. शिवा त्रिपाठी, बस्ती, सुश्री ऋतु पांडे %त्रिधा%, प्रयागराज, सुश्री ज्योति राय, लखनऊ, श्री सर्वश पांडे %विभी%, बाराबंकी, श्री विनय %विप्र% श्री विजय प्रसाद त्रिपाठी %विजय%, लखनऊ, श्री राजेंद्र शुक्ल %राज%, लखनऊ, श्री अशोक पांडे %अनहद%, सुल्तानपुर, श्री सौरभ श्रीवास्तव, लखनऊ, डॉ. आनंद त्रिपाठी, लखनऊ, श्री धीरज मिश्र %शांडिल्य%, रायबरेली, श्री जमुना बक्श सिंह %निर्भय%, लखनऊ, राम राज भारती, विपुल मिश्र एवं अन्य प्रतिष्ठित क्षेत्रीय साहित्य कारों ने राम भक्ति की श्रेष्ठ कविताओं का पाठ किया। इसके अलावा संस्थान के मुख्य संरक्षक श्री चिरंजीव नाथ सिन्हा, आईपीएस, संरक्षक श्री हरि प्रकाश %हरि%, श्रीयुत श्रीकृष्ण द्विवेदी %द्विजेश%, श्री शशांक अग्निहोत्री, उपाध्यक्ष डॉ. इंद्रासन सिंह %इंदु%, श्री विपुल मिश्रा, श्री आदित्य तिवारी, महासचिव, श्री अखिलेश त्रिवेदी %शाश्वत%, संगठन सचिव डॉ. ममता पंकज, श्रीमती रजनी गुप्ता %पूनम%, श्रीमती गीता गंगवार, संयुक्त सचिव, श्रीमती नीतू सिंह चौहान, कोषाध्यक्ष श्री राम प्रकाश गुप्ता, प्रचार सचिव श्री मुकेश कुमार सिंह, श्रीमती ऑडिटर आचार्य श्री सत्येन्द्र शुक्ल %सत्यार्थी% एवं अनेक क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे, कार्यक्रम के देर रात तक चलने के बाद भी आगंतुक राम भक्त बड़ी संख्या में कवियों के धार्मिक काव्यपाठ का आनन्द लेते रहे। कार्यक्रम में अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन श्री मानस मुकुल त्रिपाठी %मानस% ने किया।

डॉक्टर बलवंत सिंह को अनागत मार्तंड एवं श्रीमती श्वेता शुक्ला को मिला अनागत कविता चंद्रिका सम्मान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान कार्यालय योगी नगर,त्रिवेणी नगर तृतीय लखनऊ में एक सरस अनागत काव्य गोष्ठी/सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संपत्ति कुमार बैसवारी द्वारा की गई। मुख्य अतिथि श्रीमती सुरभि सिंह विशिष्ट अतिथि सुनील अवस्थी एवं पवन कौशाम्बी रहे। वाणी वंदना श्रीमती श्वेता शुक्ला द्वारा की गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रवीण पाण्डेय %आवारा%द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर बलवंत सिंह को अनागत मार्तंड,श्रीमती श्वेता शुक्ला को अनागत कविता चंद्रिका सम्मान दिया गया। समारोह में डॉक्टर अजय प्रसून, प्रवीण पांडेय आवारा, राम राज भारती, संपत्ति कुमार बैसवारी, श्रीमती सुरभि सिंह,श्वेता शुक्ला, सुनील अवस्थी, पवन कौशाम्बी, डॉक्टर बलवंत सिंह, डाक्टर गुर्जर लखनवी, उमा लखनवी, श्रीमती स्वाति पांडेय प्रीत, डॉक्टर मनमोहन बाराकोटी, नमिता सिंह नमी ने अनागत कविताओं, गीत, गजल, मुक्तक, छंदों के काव्य पाठ ने सबका मन मोह लिया। अंत में संस्था के उपाध्यक्ष प्रवीण पाण्डेय द्वारा धन्यवाद किया गया।

पार्षद कैंप कार्यालय में बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर महापरीनिर्वाण दिवस पर कोटि-कोटि नमन किया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर क्षेत्र पार्षद कैंप कार्यालय में पार्षद गीता देवी गुप्ता एवं क्षेत्र मंत्री संजय गुप्ता द्वारा भारतीय संविधान के निर्माता, महान समाज सुधारक एवं भारत रत्न, बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के महापरीनिर्वाण दिवस पर उन्हें कोटि-कोटि नमन किया गया। बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान भारतीय समाज के हर वर्ग के लिए अतुलनीय है। उन्होंने न केवल भारतीय संविधान को आकार दिया, बल्कि समाज में व्याप्त जातिवाद और असमानता के खिलाफ संघर्ष कर समाज को एक नई दिशा दी। उनके विचार और कार्य हमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के महत्व को समझाते हैं। आज हम उनके योगदान को याद करते हुए, उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं और समाज में समानता, न्याय और सम्मान की दिशा में उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। हम बाबासाहेब के चरणों में श्रद्धा अर्पित करते हुए, उनके आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे।

कलयुग में हनुमान जी ही प्रगति प्राप्त करने के साधन है - डॉ. विवेक तागड़ी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्थान गोमती नगर लखनऊ में डॉ विवेक तागड़ी (मुख्य सेवादास, लेटे हनुमान जी मंदिर पक्का पुल लखनऊ) के द्वारा में त्रिदिवसीय वानरेश्वर कार्यक्रम के तीसरे व अंतिम दिन अपनी मधुर वाणी से डॉ विवेक तागड़ी ने बताया कि प्रभु श्री राम का राज्याभिषेक - राजतिलक एवं रामराज्य में राजा और प्रजा के बीच की कार्य प्रणाली कि कैसे रामराज्य में प्रजा खुशी खुशी आपसी सहयोग के साथ रहती थी। तीसरे दिन कथा व्यास डॉ विवेक तांगड़ी द्वारा श्री हनुमान जी एवं प्रभु श्री राम के प्रति आस्था कर्तव्यनिष्ठा एवं एक दूसरे के सहयोग एवं सामंजस्य की भावना को बहुत सुंदर संगीतमय तरीके से व्याख्यान किया गया। कथा के बीच बीच में हुए भजनों और संगीत ने कथा में सभी श्रोता भक्तों को बांधे रखा। भजन गायक शशांक शेखर का संगीत निर्देशन एवं उनकी संगत कर रहे तबले पर योगेश पांडेय, बांसुरी पर विमलकांत, सारंगी पर राकेश मिश्रा, ऑर्गन पर विनोद कुमार, राहुल द्विवेदी सहगायन एवं ढोलक पर विकास ने सभी के मन मोह लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ पंकज सिंह भदौरिया ने आए हुए सभी भक्तजनों का धन्यवाद दिया एवं आश्वासन दिया कि शीघ्र ही कथा का विस्तार अन्य प्रदेशों में भी किया जाएगा। इस अवसर पर पूर्व आईपीएस डॉ आर के एस राठौर, ओएनजीसी के जनरल मैनेजर पंकज श्रीवास्तव, पूर्व उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा ललिता प्रदीप, निर्मल सिंह, ऋद्धि गौड़, मनीष शर्मा, अमित शर्मा (सिद्धू), विशाल सचदेवा, गौरव मिश्रा, आर्यन मौर्य आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन यशराज टंडन द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में भारतीय क्षत्रिय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ पंकज सिंह भदोरिया एवं कई भक्तों ने अपना योगदान दिया।

शिया संगठन हैदरी टास्क फोर्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने यतीम बच्चों से मुलाकात की

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। रविवार को शिया संगठन हैदरी टास्क फोर्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुन्नी आगा ने सहादतगंज स्थित शिया यतीमखाने में रह रहे बच्चों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने बच्चों का हालचाल जाना और उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना। मुन्नी आगा ने बच्चों को आश्वासन दिया कि संगठन हर परिस्थिति में उनके साथ खड़ा रहेगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि यदि कोई उन्हें यतीमखाने से निकालने या खाली कराने की कोशिश करता है, तो वे तुरंत संगठन से संपर्क करें। संगठन ने यह भी स्पष्ट किया कि न केवल वे, बल्कि पूरा समुदाय इन बच्चों के साथ खड़ा है। हैदरी टास्क फोर्स हमेशा कमजोर और मजलूम वर्गों की सहायता के लिए अग्रसर रहता है। यह संगठन जरूरतमंदों को हर प्रकार की मदद प्रदान करने के लिए अपने प्रयास जारी रखता है। उनकी यह पहल समाज के असहाय और उपेक्षित वर्गों के प्रति संगठन की संवेदनशीलता और जिम्मेदारी को दर्शाती है। इस मुलाकात में प्रदेश अध्यक्ष हैदर और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

भूख से लड़ने की नई उम्मीद: विपिन शर्मा और उनकी 'ब्रज की रसोई' का प्रयास

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। मानवता और सेवा का सबसे बड़ा उद्देश्य है जरूरतमंदों की मदद करना, और इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी के संस्थापक विपिन कुमार शर्मा इस उद्देश्य को पूरा करने में पूरी तरह समर्पित हैं। उनकी पहल ने अकिंचन, निराश्रित, बेसहारा और जरूरतमंद तबकों के जीवन में एक नई उम्मीद की किरण जगाई है। संस्था के सदस्य पंकज राय ने कहा समाज के उन लोगों की मदद करने का बीड़ा उठाया है, जो जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित हैं। उनका उद्देश्य न केवल गरीब और असहाय लोगों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है, बल्कि बच्चों को उनकी शिक्षा और जरूरत की चीजों के प्रति जागरूक करना भी है। वे मानते हैं कि कोई भी व्यक्ति भूख के कारण अपने सपनों से समझौता न करे। विपिन शर्मा की संस्था, इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी, ब्रज की रसोई के माध्यम से जरूरतमंदों को नि:शुल्क पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। इस रसोई में चावल, दाल, पूड़ी और सब्जी जैसे संतुलित और स्वच्छ भोजन तैयार किए जाते हैं।संस्था सुनिश्चित करती है कि यह भोजन उन्हीं लोगों तक पहुंचे, जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। संस्था नियमित रूप से विभिन्न चयनित क्षेत्रों में कैंप लगाकर भोजन वितरित करती है। इन कैंपों में जरूरतमंद बुजुर्गों, बच्चों और परिवारों को भोजन उपलब्ध कराया जाता है। विपिन शर्मा और उनकी टीम यह सुनिश्चित करती है कि सेवा का यह कार्य बिना किसी बाधा के पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा बने।

सामाजिक कार्यकर्ता संजय सिंह का कहना है इस मानवीय प्रयास का मुख्य उद्देश्य समाज में भूखमरी जैसी समस्या को खत्म करना है। इसके साथ ही, संस्था शिक्षा को भी प्राथमिकता देती है। आशीष श्रीवास्तव ने कहा गरीब और वंचित तबके के बच्चों को उनकी पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किताबें, कॉपियां और अन्य जरूरी सामान उपलब्ध कराया जाता है। सदस्य विकास पाण्डेय ने कहा का यह प्रयास समाज में सेवा और करुणा की भावना को मजबूत करता है। उनकी प्रेरणादायक पहल न केवल जरूरतमंदों की सहायता करती है, बल्कि लोगों को यह संदेश भी देती है कि छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। सक्रिय सदस्य संजय श्रीवास्तव ने बताया इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी और विपिन शर्मा का यह कार्य इस बात का प्रमाण है कि यदि समाज के लोग एकजुट होकर प्रयास करें, तो कोई भी भूखा नहीं रहेगा। यह पहल एक आदर्श उदाहरण है कि सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। विशाल सक्सेना ने जानकारी दी कि आज के नि:शुल्क भोजन वितरण में कढ़ी चावल रतन खंड पानी टंकी के पास स्थित झुग्गियों, निर्माणाधीन विद्यालय के श्रमिकों और उनके परिवारों, तथा जोन 8 के सामने की झुग्गियों में भोजन वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अभियान में करीब 890 लोगों को भोजन वितरित किया गया। आज के नि:शुल्क भोजन वितरण में पंकज राय, संजय श्रीवास्तव, विकास पाण्डेय, विशाल सक्सेना, आशीष श्रीवास्तव, संजय सिंह, अजय कुमार सिंह, अशोक कुमार, मुकेश कनौजिया, रंजीत कश्यप, ध्रुब सक्सेना के समापन पर विपिन शर्मा ने सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संपादकीय

हाइब्रीड पॉलिटिकल पार्टी आप यदि कांग्रेस से गठबंधन करेगी तो सियासी तौर पर समाप्त हो जाएगी?

देश की राजधानी दिल्ली में फरवरी 2025 में विधानसभा होंगे और यहां पर सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी एक बार फिर पूरे दम-खम से अकेले यह चुनाव लड़ेगी। जबकि वह कांग्रेस के नेतृत्व वाली इंडिया गठबंधन की भागीदार पार्टी रही है। बताया जाता है कि हाइब्रीड पॉलिटिकल पार्टी आप को डर है कि यदि वह कांग्रेस से गठबंधन करेगी तो सियासी तौर पर समाप्त हो जाएगी! पंजाब और दिल्ली की राजनीतिक परिस्थिति भी इसी बात की चुगली करती है। कहना न होगा कि छोटा हिंदुस्तान समझा जाने वाला दिल्ली प्रदेश का विधानसभा चुनाव किसी भी राजनीतिक दल के लिए काफी अहमियत रखता है। यहां पर पहले कांग्रेस और उसके बाद भाजपा का शासन रहा है। बाद में भी इन्हीं दोनों पार्टियों के बीच सत्ता की अदला-बदली हुई। लेकिन दिल्ली की स्थानीय पार्टी के तौर पर आप के राजनैतिक अभ्युदय ने कांग्रेस और भाजपा दोनों के समक्ष एक नई राजनीतिक चुनौती खड़ा कर दी, जो अब तलक जारी है। समझा जाता है कि कभी केंद्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के जबड़े से 2013 में उसकी सूबाई सत्ता छीनना और फिर केंद्र में सत्तारूढ़ हुई भाजपा के कसते सियासी शिकंजे के बावजूद 2015 और 2020 में भी यहां की सत्ता को बचाए रखना दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की बहुत बड़ी राजनीतिक सफलता है, जिसके लिए उन्हें नाकोचने चबाने पड़े। इसके ही खातिर उन्हें तिहाड़ जेल तक जाना पड़ा, जहां से फिलवक्त बेल पर वह बाहर हैं। दरअसल, हाइब्रीड पॉलिटिकल पार्टी आप एक अलबेली राजनीतिक पार्टी है, जो कई मामलों में भाजपा और कांग्रेस से अलग है तथा क्षेत्रीय दलों से काफी आगे है। कांग्रेस एवं उसकी विरोधी रही जनता पार्टी व जनता दल और भाजपा के अलावा आप एकमात्र राजनीतिक पार्टी है जो एक के बाद दूसरे राय में अपने बलबूते सरकार बनाने में सफल हुई और सफलता पूर्वक उसका संचालन कर रही है। युवा पेशेवरों की यह पार्टी तमाम विवादास्पद मुद्दों में निष्पक्ष अंदाज रखती आई है। हालांकि, केंद्रीय सत्ता तक पहुंचना अभी भी उसके लिए नई दिल्ली दूर है जैसा प्रतीत होता है। हालांकि इंडिया गठबंधन की शोहबत और भाजपा के धूर विरोध में आप को भी अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की नीति अपनानी पड़ी है। आरक्षण सम्बन्धी दुविधाजनक स्टैंड लेना पड़ा। भ्रष्टाचार के अंध कुएं में गोते लगाने पड़े हैं। शानोशौकत के वास्ते शीश महल (मुख्यमंत्री का आवास) तक बनवाने पड़े। वहीं, जनता को रिश्वत स्वरूप मुफ्त बिजली-पानी देने की उसकी शुरुआत और शिक्षा-स्वास्थ्य सम्बन्धी जनसुविधा आज सभी पार्टियों के एजेंडे में शामिल हो चुका है। इसे भारतीय राजनीति में रेवड़ी कल्चर कहा जाता है जिसकी शुरुआत आप ने की है। कांग्रेस/भाजपा आदि तो इस मामले में अब आप से भी दो कदम आगे बढ़ चुके हैं। देखा जाए तो 2025 में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल ताबड़तोड़ फैसले ले रहे हैं जिसमें अपनी भरोसेमंद सहयोगी मंत्री रहीं आतिशी मर्लेना को दिल्ली का नया मुख्यमंत्री बनाया जाना भी शामिल है। वहीं, हाल ही में उन्होंने दूसरी महत्वपूर्ण घोषणा की है कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में वह कांग्रेस से गठबंधन नहीं करेंगे। शायद यह हरियाणा विधानसभा चुनाव में आप के प्रति कांग्रेस की ओर से दिखाई गई राजनीतिक बेरुखी का असर और प्रतिक्रिया स्वरूप करारा जवाब है, क्योंकि तब भी कांग्रेस-आप का गठबंधन टूट गया था। फ़लसफ़ा यह निकला कि कांग्रेस हरियाणा की सत्ता में आ नहीं पाई और वहां पर अपने बलबूते चुनाव लड़ी आप का खाता तक नहीं खुला, जबकि यह आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल का गृह प्रदेश भी है। हालांकि यह बात सभी जानते हैं कि गठबंधन में रहते हुए भी आप ने लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान कांग्रेस से अपने वर्चस्व वाले एक प्रान्त दिल्ली में गठबंधन तो दूसरे प्रान्त पंजाब में दोस्ताना संघर्ष किया। इस दौरान आप पार्टी पंजाब की 13 लोकसभा सीटों में से मात्र 3 सीटें ही जीत पाई, जबकि कांग्रेस को 7 सीटें मिलीं। यही बात आप को अखड़ गई। वहीं, दिल्ली में भी उसने लोकसभा की 7 सीटों में से 3 सीटें कांग्रेस को दी थी, लेकिन दोनों पार्टियां यहां जीरो पर आउट हो गईं। क्योंकि यहां भी सियासी तालमेल नदारत दिखा था। परिणाम यह हुआ कि सातों लोकसभा सीटों पर भाजपा जीत गई, जो पहले भी सभी सीटों पर काबिज थी। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि क्या दिल्ली में मुकाबले को त्रिकोणीय बना पाएगी कांग्रेस? क्योंकि जहां जहां भी त्रिकोणीय मुकाबले की नौबत आती है तो अक्सर सत्ता पक्ष फायदे में रहता है। आप के लिए यह स्थिति यहां भी फायदेमंद हो सकती है। चूंकि दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की लगभग सभी संभावनाएं समाप्त हो गई हैं। जिससे यह तय हो चुका है कि दोनों पार्टियां चुनावी मैदान में एक-दूसरे के खिलाफ खड़ी होंगी। ऐसे में आप से यादा कांग्रेस का चुनावी सफर मुश्किल नजर आ रहा है। वहीं, गठबंधन में फूट की खबर सामने आते ही राजनीतिक गलियारों में अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। जैसे ही दिल्ली विधान सभा चुनाव से पहले इंडिया गठबंधन के दो अहम दलों, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की ओर से साफ संकेत मिला कि इस बार दोनों पार्टियां चुनावी रण में एक-दूसरे के सामने खड़ी होंगी। तो सबसे यादा चर्चा कांग्रेस को लेकर चलने लगी। क्योंकि जो कांग्रेस कुछ वक्त पहले तक अरविंद केजरीवाल के खातिर बीजेपी से लड़ रही थी। अब वहीं कांग्रेस आखिर आम आदमी पार्टी और केजरीवाल के खिलाफ कैसे मोर्चा खोलेगी, यक्ष प्रश्न है? हालांकि मौजूदा सियासत में विचारों का उलट फेर एक आम सी बात हो गई हैं। चूंकि दिल्ली की जनता सूझबूझ वाली है। ऐसे में कांग्रेस के लिए राह आसान नहीं होगी। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि दिल्ली में कांग्रेस त्रिकोणीय मुकाबला बनाने की स्थिति में नहीं है। दिल्ली की सियासत में कांग्रेस और आप के बीच रिश्ते स्वार्थ वाले रहे हैं। मसलन, जिस आम आदमी पार्टी ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर कांग्रेस को दिल्ली की सत्ता से बेदखल किया था, वही आम आदमी पार्टी जब खुद भ्रष्टाचार के आरोप में घिरी तो कांग्रेस से हाथ मिला लिया। अलबत्ता, कांग्रेस ने भी अपने सियासी फायदे को देखकर आप से हाथ मिलाने में ही समझदारी समझी, क्योंकि बीजेपी से अकेले टकराना, दोनों पार्टियों के बस से बाहर था। बताया जाता है कि लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस को इससे आप से यादा फायदा मिला। खासकर पंजाब में वह आप से दुगुनी से अधिक लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही। जबकि दिल्ली की प्रबुद्ध जनता इस सांठगांठ को अछे समझ गई। इसलिए लोकसभा चुनाव में दोनों पार्टी के गठबंधन को नकार दिया। जिस तरह से आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने फरवरी में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अपनी पार्टी और कांग्रेस के बीच गठबंधन की संभावना से बीते रविवार को इनकार किया, उससे इंडिया गठबंधन के भविष्य को लेकर भी तरह तरह के सवाल उठ रहे हैं। क्योंकि केजरीवाल ने कहा कि, दिल्ली में कोई गठबंधन नहीं होगा। हालांकि आप और कांग्रेस 'इंडिया' गठबंधन का हिस्सा हैं। दोनों दलों ने इस साल की शुरुआत में दिल्ली में लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ा था, लेकिन किसी भी सीट पर गठबंधन को जीत नहीं मिली थी और सभी 7 सीट बीजेपी ने जीती थीं। बता दें कि दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों के लिए 2025 में चुनाव होंगे। 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने 62 सीटें जीती थीं। वहीं बीजेपी को महज 8 सीटों पर जीत मिली थी। कांग्रेस का लगातार दूसरी बार दिल्ली से सफाया हो गया था। इस बार भी कांग्रेस की दिल्ली में मजबूत स्थिति नहीं है। ऐसे कांग्रेस मुकाबले में दूर-दूर तक नहीं दिखाई दे रही है। याद दिला दें कि कांग्रेस ने 2008 में हुए दिल्ली विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज करते हुए सरकार बनाई थी। 2008 में कांग्रेस को 40.31 फीसदी वोट मिले थे। हालांकि, साल 2013 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को हार का मुंह देखना पड़ा था। वर्ष 2008 में जहां पार्टी का वोट प्रतिशत 40 फीसदी था, वो वर्ष 2013 में घटकर 25 प्रतिशत पर आ गया था। वहीं, साल 2015 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को तगड़ा झटका लगा, जब उसे 10 फीसदी से भी कम वोट मिले और उसे एक भी सीट नहीं मिली।

महंगाई, आरबीआई और सरकार

प्रेम शर्मा

“ आरबीआई इस बार रेपो रेट 6.5 फीसदी पर स्थिर रखा. इसके पीछे मुख्य कारण यह था कि अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में खाद्य महंगाई लिमिट से अधिक बनी रही ”

आरबीआई इस बार रेपो रेट 6.5 फीसदी पर स्थिर रखा. इसके पीछे मुख्य कारण यह था कि अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में खाद्य महंगाई लिमिट से अधिक बनी रही। अनुमान के अनुसार खाद्य महंगाई में कमी केवल अगले साल की शुरुआत में दिखाई देगी। महंगाई में वृद्धि का असर जनता की खरीदने की शक्ति पर पड़ता है। यदि इसे समय पर नियंत्रित न किया जाए, तो इससे अर्थव्यवस्था की नींव हिलने लगती है। आरबीआई को ऐतिहासिक रूप से ग्यारहवी बार रेपो रेट स्थिर रखना शायद इसी बॉत का संकेत है। ऐसे में अगर महंगाई को लेकर आरबीआई गर्वनर शशिकान्त दास ने दो केन्द्रीय मंत्री सीतारमण और पीयूष गोयल के अनुरोध को दर किनार कर रेपोरेट स्थिर रखा है तो इस बारे में सरकार को भी अब गम्भीरता से विचार करना चाहिए। सरकार को अब इस बॉत पर गौर करना चाहिए कि स्थिर और सीमित आय में जीवनयापन कर रही देश की 70 से 80 प्रतिशत आबादी का जीवन बद से बद्तर स्थिति की ओर अग्रसर है। किसानों के प्रति हमदर्दी जताते हुए भले ही आरबीआई ने दो लाख तक कर्ज बिना गारन्टी कर दिया हो लेकिन इस महंगाई में किसान उसे चुकाऐगा कैसे इस पर भी गहन विचार किया जाना चाहिएं। यह ग्यारहवीं बार है, जब रेपो दर यथावत रखा गया। यह पिछले वर्ष की फरवरी से साढ़े छह फीसद पर बना हुआ है। इसका बोझ सबसे अधिक घर और वाहन के लिए कर्ज लेने वाले मध्यवित्त वर्ग को उठाना पड़ रहा है। इसलिए वे उम्मीद लगाए हुए थे कि अगर रेपो दर में कमी की जाएगी तो उनके कर्ज पर किस्तें कुछ कम होंगी। मगर महंगाई के ऊपर की तरफ बने हुए रुख दो देखते हुए रिजर्व बैंक ने फिलहाल इसमें किसी तरह का बदलाव करना उचित नहीं समझा।रेपो दर वह ब्याज दर है, जिस पर बैंक रिजर्व बैंक से कर्ज लेते हैं। जाहिर है, उससे अधिक दर पर वे अपने ग्राहकों को कर्ज देते हैं। पिछले वर्ष रेपो दर में बढ़ोतरी का कुछ असर महंगाई पर देखा भी गया था। मगर इतनी लंबी अवधि का अनुभव यही है कि रेपो दर ऊंची रखने से महंगाई पर कोई बहुत असर नहीं पड़ रहा। बैंकों के कारोबार पर पड़ते नकारात्मक प्रभाव को कम करने के मकसद से सीआरआर यानी आरक्षित नगद अनुपात में पचास आधार अंक की कटौती कर दी गई है। सीआरआर यानी जो रकम बैंकों को हमेशा अपने पास आरक्षित रखनी पड़ती है। मगर इससे बैंकों को कितनी मदद मिलेगी, दावा करना मुश्किल है। अब अर्थव्यवस्था की विकास दर में कई विसंगतियां नजर आने लगी हैं। चालू वित्तवर्ष की दूसरी तिमाही की विकास दर सरकार के लिए गंभीर चेतावनी की तरह आई है।ऊपर से महंगाई बेलगाम

बनी हुई है। डालर के मुकाबले रुपए की कीमत चिंताजनक स्तर गिर चुकी है। विनिर्माण क्षेत्र हिचकोले खा रहा है। ऐसे में रेपो दर को यथावत रख कर महंगाई और विकास दर के बीच कैसे संतुलन बिठाया जा सकेगा, समझ से परे है। लंबे समय से लोगों की क्रयशक्ति बढ़ाने के व्यावहारिक उपाय आजमाने पर बल दिया जा रहा है, मगर सरकार तमाम दावों और वादों के बावजूद रोजगार सृजन और आय में विषमता के मोर्चे पर कोई ठोस उपाय नहीं जुटा पा रही है। जबकि आरबीआई ने मौद्रिक समीक्षा में नीतिगत ब्याज दरों को जिस प्रकार यथावत रखा है उससे यही संकेत मिलते हैं कि विकास की परवाह करने के साथ ही महंगाई को काबू में रखना रिजर्व बैंक की सबसे बड़ी प्राथमिकता बनी हुई है। जीडीपी की तस्वीर आरबीआई, बाजार का आकलन करने वाले विश्लेषकों से लेकर बाजार में सक्रिय तत्वों के अनुमानों से भी उलट रही । अर्थव्यवस्था की गति धीमी पड़ने के संकेत तो पहले से ही दिखने लगे थे, लेकिन 5.4 प्रतिशत की वृद्धि कई संकेत देने वाली है। यह अर्थव्यवस्था में स्थायित्व को भी रेखांकित करती है। इस धीमेपन की कारणों की पड़ताल की जाए तो नीतिगत ब्याज दरों को 21 महीने से यथावत बनाए रखने वाला आरबीआई का रुख भी इसके लिए एक हद तक जिम्मेदार है। इसे लेकर कई स्तरों पर आवाज उठती रहती है। औद्योगिक गतिविधियों को गति देने के लिए ब्याज दरों में कमी की आवश्यकता को लेकर बहस लंबे समय से जारी है। कई पहलुओं को देखते हुए आरबीआई अभी भी ब्याज दरें घटाने को लेकर संकोच कर रहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि किसी भी प्रकार की मौद्रिक नरमी से स्थितियां हाथ से निकलें। फ्रि वही सवाल कि महंगाई से राहत कैसे मिले? ऐसा नहीं है कि महंगाई पर काबू पाने के लिए सरकार के पास कोई उपाय बचे नहीं हैं। लंबे समय से यह मांग उठ रही है कि केंद्र और राज्य सरकारें पेट्रोल और डीजल पर वसूले जाने करों को घटाएं। इससे इन उत्पादों के दाम नीचे आएंगे और फ्रि हर चीज के दाम पर उसका असर दिखना शुरू होगा। महंगाई को लेकर रिजर्व बैंक पहले ही चिंता जता चुका है और वह भी सरकार को पेट्रोल, डीजल पर लगने वाले करों में कटौती का सुझाव दे चुका है। हाल में रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने भी पेट्रोलियम उत्पादों पर लग वाले करों में कटौती की जरूरत बताई है। हालांकि सरकार का तर्क है कि पेट्रोल-डीजल पर वसूले जा रहे करों से जो पैसा आ रहा है उसी से गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं चल रही हैं। लेकिन सवाल है कि अभी लोगों को महंगाई की और मार से कैसे बचाया जाए ? आम लोगों पर महंगाई की मार के दूरगामी असर होते हैं, जो उन्हें गरीबी की ओर धकेलते हैं। इसलिए महंगाई काबू करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए, जो लम्बे समय से नहीं दिख रही।

ज्ञान है तो शान है, ज्ञान के सूरज से परे होता अज्ञानता का अंधकार

यह सर्वविदित है कि इतिहास का पन्ना पलटें तो हर सभ्यता ने अपने कई कई रूप बदले हैंस संस्कृति ने नए नए नए आयाम का सृजन किया हैस वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप हैस यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति, सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया हैस जिस देश की भाषा,शिक्षा जितनी समृद्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई नई-नई गाथाएं लिखीं जाएंगीस मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समृद्ध बनाने में शिक्षा,भाषा, ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा हैस शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो, स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो, शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती है, शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है, शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैंस शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया हैस वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती हैस पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया हैस यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया हैस शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है, हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है, दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है, राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफअग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय हैस भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए-नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है। दिन प्रतिदिन जीवन की कार्यशैली में हम यह महसूस करते हैं कि शिक्षा भाषा तथा ज्ञान हमें यह महसूस कर आते हैं कि हम अभी तक कितने पीछे हैं एवं हमें कितने ज्ञान की और आवश्यकता है। हालांकि ज्ञान का कोई और झोर नहीं होता, ज्ञान तथा भाषा एक समृद्ध भंडार है, उसमें आप जितना सीख सकते हैं ज्ञान ले सकते हैं वह अत्यंत लघु होता है। तो हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें ,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा, आशा और विकास को जन्म देती है।

मेष:- समस्याओं के समाधान हेतु मन नयी-नयी युक्तियों पर केंद्रित होगा। महत्वपूर्ण कायरें के प्रति आलस्य न करें। छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित न हो। जीवन साथी से मधुरता कायम रखें।

बृषभ:- स्वयं पर भरोसा रख योजनाओं को सुचारू रुप से क्रियान्वित करें। सगे-संबंधों में सरल व व्यावहारिक बनने की कोशिश करें। अर्थाभाववश चिंता संभव।

मिथुन:- किसी महत्वपूर्ण कार्य में अवरोध से मन हतोत्साहित होगा। संबंधों के प्रति कुछ नयी शिकायतें संभव। किसी विद्वान के विचारों से प्रभावित मन में उत्साह का संचार होगा।

कर्क:- कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा-प्रतियोगिता की दिशा में किया गया परिश्रम तीव्र होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

सिंह:- किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। आवेश में लिये गये निर्णय से पश्चाताप संभव। रोजगार में अति व्यस्तता रहेगी किंतु कायरे को समय से पूर्ण करें।

कन्या:- कुछ अच्छे आसारों से मन प्रफुल्लित रहेगा। पेशे संबंधी कोई यात्रा में अवरोध संभव। शिक्षार्थियों के लिए विशेष लाभ के आसार बनेंगे। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है।

तुला:- मन सकारात्मक विचारों से प्रभावित होगा। नाजुक संबंधों में संतुलित वाणी का प्रयोग करें। कोई हितैषी बिगड़े हुए संबंधों को सुधरवायेगा। रोजगार में अपनी क्षमता का लाभ उठाएंगे।

वृश्चिक:- सभी प्रकार के दायित्वों की पूर्ति हेतु संतुलित योजना पर चलें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय में सगे-संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। विरोधियों की प्रबलता से कार्यक्षेत्र में कुछ कठिनाइयां संभव।

धनु:- नये समीकरण लाभकारी कार्य क्षमता के परिचायक होंगे। प्रणय संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। आय-व्यय में संतुलन बनाने का प्रयत्न करें। महत्वपूर्ण कायरे में आलस्य का त्याग करें।

मकर:- कोई नई जिज्ञासा मन को आकर्षित करेगी। भौतिक सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी। शिक्षा-प्रतियोगिता की दिशा में किया गया परिश्रम सार्थक होगा। रोजगार में प्रगति संभव।

कुंभ:- पुरानी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर उत्साहित होंगे। नियोजित कार्यकुशलता से प्रगति के लिए आशान्वित होंगे। सुखद कायरें की व्यस्तता रहेगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्क रहें।

मीन:- क्षमता से परे किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना हानिकार हो सकती है। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न करें। रोजगार में लाभ के नये अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में मेहमान के आगमन से व्यय संभव।

संभल मस्जिद, अजमेर दरगाह: आखिर हम कितने पीछे जाएंगे?

आलेख : राम पुनियानी

सन 1980 के दशक में देश में शांति-व्यवस्था और प्रगति पर गम्भीर हमले हुए। साम्प्रदायिक ताकतों के हाथ एक नया औज़ार लग गया। वे देश के पूजास्थलों के कथित अतीत का उपयोग साम्प्रदायिकता भड़काने के लिए करने लगे। लालकृष्ण आडवाणी ने रथयात्रा निकाली। उनकी मुख्य मांग यह थी कि जिस स्थल पर पिछले पांच सदियों से बाबरी मस्जिद खड़ी थी, ठीक उसी स्थल पर एक भव्य राम मंदिर का निर्माण किया जाना चाहिए। इस मुद्दे पर बढ़ती कड़वाहट और तनाव के मद्देनज़र संसद ने एक नया कानून पारित किया, जिसके तहत पूजास्थलों की जो प्रकृति 15 अगस्त 1947 को थी, उसे बदला नहीं जा सकेगा और वही बरकरार रहेगी। बाबरी मस्जिद मामले में अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून को उचित ठहराया और यह भी कहा कि भविष्य में देश में शांति बनाए रखने की दिशा में यह कानून एक महत्वपूर्ण कदम है। सुप्रीम कोर्ट ने बाबरी मस्जिद के ढहाए जाने को अपराध बताया और यह भी कहा कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि बाबरी मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर दबा हुआ है। 'सबरंग' में प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि एक शीर्ष पुरातत्ववेत्ता प्रोफेसर सुप्रिया वर्मा, जो सन 2000 के दशक में बाबरी मस्जिद की भूमि पर हुई पुरातात्विक खुदाई में, एक अन्य पुरातत्वविद जया मेनन के साथ पर्यवेक्षक थीं, ने एक विवादास्पद बयान में कहा था कि मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर तो था ही नहीं, बल्कि अगर हम बारहवीं सदी से और पीछे जाकर चौथी या छठवीं सदी अर्थात गुप्तकाल की बात करें, तो ऐसा लगता है कि वहां एक बौद्ध स्तूप था। बाबरी मस्जिद को दक्षिणपंथी ताकतों के नेतृत्व में ढहाया गया था। ढहाने वाले नारे लगा रहे थे, ये तो केवल झांकी है, काशी, मथुरा बाकी है। कुछ समय पहले काशी और मथुरा में सर्वेक्षण की बात कही गई थी। यह इसके बावजूद कि प्लेसेस ऑफ रिलीजियस वर्शिप एक्ट 1991 इसे प्रतिबन्धित करता है। जस्टिस चन्द्रचूड़ ने यह कहकर एक मुसीबत खड़ी कर दी है कि अधिनियम पूजा स्थलों की प्रकृति में परिवर्तन को तो प्रतिबंधित करता है, मगर वह उनके सर्वेक्षण पर रोक नहीं लगाता। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दुओं को यह जानने का हक़ है कि जहां कोई मस्जिद खड़ी है, वहां पहले क्या था। इससे तोड़े-मरोड़े गए और काल्पनिक इतिहास का उपयोग कर अपने एजेण्डा को आगे बढ़ाने वालों की बन आई। पहले उन्होंने कहा कि अगर अयोध्या, काशी और मथुरा में मस्जिदों के नीचे दबे मन्दिरों को उन्हें सौंप दिया जाता है, तो वे अन्य पूजास्थलों के सम्बन्ध में यह मांग नहीं करेंगे। मगर अब स्थिति यह है कि अलग-अलग अदालतों में कम से कम 12 मस्जिदों और दरगाहों के सर्वेक्षण की मांग करते हुए याचिकाएँ लंबित हैं। इसके अलावा, कमाल मौला मस्जिद, बाबा बुधनगिरी दरगाह, हाजी मलंग दरगाह आदि पर भी हिन्दुओं द्वारा दावे किए जा रहे हैं। सम्भल की जामा मस्जिद के बाद सदियों पुरानी अजमेर दरगाह पर भी हिन्दू सेना नामक एक नए संगठन द्वारा दावा किया जा रहा है। यह संगठन शायद इसी काम के लिए बनाया गया है। इन सभी मामलों में कुछ दस्तावेजों का हवाला दिया जाता है, और अक्सर ये दस्तावेज शंकास्पद होते हैं। इनमें से कई मामलों में ब्रिटिश शासकों की अत्यन्त संदेहास्पद भूमिका रही है। जैसे, 'बाबरनामा' के अपने अनुवाद में बीवरिज ने बिना किसी प्रमाण के एक फुटनोट डाल दिया, जिसमें कहा गया था कि मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर हो सकता है। इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने के असंख्य उदाहरण हैं। इसी तरह मन्दिरों को तोड़ने के भी अनेक कारण थे, जिनमें मुख्य थे उनकी सम्पत्ति को लूटना और हारे हुए राजा को बेइज्जत करना। अगर हम इतिहास की बात करें, तो अनेक बौद्ध विहारों को धार्मिक कारणों से नष्ट किया गया। स्वामी विवेकानंद लिखते हैं, जगन्नाथ मंदिर एक पुराना बौद्ध मन्दिर है। हमने इस पर और कई अन्य बौद्ध मन्दिरों पर कब्ज़ा कर लिया और उनका पुनर्हिन्दूकरण किया...। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द सरस्वती, आदि शंकराचार्य के योगदान की चर्चा करते हुए लिखते हैं, उन्होंने 10 साल तक पूरे देश का भ्रमण किया, जिस दौरान उन्होंने जैन धर्म का खंडन किया और वैदिक धर्म

की पैरोकारी की। जमीन खोदने पर जो टूटी-फूटी मूर्तियां इन दिनों मिलती हैं, वे शंकर के समय तोड़ी गई थीं और जो साबुत मिलती हैं, उन्हें जैनियों ने खुद इस डर से ज़मीन में गाड़ दिया था कि उन्हें तोड़ दिया जाएगा। प्राचीन भारतीय इतिहास के बौद्ध नरेटिव के अनुसार, मौर्य राज्यवंश के बौद्ध राजा बृहद्रथ की हत्या उसके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा ईसा पूर्व 184 में की गई थी। इसके साथ एक सम्मानित और प्रतिष्ठित बौद्ध राजवंश (सम्राट अशोक भी जिसमें शामिल थे) का अंत हुआ और शुंग कुल के शासन की शुरूआत हुई। प्राचीन भारतीय इतिहास के लब्ध प्रतिष्ठित अध्येता डी. एन. झा लिखते हैं कि एक प्राचीन बौद्ध रचना 'दिव्यवदाना', जो संस्कृत में है, में वर्णित है कि बौद्धों के पीड़क पुष्यमित्र शुंग ने किस तरह अनेकानेक बौद्ध और जैन धार्मिक स्थलों को ढहाया था। ऐसा बताया जाता है कि वो एक विशाल सेना के साथ पाटलीपुत्र से निकला और पूरे रास्ते स्तूपों को नष्ट करता गया। उसने बौद्ध विहारों को आग के हवाले कर दिया और बौद्ध भिक्षकों को मौत के घाट उतार दिया। वो पाटलीपुत्र से लेकर सकाल (जिसे अब सियालकोट कहा जाता है) तक गया और वहां पहुंचकर उसने यह घोषणा की कि किसी भी श्रमण व्यक्ति का कटा हुआ सिर लाने वाले को इनाम दिया जाएगा। झा बताते हैं कि मथुरा, जो कुषाण युग में एक समृद्ध व्यापारिक केन्द्र था, वहां के कुछ मन्दिर जैसे भूतेश्वर और गोकरणेश्वर प्राचीन काल में बौद्ध पूजास्थल थे। इतिहास की जो समझ हमारे समाज में है, वह हिन्दू राष्ट्रवादी ताकतों द्वारा गढ़ी गई है। इसकी जड़ में है अंग्रेज़ों की फूट डालो और राज करो की नीति, जिसके अंतर्गत उन्होंने इतिहास का साम्प्रदायिक लेखन करवाया। इस इतिहास लेखन में राजाओं को उनके धर्म का प्रतिनिधि बताया जाता है। इस इतिहास लेखन का फोकस मध्यकाल पर है, जिस दौरान देश में कई मुस्लिम शासक हुए। जो चीज़ भुला दी जाती है और जिसे हमारी याददाश्त से मिटाने की कोशिश की जा रही है वह यह है कि औरंगज़ेब ने असम के कामाख्या देवी मन्दिर और उज्जैन के महाकाल मंदिर को भारी धनराशि भेंट के रूप में दी थी। हम यह भी जानते हैं कि हिन्दू राजा हर्षदेव ने देवोत्पतननायक नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी, जिसका काम था मन्दिरों की मूर्तियां उखाड़ कर उनके नीचे दबी दौलत को लूटना। यह बात कल्हण की 'राजतरंगिणी' में कही गई है। इसी तरह यह भी भुला दिया जाता है कि मराठा राजाओं ने श्रीरंगपटनम में एक मंदिर को नष्ट कर दिया था। मध्यकाल में धर्म का इस संदर्भ में कोई विशेष महत्व नहीं था। धार्मिक स्थलों को लूटने और तोड़ने के पीछे धार्मिक कारण नहीं थे। इसके विपरीत मौर्यकाल के अंत के बाद बौद्ध धर्म को उखाड़ फेंकने के लिए बौद्धविहारों को नष्ट किया गया था। भारतीय राजनीति और न्यायपालिका ने एक भस्मासुर पैदा कर दिया है, जो समाज में धार्मिक विभाजन को और गहरा बना रहा है। आज हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें हर मस्जिद को खोदकर देखना चाहिए कि उसके नीचे क्या कोई मन्दिर है? या फिर हमें पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में 'आधुनिक मन्दिरों' का निर्माण करना चाहिए. भाखड़ानंगल बाँध की नींव रखते हुए पंडित नेहरू ने वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाओं, इस्पात कारखानों, बिजली घरों और बाँधों को आधुनिक मन्दिर बताया था. हम आधुनिक मन्दिरों का निर्माण करेंगे या मस्जिदों के नीचे मन्दिर ढूंढते रहेंगे, इस पर ही हमारे देश की नियति निर्भर करेगी.

अभी तो चुग रहे हैं दाने ज़मीन के, उडने को पूरा आसमान बाकी है– अशरफ़ जमील

● आजाद समाज पार्टी की राजनीति देश की महाभ्रष्ट राजनिती के सामने अप्रत्याशित निर्णय से चौकाती रहेगी, देश की राजनिती में बहुत कुछ अप्रत्याशित करेगी ।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

बिजनौर/लखनऊ। बहुत ही कम समय मे लोकप्रियता के शिखर पर पहुंची तथा तेजी से दलित एव मुस्लिम समाज मे पैठ बढाती आजाद समाज पार्टी ने हाल के महाराष्ट्र तथा झारखंड के विधानसभा चुनाव तथा उत्तर प्रदेश विधानसभा के उपचुनावों मे कोई खास उपलब्धि हासिल नही कर सकी । उत्तर प्रदेश मे उपचुनावों के लिए पहले तो आजाद समाज पार्टी ने असदउद्दीन ओवैसी की आल इण्डिया मजलिस इत्तेहाद उल मुसलेमीन मीम के साथ गठबंधन कर चुनाव लडने का फैसला किया था, किन्तु अंतिम समय मे खुद को गठबंधन से अलग कर अकेले चुनाव मे जाने का फैसला लिया तथा नतीजों ने साबित किया कि ये फैसला घातक साबित हुआ । पिछले कुछ समय से चंद्रशेखर तथा आजाद समाज पार्टी पर ये आरोप भी लगते रहे कि वो भारतीय जनता पार्टी की बी टीम के रूप मे भाजपा को फायदा पहुचाने वाली राजनीति कर रही है । यही नही राजनैतिक परिदृश्य पर नजर रखने वाले अकसर ये भी निष्कर्ष निकालते रहे है कि भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर के इर्द गिर्द सलाहकारों के रूप मे संघी मानसिकता के लोग एकटिव है जो चंद्रशेखर को ऐसी सलाह देते है जो भाजपा के हित मे हो तथा ऐसी सलाहों से आजाद समाज पार्टी को भारी खामियाजा भी भुगतना पडता है । आजाद समाज पार्टी की कार्यशैली, रणनीति सहित विभिन्न मुद्दों पर बात करने के लिए आजाद समाज पार्टी की कोर कमेटी के सदस्य तथा स्टार प्रचारक

अशरफ जमील से बिजनौर टुडे संवाददाता ने भेट कर उनके विचार जानने का प्रयास किया । सवाल- आजाद समाज पार्टी ने जिस तेजी के साथ आम आदमी विशेषकर दलित तथा मुस्लिम समाज मे पैठ बनाई थी वर्तमान परिदृश्य मे उसका प्रभाव जमीनपर अब कुछ खास नजर नही आ रहा है इसका क्या कारण है । अशरफ जमील- ऐसा आपको लगता होगा पर ऐसा नही है, पूरे भारत मे हमारी सदस्यो की संख्या तेजी से बढ रही है उत्तर प्रदेश में तो पार्टी की सदस्यता लेने वालों की होड लगी है जो पार्टी के बढते ग्राफ का प्रमाण है, आज उत्तर प्रदेश के अधिकांश जिलो मे हमारा संगठन कहीं मजबूत और कही कुछ कमजोर जरूर दिखाई दे सकता है किन्तु आम जनता मे हर जगहां पर आजाद समाज पार्टी की अच्छी छवि बनी हुई है । सवाल- पार्टी की नीतियां अक्सर ढुलमुल नजर आती हैं, पिछले यू-पी विधानसभा के उपचुनावों मे आपकी पार्टी ने असदुद्दीन ओवैसी की नार्टी से गठबंधन किया और फिर अंतिम समय मे अकेले ही चुनाव लडने का ऐलान कर ओवैसी साहब को दूध की मक्खी की तरहां निकालकर फेंक दिया ऐसा क्यों । जवाब- हमारी नीतियाँ एकदम ठोस हैं किन्तु कभी कभी रणनीति के हिसाब से अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पडता है आपको ऐसा लग सकता है कि हमने ओवैसी साहब को धोखा दिया, किन्तु हमरी रणनीति विरोधियों को हतप्रभ करने वाली होती है । जहां तक ओवैसी साहब से गठबंधन ना करना एक रणनीति का हिस्सा था । सवाल- यूपी विधानसभा उपचुनावों के नतीजो ने तो आपकी रणनीति को धाराशाई कर दिया, क्या आपको नही लगता कि आपके इस निर्णय से मुस्लिम समाज मे गलत संदेश गया और मुसलिम मतदाता आपसे दूर खिसक गया जिससे पार्टी की दुर्गति हुई । जवाब- ये भी तो होसकता है कि हम और उवैसी साहब दोनो अपनी अपनी पार्टी की वास्तविक स्थिती का आकलन करने के लिए प्रयोग के तहत अलग अलग लडे हों । सवाल- तो आकलन का क्या निष्कर्ष निकला और भविष्य मे क्या आप दोनो साथ मिलकर चुनाव मे उतरेंगे । जवाब- बिल्कुल हमने कब मना किया बल्कि आजाद समाज पार्टी तथा ओवैसी साहब की पार्टी मजलिस दोनो राष्ट्रवादी पार्टियां धर्मनिरपेक्ष है तथा दोनो का बेस वोट भी अधिकांश दलित और मुस्लिम है, दोनो समुदाय इस महाभ्रष्ट राजनैतिक पार्टियों द्वारा वर्षो से छले जा रहे हैं तथा दोनो ही घोर प्रताणना के शिकार है इनको सशक्त करना तथा इनमे राष्ट्रीय चेतना का उनमाद भरना दोनो ही पार्टियों का लक्ष्य है अत आने साले समय मे हम इन दोनो वर्गो के अधिकारों की लडाई से लेकर चुनावों तक हम साथ दिखें गे । सवाल- दलित मुस्लिम की राजनीति तो बहुत सी पार्टियां कर रही हैं, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल आदी, तो आप क्या नया करने वाले हैं इसमे । जवाब- लगभग खुद को सेक्युलर कहने वाली हर पार्टी दलित मुस्लिम की राजनीति करती है, किन्तु हम मात्र दलित मुस्लिम राजनीति करने नही आए हैं, हमारा लक्ष्य दोनो वर्गो के उत्थान करना है, हमारा लक्ष्य इस देश के अन्नदाता को सशक्त बनाना है हमारा लक्ष्य हर खेत तक पानी, हर ग्राम तक नहर, हर तहसील में मंडियां है किसानो की उपज के लिए बाजार बनाना है, हमारा लक्षय देश के मूल निवासी को देश का निति निर्धारणकर्ता बनाना है, मूल निवासी राज करेगा दलित मुस्लिम किसान साथ चलेगा के नारे के सहारे देश की राजनिती मे एक नयी क्रांति का संचार करना है, हम एस देश के हर नागरिक को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करने के लिए राजनीति मे आए हैं, हर भारतीय के सर पर छत, पेट मे अन्न, तन पर कपडा, मुफ्त ईलाज, हर हाथ को काम, हर बालक की शिक्षा को सरकार की नैतिक जिम्मेदारी बनाने आए हैं, हम सदियों से पीडित उपेक्षित दलित समाज अग्रणी पंक्ती तक पहुचाने आए हैं अत हमारी राजनीति मे बहुत कुछ अप्रत्याशित होगा, क्यो की हमारा राजनीति मे सामना उससे है जिसकी राजनीति ही छल कपट से शुरू हुई है जो फरेब मे निपुण है जिसने पूंजीवाद को हथियार बना रखा है, अत आजाद समाज पार्टी इसको उखाड फेकने के अपने संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से अपनी रणनीतियां निर्धारित करेगी जो आम आदमी और देश दोनो का तेजी से विकास कर सकें । इतिहास गवाह है जबतक मुस्लिम दलित साथ रहा उसको सम्मान मिलता रहा किन्तु नफरत की राजनीति करने वालों ने जाति के नामपर छल की राजनीति कर दोनो को पहले दूर किया फिर तोड दिया । इतिहास उठाकर देखिए मुसलमानों ने हर दौर मे दलितों को सम्मान दिया, मनुवादी दलित युवतियों को स्तन ढकने का अधिकार नही देते थे, मुसलमानों ने वो अधिकार छीन कर दिए, दलितों को अपने साथ हर जगहां सम्मान दिया, इसी वातावरण मे भारत सोने की चिडिया बना था, हम उसी सौहार्दपूर्ण वातावरण को वापस लाने को राजनीति मे आए हैं, देश के मूल निवासी को देश पर शासन का अधिकार सुनिश्चित कराने के लिए हम राजनीति मे आए हैं, हम एक सशक्त विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए राजनीति मे आए हैं, अत हमारे निर्णयों पर चौकना तो पडेगा आपको भी, मगर हम अपने लक्ष्य की ओर हैं अत दिखावे पर मत जाइए अभी बहुत कुछ देश की राजनिती मे अप्रत्याशित होना है । सवाल- आप की पार्टी पर आरोप लगते रहे हैं आप भाजपा की बी टीम के रूप मे काम करते हो, साथ ही यह भी कहा जाता है कि चन्द्रशेखर तो सही है किन्तु उनके इर्द गिर्द के सलाहकार संघी मानसिकता के हैं जो चन्द्रशेखर के निर्णयों को प्रभावित कर देते है, सही सलाह नही देते । जवाब- ऐसा आपको लगत होगा मगर हमारे यहा पार्टी अध्यक्ष निर्णय लेने हेतु सक्षम एव स्वतंत्र हैं हॉ वे सलाह सबसे लेते हैं मगर दबाव किसी का नही लेते, ये सोचना बचकाना काम है । रही बात भाजपा की बी टीम के आरोप की, तो ओवैसी साहब पर भी तो बी टीम के आरोप लगते रहे हैं, यही नही आम आदमी पार्टी पर भी काफी समय से ये आरोप लगते रहे हैं, ये ओछी राजनीति चाले हैं आजाद समाज पार्टी इन ओछी चालो से सतर्क और इससे बहुत दूर हैं, भाविष्य मे हम उवैसी साहब के साथ अनेक अवसरो पर साथ दिखेंगे, ओवैसी साहब ही क्यो हम हर उस पार्टी के साथ भी दिखेंगे जो देश की मूल भावना, मूल निवासी, तथा मूल सिद्धांतो के लिए संघर्ष करेगा, आजाद समाज पार्टी मात्र कोई एक राजनितिक दल ही नही अपितु अपने आप मे एक क्रांति है जो भारत के भविश्य की दिशा और दशा निर्धारित करेगी

एगार कुण्ड प्रखंड कार्यालय में शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्य पर प्रशस्ति दिया गया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। ? चिरकुंडा लोकसभा आम निर्वाचन 2024 एवं विधानसभा आम निर्वाचन 2024 के परिपेक्ष में निर्वाचन कार्य निष्ठा पूर्वक किए जाने के आलोक में रविवार को मध्य विद्यालय एगारकुण्ड निरसा तीन के प्रभारी प्रधानाध्यापक प्रमोद कुमार झा, शिक्षक अरुण कुमार सिंह, राजीव रंजन मिश्रा कन्हैया सिंह, पुरुषोत्तम कुमार सिंह को एगारकुण्ड प्रखंड स्थित सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में उत्कृष्ट कार्य संपादन के तत्वाधान में सिविल न्यायाधीश धनबाद सत्यभामा कुमारी एवं सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी 39 निरसा विधानसभा क्षेत्र सहप्रखंड विकास पदाधिकारी एगारकुण्ड मधु कुमारी के द्वारा प्रशस्ति पत्र सम्मान स्वरूप दिया गया। ज्ञात हो कि कोरोना महामारी के दौरान अच्छे कार्य किए जाने के परिपेक्ष में शिक्षक प्रमोद कुमार झा को गणतंत्र दिवस 2022 के पावन अवसर पर उत्कृष्ट कार्य पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से करने के लिए जिला प्रशासन धनबाद की ओर से तत्कालीन उपायुक्त संदीप कुमार के द्वारा ससम्मान प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया था। समारोह को संबोधित करते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी एगार कुंड मधु कुमारी ने कहा कि शिक्षक प्रमोद कुमार झा के द्वारा निर्वाचन में सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्यो के लिए प्रशस्ति पत्र दी गई है इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं, उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्यों में प्रमोद कुमार झा का अपनी नियमित जिम्मेदारियां से आगे बढ़कर चुनौती पूर्ण परियोजना पूरा किया। उन्होंने कहा कि अनुकूलनशीलता और लचीलापन ढंग से शालीनता पूर्वक कार्यों का इनके द्वारा निर्वाहन किया गया। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा लगातार समर्पण विश्वासनीयता और मजबूत कार्य नैतिकता का प्रदर्शन करते पाए गए। इस अवसर पर अंचल अधिकारी एगारकुण्ड कृष्ण कुमार मरांडी, उप प्रमुख विनोद दास, मुखिया काकुली मुखर्जी, विमल रवानी, छत्रपति शाही किसक, रेणु कुमारी, प्रकाश चंद्र, सूरज कुमार, ममता कुमारी, सती सावित्री बाउरी, अधिवक्ता कृष्णकांत सिंह, नीरज गोयल, विधान मंडल, आदि लोग उपस्थित थे।

प्रदेश अध्यक्ष उत्तराखंड युवा कांग्रेस के सुमित्तर भुल्लर से सैफ मंसूरी मिले

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

शेरकोट। कांग्रेस पार्टी के युवा नेता सैफ मंसूरी ने प्रदेश अध्यक्ष उत्तराखंड युवा कांग्रेस के सुमित्तर भुल्लर से देहरादून पहुंच कर मुलाकात की युवा नेता सैफ मंसूरी कांग्रेस पार्टी के लिए दिलो जान से मेहनत करते हैं और कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने का काम कर रहे हैं। अभी पिछले हफ्ते ही उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत से उनके घर पर पहुंचकर मुलाकात की थी और अभी कुछ दिनो पहले ही प्रदेश उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश कांग्रेस के हाजी रिजवान से उनके घर पर जाकर सैफ मंसूरी ने मुलाकात की थी अभी तीन दिन पहले ही देहरादून में युवा कांग्रेस का नशा नहीं रोजगार दो को लेकर प्रदर्शन हुआ था तो इस प्रदर्शन में युवा नेता सैफ मंसूरी भी देहरादून पहुंचकर प्रदर्शन में शामिल हुए थे सैफ मंसूरी ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत से भी प्रदर्शन में मुलाकात की और युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु से भी मुलाकात की। सैफ मंसूरी ने कहा 2027 में उत्तराखंड में कांग्रेस की सरकार आएगी और एक बार फिर हरीश रावत मुख्यमंत्री बनेंगे।

जिलाधिकारी ने बच्चों को 02 बूंद जिदंगी की पिलाकर पल्स पोलियो अभियान का किया शुभारम्भ

□ 0-5 वर्ष के सभी बच्चों को निकट के पोलियो बूथ पर ले जाकर पोलियो ड्रॉप जरूर पिलवाएं - जिलाधिकारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

मैनपुरी। जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह ने नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हिन्दपुरम में लक्षित बच्चों को 02 बूंद जिदंगी की पिलाकर पल्स पोलियो अभियान का शुभारंभ करते हुए कहा कि हमारा देश पोलियो मुक्त हो चुका हैं लेकिन अभी भी सतर्कता की आवश्यकता है. पोलियो के वॉयरस अभी भी पड़ोसी देशों में मौजूद है। उन्होंने जनपद वासियों से अपील करते हुये कहा कि 0-5 वर्ष के सभी बच्चों को निकट के पोलियो बूथ पर ले जाकर पोलियो ड्रॉप जरूर पिलवाएं ताकि बच्चों को पोलियो वॉयरस से प्रतिरक्षित किया जा सके। उन्होने कहा कि देश के भविष्य बच्चों को ताउम्र अपंगता से बचाने के लिए जनपद के प्रत्येक व्यक्ति को अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर अभियान को सफल बनाना है. पल्स पोलिया अभियान की सफलता ही लक्षित शत-प्रतिशत बच्चों को दवा पिलाने पर ही निर्भर है ताकि हम भारत को पोलियो मुक्त बनाये रखने की संकल्पित दिशा में कदम बढ़ा सकें। उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान सुनिश्चित किया जाये कि कोई भी लक्षित बच्चा दवा पीने से वंचित न रहे, विशेषतौर पर ईंट भट्टों पर निवास कर रहे परिवारों, घुमन्तू लोगों के लक्षित बच्चों को दवा अवश्य पिलायी जाये। मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आर.सी. गुप्ता ने कहा कि अभियान ब्लॉकवार कार्य योजना बनाकर प्राप्त निर्देशानुसार संचालित होगा, जिसमें जनपद के शून्य से 05 वर्ष तक के लगभग 3,39,541 शिशुओं को 981 बूथ बनाकर पोलियो ड्रॉप से आच्छादित किये जाने का लक्ष्य निर्धारित है, जिला स्तर पर अपर, उप चिकित्साधिकारियों को ब्लॉक नोडल अधिकारी नामित करते हुये पूर्ण अनुश्रवण एवं मूल्याकन की जिम्मेदारी सौंपी गयी है साथ ही बेसिक शिक्षा, बाल विकास, पंचायती राज, नगर निकायों, आपूर्ति, राजस्व आदि विभागों के अन्तर्विभागीय समन्वय से संचालित कराये जाने हेतु अन्तर्विभागीय बैठकें, प्रशिक्षण पूर्ण कराते हुये आज है। ज से यह अ अभियान आरंभ किया गया कार्यक्रम संयोजक जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डा विजेन्द्र सिंह ने बताया कि ब्लॉकवार आंगणित लगभग 3028 ग्राम, मुहल्लों में 3,43,357 घरों में लगभग 3,39,541 शिशुओं को आज 981 बूथों पर अधिकाधिक बच्चों को आच्छादित कराने का लक्ष्य है। दि. 09 दिसम्बर से जिले की 584 टीमें घर-घर जाकर शिशुओं को पोलियो ड्रॉप आच्छादित करेंगीं, अभियान में ए.एन.एम.. आशा-संगिनी, आंगनवाडी कार्यकर्ती आदि के संयुक्त टीमों द्वारा कार्य कराया जा रहा है। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी सदर अभिषेक कुमार, प्रभारी डी.पी.ओ. हरिओम बाजपेयी, डा. अनिल कुमार, डा. सुरेन्द्र सिंह, डा. वी.पी. सिंह, रवीन्द्र सिंह गौर, डा. रानू, डा. प्रदेश कुमार, संजीव वर्मा, संजीव पाण्डेय, राजीव कुमार, अनुज कुमार, प्रभाकर गंगवार आदि उपस्थित रहे।

संगठनात्मक चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी के हरगांव मण्डल की सम्पन्न हुई बैठक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। संगठन चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी के हरगांव मंडल की एक बैठक हरगांव विकास खण्ड के अंतर्गत एक विद्यालय में भाजपा चुनाव अधिकारी के निर्देशन में सम्पन्न हुई।इस बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ भाजपा नेता ने की। मिली जानकारी के अनुसार जिले के हरगांव विकास खण्ड क्षेत्र अन्तर्गत भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक चुनाव को लेकर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से विचार- विमर्श करने हेतु एक आवश्यक बैठक क्षेत्र के गया सिंह सुमित्रा सिंह चौहान महाविद्यालय कल्यानपुर में सम्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता विजय कुमार मिश्र ने की। बैठक में पधारे चुनाव अधिकारी विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ नेता मुकुंदे लाल त्रिवेदी ने सर्वप्रथम बैठक में आए हुए कार्य कर्ताओं सहित पदाधिकारियों से परिचय प्राप्त किया।उसके बाद संगठन की रूपरेखा पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि मंडल अध्यक्ष के चुनाव हेतु प्रक्रिया आगामी ग्यारह दिसम्बर से प्रारम्भ हो जाएगी।इसके लिए सभी सम्मानित कार्य कर्ताओं से उनके सुझाव भी मांगे।इस प्रकार से बैठक संपन्न हो गयी। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान मण्डल अध्यक्ष संजय जायसवाल,महामंत्री संजय दीक्षित,जिला उपाध्यक्ष किसान मोर्चा सीतापुर शुभम बाजपेयी,भारतीय जनता पार्टी के जिला प्रतिनिधि सुनील त्रिपाठी (बल्लू)विपिन वर्मा,सुनील भार्गव,महिला नेत्री श्रीमती विमला सिंह,बलवंत सिंह, सरदार चेन्ना सिंह,अभिषेक सिंह तोमर,प्रदीप कुमार मिश्र,रामू मिश्र रीछिन, इंद्रपाल सिंह चौहान,सनद कुमार मिश्र,धर्मेन्द्र यादव हैदरपुर,राजेन्द्र निषाद,बृजेंद्र शुक्ला, समाजसेवी एवं पत्रकार अनूप रस्तोगी,वरिष्ठ पत्रकार प्रताप तिवारीअनुज कुमार अवस्थी,सिया राम जायसवाल आदि भारी संख्या में पार्टी कार्य कर्ता गण मौजूद रहे।

जागृति इंटर कॉलेज में आयोजित कवि सम्मेलन में जिले के विख्यात कवि ने किया धुआंधार काव्य पाठ

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की तहसील बिसवां क्षेत्र के रामा भारी गांव में जन्मे जिले के विख्यात कवि साहित्य भूषण कमलेश मौर्य मृदु ने सूरतगंज में कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए धुआंधार काव्य पाठ किया। जागृति इंटर कालेज में आयोजित विराट कवि सम्मेलन में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा जिन्की सुगन्ध से सुवासित है राष्ट्र वाटिका ये मृदु मलय समीर मेरे देश के।भारती के उन्नत ललाट पर विराजमान रोली और चंदन अबीर मेरे देश के। भावी इतिहास गढ़ने को हैं प्रयास रत शाश्वत सुभाग्य की लकीर मेरे देश के। देखने में आज छोटे छोटे दीखते भले ही युवक हैं भावी तस्वीर मेरे देश के।। इसी क्रम में उन्होंने संकल्प का छंद पढ़ते हुए देशवासियों का आह्वान किया बलिदानों से प्राप्त हुई ये स्वतंत्रता है इसको मिटने नहीं देंगे। इस देश का मस्तक ऊंचा रहे इसकी गरिमा घटने नहीं देंगे। धरती ही नहीं ये हमारी है मां फिर अंग कोई कटने नहीं देंगे। हम आप प्रतिज्ञा यही कर लें %मृदु% भारत को बंटने नहीं देंगे।। प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती शशि श्रेया द्वारा प्रस्तुत वाणी वंदना से प्रारंभ इस कवि सम्मेलन में इसके अतिरिक्त सुरेश फक्कड़, संजय सांवरा,चेतराम अज्ञानी,जगन्नाथ मिश्र निर्दोष, ओम शर्मा %ओम% आदि कवियों ने काव्यपाठ कर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। संचालन डा शर्मेश शर्मा ने किया। मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के प्रदेश महामंत्री रामबाबू द्विवेदी ने अपने सम्बोधन में कवियों को राष्ट्र जागरण का सजग प्रहरी बताया।विद्यालय के प्रधानाचार्य डा रमेशचंद्र ओझा ने सभी कवियों व अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

नौ दिसंबर को होगा सामाजिक सद्भाव रक्तदान शिविर का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिला कांग्रेस कमेटी सीतापुर द्वारा कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी (सांसद राज्यसभा) के जन्म दिवस के अवसर पर सामाजिक सद्भाव रक्तदान शिविर का आयोजन दिनांक नौ दिसंबर 2024 को जिला अस्पताल में प्रात: ग्यारह बजे किया जाएगा। उपरोक्त जानकारी देते हुए जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष उत्कर्ष अवस्थी ने कहा कि हम सब की प्रेरणा स्रोत,विनम्र,सहज और पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का भाव रखने वाली हम सबकी नेता सोनिया गांधी के जन्म दिवस पर रक्तदान से अच्छा कोई दूसरा उपहार हम कांग्रेसजन उन्हें नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि आज देश में जिस तरह का विषाक्त माहौल वर्तमान भारतीय जनता पार्टी की सरकार में बन गया है और दिन प्रति दिन उसे भाजपा के वरिष्ठ नेताओं द्वारा बढ़ाया जा रहा है वह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। बंटोगे तो कटोगे की सियासत करने वाली भाजपा इस देश के संविधान की मूल भावना का अनादर करती है।यह लोग भारत के लोकतांत्रिक और सेकुलर चरित्र को खत्म करना चाहते हैं?। मगर हम सभी कांग्रेसजन प्रतिबद्ध है और उनके नापाक मंसूबों को विफल करने के लिए हम राजनीतिक,सामाजिक और सांस्कृतिक, हर तरीके की लड़ाई सदैव लड़ते रहेंगे। इस देश के मूल चरित्र को बचाए रखने के लिए ईश्वर ने सभी इंसानों को एक जैसा बनाया उसने कोई भेद नहीं किया। सभी के शरीर में एक जैसा रक्त बहता है और यह लाल रक्त हमें जातियों में धर्म में बांटने से रोकता है और एकता रखता है। उत्कर्ष अवस्थी ने इन्हीं भावनाओं के साथ सीतापुर के कांग्रेसजनों से उपरोक्त कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की।

झरिया बाजार के जाम में मरीज के साथ एंबुलेंस घंटों फंसी रही सड़क पर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। सरकार गई और आई मगर मगर आज भी झरिया शहर पुरी तरह से अतिक्रमण की जद में । रविवार को एक एंबुलेंस गम्भीर मरीज को ले जाने के दौरान फंसा जाम में मरीज के परिजन हलकान। इस संदर्भ में कई बार जिले के आला अधिकारी से झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन घनबाद अतिक्रमण हटाने और जाम से निजात दिलाने हेतु अनुरोध पत्र दिया परन्तु जिला प्रशासन तमाशबीन बनी हुई है। झरिया शहर लक्षमिनिया मोड़ से लेकर चार नम्बर बस स्टैंड तक आए दिन जाम से आम जनता त्रस्त है । वन-वे का भी नहीं होता अनुपालन जिससे वाहनों की लम्बी कतार आए दिन लगी रहती है और घंटों घंटो वाहन जाम में फंसे रहते हैं। और वाहनों का हजारो लीटर डीजल व पेट्रोल की बर्बादी के साथ ही साथ स्थानीय लोगों को गम्भीर बिमारी हो रही है । इसके पूर्व एक एंबुलेंस जाम में फंसने के कारण मरीजों की मौत तक हो चुकी है और इस समाचार को विभिन्न दैनिक अखबारों ने प्रमुखता से प्रकाषित किया पर परिणाम वहीं ढाक के तीन पात । परन्तु जिला प्रशासन इस समस्या के समाधान को लेकर उदासीन है। झारखंड परिवहन मजदूर यूनियन घनबाद जिला अध्यक्ष सुनील कुमार पासवान नर प्रशासन से पुन: अनुरोध किया है कि झरिया शहर को जाम से मुक्ति दिलाएं और अतिक्रमण को झरिया बाजार से हटाएं अन्यथा आने वाले दिनों में मजबूरन न्यायालय में जनहित याचिका दायर कर न्यायालय से गुहार लागाने का काम करेंगे। जिसकी सारी जवाबदेही जिला प्रशासन की होगी सुनील कुमार पासवान जिला अध्यक्ष सह संयुक्त सचिव झारखंड राज्य कमिटी सह सामान्य परिषद सदस्य ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन केन्द्रीय कमिटि।

महिलाओं का 33 प्रतिशत आरक्षण भाजपा सरकार तत्काल प्रभाव से लागू करे- अल्का लांबा

● उत्तर प्रदेश में महिला कांग्रेस सदस्यता अभियान ने ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस के निर्देश पर पूरे देश में महिला कांग्रेस द्वारा सदस्यता अभियान की शुरूआत विगत 15 सितंबर 2024 से शुरू हुई थी, जिसमें उत्तर प्रदेश में महिला सदस्यता अभियान ने ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की। इसके तहत महिला कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करने वाली महिलाओं का मनोबल बढ़ाने के लिए ''नारी न्याय सदस्य सम्मान समारोह'' कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। रविवार 8 दिसंबर को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में ''नारी न्याय सदस्य सम्मान समारोह'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्षा अलका लांबा भी मौजूद रहीं। कार्यक्रम का आयोजन उत्तर प्रदेश महिला कांग्रेस मध्यजोन की सचिव अनामिका यादव द्वारा किया गया। नारी न्याय सदस्य सम्मान समारोह में उपस्थित महिलाओं को अखिल

भारतीय महिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष अलका लांबा की ओर से नारी न्याय किट प्रदान किया गया। अपने सम्बोधन में अलका लांबा ने कहा कि महिलाओं को अपने हक और हकूक की लड़ाई यदि मज़बूती से लडत्रनी है तो राजनीति में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़नी चाहिए। अल्का लांबा ने कहा कि हमारी नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने महिलाओं के हक की लड़ाई हमेशा मजबूती से लड़ी है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर पूरे विष्व में भारत का नाम रौशन करने वाली हमारी पहलवान बेटियां जब भाजपा के एक दुष्कर्मी पूर्व सांसद के खिलाफ धरने पर बैठी थीं तब प्रियंका गांधी वाड्रा ने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई को बल देने का काम किया था। देश की बेटी विनेश फोगाट के साथ जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए गलत निर्णय के बाद मायूस विनेश फोगाट को कांग्रेस पार्टी ने प्रत्याशी बनाया। आज विनेश फोगाट चुनाव जीतने के बाद महिलाओं की सशक्त आवाज बन चुकी हैं। उन्होंने कहा कि बाबा साहब भीमराव अम्बेड़कर का संविधान खतरे आज में है जिसको बचाने के लिए हमारे नेता राहुल गांधी सड़क से सदन तक संविधान को बचाने की लड़ाई पूरी मजबूती के साथ लड़ रहे। बाबा साहब के संविधान ने इस देश की महिलाओं को पुरुषों के बराबर खड़ा होने का अधिकार दिया और यदि वह संविधान ही नहीं रहा तो वह अधिकार भी समाप्त हो जायेंगे। अल्का लांबा ने बताया कि किस तरह से देष के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी जी ने निकाय चुनाव में महिलाओं को आरक्षण दिया जिसका नतीजा है कि आज देश की लाखों महिलाएं पंच, सरपंच, सभासद और मेयर जैसे पदों को सुशोभित कर रही हैं। श्रीमती लांबा ने मांग की है जो महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिला है उसे भाजपा सरकार को तत्काल प्रभाव से लागू करना चाहिए। इस मौके पर अलका लांबा ने नारी न्याय सदस्य सम्मान समारोह कार्यक्रम के मंच से उत्तर प्रदेश महिला कांग्रेस की समस्त इकाइयों को तत्काल प्रभाव से भंग करने एलान करते हुए जनवरी 2025 में नई कार्यकारिणी के पुनर्गठन की घोषणा भी की। उप्र कांग्रेस प्रदेष अध्यक्ष अजय राय ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपकी लड़ाई में जहां कहीं भी आपको मेरी अथवा पार्टी की आवश्यकता होगी मैं आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहूंगा। आप सभी कांग्रेस पार्टी की सदस्य हैं, आप सभी राहुल गांधी, प्रियंका गांधी के परिवार की सदस्य हैं। कार्यक्रम में पूर्व विधायक सतीश अजमानी, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह, महासचिव प्रभारी संगठन अनिल यादव, अनुसईया शर्मा, शहला अहरारी, ममता राजपूत, अनामिका यादव, पूनम पंडित, नम्रता दान, पूजा चढढा, प्रियंका गुप्ता, डॉ. सुधा मिश्रा, जैनब हैदर, सुशीला शर्मा, शीला मिश्रा, विभा त्रिपाठी, मोनिका मिश्रा, डॉ. रिचा शर्मा, मेहताब जायसी, सुशीला सोनकर, सुनीता रावत, सहित भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित रही।

थाना बाजार खाला पुलिस ने अवैध गैस रिफिलिंग का पकड़ा बड़ा जखीरा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। आर्य प्रवाह. राजधानी लखनऊ के बाजार खाला थाना क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार को थाना प्रभारी संतोष कुमार ने गैस रिफ़िलंग करने वालों पर एक बड़ा अभियान चलाकर कार्रवाई की. कुछ दिन पूर्व दुबग्गा में अवैध गैस रिफिलिंग के काला बाजार से एक विस्फोट हुआ था इस दौरान लखनऊ कमिश्नर ने जोन के सभी डीसीपी को आदेश दिए कि अवैध गैस रिफिलिंग रिफलिंग करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाए. तदोपरान्त बाजार खाला थाना प्रभारी संतोष कुमार आर्य ने ने पुलिस बल के साथ आज दिन शनिवार 7 दिसंबर को अवैध गैस रिफिलिंग की सूचना मिली सूचना मिलते ही मौके पर पहुंच कर देखा गया की मकान न. 293/261 बंगाली बाबा का मकान किराए पर लेकर दिनेश कुमार अवस्थी ऊर्फ मामा पुत्र स्व. राम खेलावन अवस्थी उम्र करीब 59 वर्ष निवासी 293/463ए पुराना हैदरगंज थाना बाजार खाला लखनऊ द्वारा रिफिलिंग कराई जाती है मौके पर 15 बड़े गैस सिलेंडर बरामद हवे तदोपरांत मौक़े पर सप्लाई इंस्पेक्टर को बुलाकर आवश्यक बैधानिक कार्यवाही की.

हजरतगंज में मुस्लिम समुदाय ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचारों खिलाफ किया विरोध प्रदर्शन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। हजरतगंज में रविवार को मुस्लिम समुदाय ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे कथित अत्याचारों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने बांग्लादेश मुर्दाबाद के नारे लगाए और बांग्लादेश के प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस का पुतला दहन किया। यह प्रदर्शन भाजपा कार्यालय के बाहर आयोजित किया गया, जहां मुस्लिम समाज ने इन घटनाओं की निंदा करते हुए बांग्लादेश में हिंदू समुदाय को न्याय दिलाने की मांग उठाई।

ऑपरेशन मुस्कान के तहत कुरावली पुलिस ने महिला को परिजनों से मिलवाया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

कुरावली। ऑपरेशन मुस्कान के तहत कुरावली पुलिस ने बिछड़े मानसिक रूप से विच्छुब्द महिला को उसके परिवारजनों से मिलवाया। बहन के घर जाने को निकली थी महिला, रास्ता भूलने से भटक गई थी। ऑपरेशन मुस्कान के तहत महिला उपनिरीक्षक साक्षी तोमर ने भटकी महिला को सकुशल परिजनों को सोपा। मैनपुरी के कस्बा कुरावली क्षेत्र ग्राम रीछपुरा से मानसिक रूप से विच्छुब्द महिला मोहरश्री पत्नी करन निवासी ग्राम महाराजपुर थाना औछा रास्ता भूल कर भटक गई। महिला अपनी बहन सविता पत्नी बंटू निवासी भरतपुरा कुरावली के घर जाने को निकली थी। अपने गांव से निकलने के बाद कुरावली के रीछपुरा पहुंची जहा वह बीमार महिला भटक गई। कुरावली थाना उपनिरीक्षक साक्षी तोमर को महिला की सूचना मिली तुरंत महिला से मिल जानकारी जुटाई परंतु महिला कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं थी केवल अपना नाम बता पा रही थी। जिसके बाद पुलिस ने कड़ी महनत की और जानकारी जुटाते हुए मोहरश्री की बहन सरिता का पता जुटा लिया गया और महिला को ऑपरेशन मुस्कान के तहत सकुशल परिजनों को सोप दिया गया।

शून्य से पांच साल तक के 3.54 लाख बच्चों को पोलियो से बचाव की दवा पिलाने का लक्ष्य

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। पल्स पालियों अभियान का शुभारंभ रविवार को नगर पालिका अध्यक्ष सुख सागर मिश्रा ने जिला महिला चिकित्सालय में बच्चे को पोलियोरोधी दवा पिलाकर की । इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रोहताश कुमार तथा जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ. आर.के.सिंह ने भी बच्चों को पोलियो से बचाव की दवा पिलाई । इस मौके पर नगर पालिका अध्यक्ष ने अभिभावकों से अपील की कि वह अपने शून्य से पांच साल तक के सभी बच्चों को पोलियो से बचाव की दवा जरूर पिलाएं । यह दो बूंद जिंदगी की है । इस मौके को हाथ से न जाने दें । मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि अभियान शुक्रवार तक चलेगा । पहले दिन बूथ के माध्यम से पोलियो से बचाव की दवा पिलाई जाएगी । सोमवार से शुक्रवार तक स्वास्थ्य टीमें घर घर जाकर बच्चों को पोलियो से बचाव की दवा पिलाएंगी। बच्चों को बाइवलेन्ट ओरल पोलियो वैक्सीन(बीओपीवी) दी जाएगी जो कि पोलियो वायरस टाइप-वन और टाइप -3 से सुरक्षा प्रदान करती है। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी ने बताया कि शून्य से पांच साल तक के 3.54 लाख बच्चों को पोलियो से बचाव की दवा पिलाने का लक्ष्य है । पोलियो अत्यंत संक्रामक रोग है । यह पोलियो मेलाइटिस वायरस के संक्रमण से होता है जो कि तंत्रिका तंत्र को हानि पहुंचाता है और स्थायी विकलांगता आ जाती है । बड़े प्रयासों के बाद देश पोलियो मुक्त हुआ है । इस मौके पर अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, एन यू एच एम के नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के जिला कार्यक्रम प्रबंधक, सहयोगी संस्था विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ, यूएनडीपी के प्रतिनिधि और लाभार्थी मौजूद रहे ।

कर्मचारियों ने लिया पुरानी पेंशन बहाली का संकल्प

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। अटेवा पेंशन बचाओ मंच जनपद सीतापुर द्वारा पेंशन शहीद डॉ रामाशीष सिंह के शहीदी दिवस के मौके पर शहीद पार्क, लालबाग सीतापुर में पेंशन संकल्प दिवस एवं श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।सभी पेंशन विहीन कर्मचारियों ने डॉ. रामाशीष सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित किए एवं श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर जिला अध्यक्ष अवनीश कुमार ने कहा है कि डॉ. रामाशीष सिंह ने हम सब पेंशन विहीन साथियों के लिए अपनी जान गवाई है।उनकी इस शहादत को बेकार नहीं जाने देंगे और हम समस्त शिक्षक कर्मचारी यह संकल्प लेते हैं कि पुरानी पेंशन की लड़ाई को आर पार लड़कर इसे अंजाम तक पहुंचा कर रहेंगे। सह जिला महामंत्री विकास सैनी ने कहा कि निजीकरण के कारण देश के आम जनमानस में बेरोज गारी चरम पर पहुंच गई है। जिला उप संयोजक आर. के.अहिरवार ने कहा एनपी एस/यू पी एस और निजी करण के खिलाफ अटेवा के इस देशव्यापी आन्दोलन में सभी प्रबुद्ध और जागरूक नागरिकों की अहम भूमिका की आवश्यकता है।जिला कोषाध्यक्ष अंकुर गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार बंधु ने पुरानी पेंशन की लड़ाई को देश के कोने-कोने तक पहुंचा दिया है, अब हमें इस आन्दोलन में तन-मन-धन से लग जाना चाहिए तभी यह लक्ष्य प्राप्त हो पाएगा। जिला संरक्षिका शशिलता वर्मा ने कहा है कि देश के शिक्षक और कर्मचारी अपने हक पुरानी पेंशन के लिए पूरे देश में आंदोलन छेड़े हुए हैं और सरकार चाहे कोई भी हो एक न एक दिन पुरानी पेंशन बहाल करनी ही पड़ेगी।जिला प्रवक्ता जय प्रकाश ने कहा ओ पी एस की बहाली ही डॉ राम आशीष सिंह के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी इसके लिए देश के हर कर्मचारी को अटेवा से जोड़ेंगे।कार्यक्रम का संचालन जिला प्रचार मंत्री दीपक वर्मा और महेंद्र सिंह ने किया। इस अवसर पर जिला मीडिया प्रभारी सुशील पाण्डेय,जिला सोशल मीडिया प्रभारी फारूक अंसारी,जिला मीडिया प्रभारी संजय कुमार,जिला आईटी प्रभारी सुनील कुमार भारत जिला संगठन मंत्री सुशील कुमार,विवेक विश्वकर्मा व छोटे लाल, अवधेश कुमार,सतेन्द्र कुमार,जिला सह संयोजक वेद प्रकाश,जिला संगठन मंत्री महिला डॉ. सारिका गर्ग,जिला प्रवक्ता आशुतोष सिंह यादव,जिला सह संयोजिका अनुपमा सिंह, सक्रिय सदस्य आभा रानी, दीवानी न्यायलय कोर्ट के जिला मंत्री जीतेन्द्र सिंह यादव,नगर अध्यक्ष मुकेश राठौर,विवेक मिश्रा,ब्लॉक अध्यक्ष रमाकांत वर्मा व अर्जुन सिंह ,ब्लॉक कोष अध्यक्ष मिश्रिख राममूर्ति वर्मा,जिला सह संयोजक सतेंद्र गुप्ता,ब्लॉक सह संयोजक महेंद्र वर्मा,स्वस्थ्य विभाग के जिला उपाध्यक्ष अखिलेश सिंह,डॉ धीरज शुक्ला,डॉ धीर सिंह,डॉ हरि केश कुमार,प्रीतम प्रसाद, रमेश चंद्र गया प्रसाद,संतोष कुमार,रविंद्र कुमार, राजेश, अवधेश कुमार,धर्मेंद्र सिंह, पंकज त्रिवेदी,गुंजन शेखर, अरविन्द कुमार,पंकज कुमार,श्याम किशोर,प्रमोद कुमार संदीप कुमार,पुनीत वर्धन विवेक मिश्रा आदि सैकड़ों शिक्षक/कर्मचारी उपस्थित रहे।

झारखंड जर्नलिस्ट एसोशिएसन की बैठक संपन्न

➢ प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा सहभागिता की अपील

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

निरसा/धनबाद। झारखंड जर्नलिस्ट एसोशिएसन की बैठक रविवार को निरसा विधानसभा के चिरकुंडा नगर परिषद क्षेत्र के पुष्पा लॉज में आयोजन किया गया,बैठक की अध्यक्षता झारखंड जर्नलिस्ट एसोशिएसन के जिला सचिव संतोष साव ने की वही कार्यक्रम का संचालन निरसा विधानसभा जेजेए के अध्यक्ष संजय कुमार शर्मा ने किया । इस बैठक के मुख्यअतिथि के तौर पर धनबाद जिला अध्यक्ष मनीष झा व जिला कोषाध्यक्ष सुनील भण्डारी मुख्य रूप से उपस्थित थे,उपस्थित दर्जनों पत्रकार साथियों ने कई बिंदुओं पर चर्चा किए साथ ही आगामी 25 दिसम्बर 2024 को प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम गढ़वा के बंशीनगर में आयोजन पर ज्यादा से ज्यादा संख्या में जिले भर के झारखंड जर्नलिस्ट एसोशिएसन के साथियों से आग्रह किया गया कि उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनावे। कार्यक्रम के दौरान झारखंड जर्नलिस्ट एसोशिएसन से जुड़े साथियों को आई कार्ड का वितरण किया गया । इस बैठक में विरेन्द्र सिंह,बिजेंद्र वर्मा,अरविंद सिंह, अनोजीत सेन,सलाउद्दीन कुरैशी,प्रदीप राज,रणधीर सिंह उर्फ विट्टू एव नीलरत्न कांजी लाल मुख्य रूप से उपस्थित थे।

युवाओं को दी गई कैरियर अवेयरनेस की जानकारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थान सिधौली में प्रथम स्किलिंग सेंटर हेड कृष्णा तिवारी के द्वारा प्रथम अरोरा ट्रेनिंग सेंटर,लखनऊ में संचालित हॉस्पिटैलिटी व ऑटो मोबाइल कोर्स के सम्बन्ध में जानकारी दी गई तथा स्टूडेंट के इनरोलमेंट बैच %कोर्स की ड्यूरेशन व प्लेस मेंट के बारे में बताया गया। इस अवसर पर संस्था के प्रमुख व संस्थापक आर डी वर्मा द्वारा स्टूडेंट को प्रथम द्वारा संचालित कोर्स की जानकारी उपस्थित स्टूडेंट को दी गई।पेस सेंटर के सेंटर हेड कृष्णा तिवारी द्वारा युथ को होटल इंडस्ट्री व प्लसमेन्ट की जानकारी दी गईं। इस अवसर पर संस्थापक आर डी वर्मा द्वारा सेंटर पर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को भेजने की बात भी की गईं।भविष्य में इस संस्थान के साथ एग्रीमेंट करने की योजना है।इस मौके पर प्रथम डिजिटल प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर भाष्कर तिवारी भी उपस्थित रहे।उक्त कैरियर अवेयरनेस कार्यक्रम में युवाओं को हुनर मंद बनाने व उनके जीवन कौशल में बदलाव को लेकर प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा मुहिम चलाई जा रही है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को जोड़ा का रहा हैं।

सन्त जोसफ कम्युनिटी हेल्थ सेंटर में मनाया गया विश्व दिव्यांग दिवस

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। सन्त जोसफ कम्युनिटी हेल्थ सेन्टर महमूदाबाद में दिव्यांग बच्चों के लिए खेल प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, चिड़िया उड़ प्रतियोगिता,पासिंग द पार्सल प्रतियोगिता जैसे कई कार्यक्रम किये गये।इन सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम,द्वितीय,तृतीय स्थान पाने वाले दिव्यांग बच्चों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के राज वित्त सचिव आईए एस अधिकारी मिनिस्ती एस के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि ब्लाक महमूदाबाद के खण्ड विकास अधिकारी संदीप कुमार,समाज कल्याण विभाग? अधिकारी प्रेमचंद्र ब्लाक महमूदाबाद, कोतवाली महमूदाबाद से उप निरीक्षक प्रदीप पाण्डे, शैलेन्द्र दुबे, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र महमूदाबाद की बी एम सी एकता शर्मा भी उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री प्रकाश, पूनम वर्मा,अमन वर्मा,रंजना वर्मा,सूरज कुमार आदि लोगों ने काफी सहयोग प्रदान किया।दिव्यांग बच्चों को आई ए एस अधिकारी मिनिस्ती एस ने अपने वक्तव्य में दिव्यांग शब्द और भावनाओं को सम्मान देकर उन्हें गरिमामयी पूर्ण तरीके से जीवन व हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।दिव्यांगजनों को जब भी अवसर मिला तो अपनी प्रतिभा से उन्होंने इस शब्द की पुष्टि की है। और जिन्हें भी मंच व समाज का प्रोत्साहन व सहयोग मिला तो उन्होंने संपूर्ण देश-दुनिया में मानवता को लेकर अपनी प्रतिभा का लाभ दिया है। और यह साबित किया कि वे हर जगह पर किसी से कम नहीं हैं। विश्व दिव्यांग दिवस इसी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए समाज को नई प्रेरणा प्रदान करने का माध्यम है। और दिव्यांग बच्चो ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। दिव्यांग बच्चों ने सुबह खेल प्रतियोगिता में जमकर अपनी रुचि दिखाई चित्र कला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कशिश,नगमा और द्वितीय स्थान नदीम व तृतीय स्थान जसीम को प्राप्त हुआ।पासिंग द पार्सल में छोटू प्रथम,जुबेर द्वितीय मिस्फा अनीश तृतीय स्थान प्राप्त कर अपनी अपनी रुचि दिखाई।चिड़िया उड़ प्रतियोगिता में सरवन प्रथम अफसाना द्वितीय सावित्री तृतीय स्थान प्राप्त कर अपनी अपनी रुचि दिखाई। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले वाले सभी प्रतिभागी दिव्यांग उत्तम कुमार, अनीता,अनुभव, नगमा, वंदना, मीना सोनी,सहित नर्सिंग स्टॉप के द्वारा बॉलीवुड डांस कर अपनी प्रतिभा दिखाई। दिव्यांगों के उत्थान के लिए कार्य करने वालों को भी सम्मानित किया। इस दिव्यांग विश्व दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी दिव्यांग बच्चों को पुरुस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कांग्रेस हो या समाजवादी पार्टी वहां सिर्फ परिवारवाद और जाति विशेष के लोगों का ही भला हो सकता है: सुभाष यदुवंश

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। भारतीय जनता पार्टी कार्यालय पर रविवार शाम को मंडल चुनाव अधिकारी बैठक में पहुंचे मुख्य अतिथि संगठन चुनाव पर्यवेक्षक प्रदेश महामंत्री सुभाष यदुवंश का जोरदार स्वागत जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन की अगुआई में हुआ। बैठक में मुख्य अतिथि सुभाष यदुवंश ने कार्यकर्ताओं के प्रेम, जोश और सत्कार का अभिवादन करते हुए कहा कि हरदोई प्रथम आगमन का यह पल वह जीवन भर याद रखेंगे। कहा कि हरदोई जनपद ने ऐसे रिकॉर्ड बनाए है कि प्रदेश से लेकर देश तक में चर्चा है। जिलाध्यक्ष अजीत सिंह और उनकी टीम के साथ ही कार्यकर्ताओं की मेहनत को प्रणाम किया। संगठन चुनाव की समीक्षा करते हुए सभी चुनाव अधिकारियों से बूथ लेवल से लेकर मंडल और नगर के विषय में गहन चर्चा की और सुझाव भी दिए। सुभाष यदुवंश ने राजनीति में अपना कैरियर बनाने वाले नए युवा साथियों को संदेश देते हुए

कहा कि राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जहां सेवा के माध्यम से आपको अपनी स्किल्स को दिखाने का मौका मिलता है। उसमें भी भाजपा एकमात्र ऐसा दल नहीं परिवार है जहां कार्यकर्ता जमीन से उठकर असमान तक का सफर कर सकता है, बशर्ते आपको अपने काम के प्रति ईमानदार रहना होगा। संघठन का मतलब सबको साथ लेकर लक्ष्य को प्राप्त करना। लक्ष्य भी ऐसा जिससे सभी वर्ग, धर्म, प्रांत का भला हो सके। विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए सुभाष यदुवंश ने कहा कि कांग्रेस हो या समाजवादी पार्टी वहां सिर्फ परिवारवाद और जाती विशेष के लोगों का ही भला हो सकता है। देश में जात पात की खाई ऐसी दलों की ही देन है। उन्हें अपनी सत्ता बरकरार चाहिए, इसके लिए प्रदेश से लेकर देश का भी बंटाधार करने को तैयार हो जाएंगे। जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन ने मुख्य अतिथि प्रदेश महामंत्री सुभाष यदुवंश के प्रथम आगमन पर कहा कि हरदोई का कार्यकर्ता पार्टी और देश के लिए अपना तन मन अर्पण कर चुका है। उसी का नतीजा प्रदेश से लेकर देश में हरदोई का नाम जगमगा रहा है। जनपद की जनता के अभूतपूर्व आशीर्वाद से सांसद से लेकर बीडीसी और प्रधान पद पर पार्टी का कार्यकर्ता अपनी सेवा दे रहा है। कहा कि हरदोई के कार्यकर्ताओं के लिए एक सुखद स्थिति निर्मित हुई है जहां संगठन चुनाव के पर्यवेक्षक के रूप में प्रदेश महामंत्री सुभाष यदुवंश का सानिध्य प्राप्त हुआ है। संचालन महामंत्री ओम वर्मा ने किया। बैठक में प्रमुख रूप से पूर्व जिला अध्यक्ष राजीव रंजन मिश्रा राम बहादुर सिंह रामकिशोर गुप्ता डीसीबी अध्यक्ष अशोक सिंह पीके वर्मा उपाध्यक्ष राजेश अग्निहोत्री कर्मवीर सिंह चौहान एसपी मौर्य संदीप सिंह संजय सिंह गुड्डू महामंत्री अनुराग मिश्रा सत्येंद्र राजपूत आजाद भदौरिया अजय अवस्थी जिला मंत्री अविनाश पांडे अजय शुक्ला नीतू चंद्रा राम नंदिनी जिला मीडिया प्रभारी गांगेश पाठक प्रचार मंत्री संदीप अवस्थी कार्यालय मंत्री अतुल सिंह आईटी संयोजक सौरभ सिंह गौर अरविंद शुक्ला वेदराम राजपूत अलका गुप्ता आकाश सिंह सत्यम शुक्ला आदि मौजूद रहे।

मैं माधुरी दीक्षित के साथ डांस करने से घबरा रही थी

विद्या बालन

बॉलीवुड अभिनेत्री विद्या बालन दर्शकों की पसंदीदा हॉरर-कॉमेडी फ्रैंचाइज की तीसरी किस्त, भूल भुलैया 3 में मंजुलिका की लोकप्रिय भूमिका को फिर से निभा रही हैं। फिल्म के प्रमोशन के कोलकाता चरण के दौरान पत्रकारों से बातचीत में विद्या ने आइकॉन माधुरी दीक्षित के साथ डांस करने, भूल भुलैया 2 को छोड़ने के अपने फैसले और अन्य बातों के बारे में बात की। आईबीएनएस-टीडब्ल्यूएफ संवाददाता सौविक घोष की रिपोर्ट प्रश्नरू माधुरी दीक्षित के साथ डांस करने का अनुभव कैसा रहा? जवाबरू यह एक शानदार अनुभव था। मुझे माधुरी मैम के साथ ऑनस्क्रीन और ऑफस्क्रीन (प्रमोशनल इवेंट) दोनों जगह डांस करने का शानदार मौका मिला। यह मजेदार था। प्रश्नरू जब आपसे माधुरी दीक्षित के साथ नृत्य करने के लिए कहा गया तो आपकी पहली भावना क्या थी? ए. जाहिर है, मैं थोड़ा नर्वस था, क्योंकि वह एक बेहतरीन डांसर हैं। मैं सोच रहा था कि इसे कैसे कर पाऊँगा। लेकिन मैंने अपने तरीके से कड़ी मेहनत की। वह (माधुरी दीक्षित) बहुत प्यारी थीं। गाने और उसकी ऊर्जा ने मुझे इसे करने के लिए प्रेरित किया।प्रश्नरू कार्तिक आर्यन के साथ काम करने का आपका अनुभव कैसा रहा?कार्तिक बहुत मेहनती अभिनेता हैं। वह फिल्म के हर पहलू पर कड़ी मेहनत करते हैं। जब से मैं फिल्म में काम कर रहा हूँ, मैंने कार्तिक को मार्केटिंग और प्रमोशन सहित प्रोजेक्ट के सभी क्षेत्रों में शामिल होते देखा है। उनके पास ज्ञान है, रुचि है और साथ ही फिल्म के सभी पहलुओं पर कड़ी मेहनत करने की इच्छा भी है। इसलिए यह एक शानदार अनुभव रहा और बहुत आसान भी। हम दोनों शूटिंग की शुरुआत से ही एक-दूसरे के करीब आ गए।फ़ क्या आपने भूल भुलैया 2 की स्क्रिप्ट ठुकरा दी? यदि हाँ, तो क्यों? हां, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं मैं भूल भुलैया से जो प्यार कमा पाया था, उसे खो न दूं। लेकिन जब मैंने दूसरी किस्त देखी, तो मुझे बहुत पसंद आई। इसलिए भूषण कुमार ने मुझे तीसरी किस्त में काम करने के लिए कहा। मैंने हामी भर दी (हंसते हुए)। प्रश्नरू फिल्मों और अभिनय के माध्यम से कोलकाता से आपका गहरा नाता है। शहर के एक सरकारी अस्पताल में जूनियर डॉक्टर की नृशंस बलात्कार-हत्या पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? उत्तररू मुझे हमेशा से लगता है कि कोलकाता और पश्चिम बंगाल में महिलाओं के प्रति सच्चे अर्थों में बहुत सम्मान है। यह खबर सुनकर मैं भी सभी की तरह स्तब्ध रह गया। मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि इस धरती पर इतना जघन्य अपराध हो सकता है। देवियों की धरती पर ऐसी घटना कैसे हो सकती है? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। एएनआई से बात करते हुए विद्या ने बताया कि जब निर्देशक अनीस बज्मी ने माधुरी दीक्षित के साथ डांस फेसऑफ का विचार प्रस्तावित किया तो उनके दिमाग में क्या आया। अब फैशन में हैउन्होंने कहा, ष्जब मुझे एक फिल्म ऑफर हुई, तो मुझे पता था कि हम फिर से अमी जे तोमर करेंगे। इसलिए, अनीस भाई और भूषण भी सोच रहे थे कि इसे कैसे बड़ा बनाया जाए। और फिर, जाहिर है, जब माधुरी जी ने फिल्म के लिए हाँ कहा, तो उनके दिमाग में आया कि हम एक फेस-ऑफ क्यों नहीं करते? तो, फिर वह मेरे पास आए और कहा कि क्या तुम यह करोगी? मैं सोच रही थी, तुम किस बारे में बात कर रहे हो? मैं उनके साथ फेस-ऑफ कैसे करूँगी? लेकिन फिर मैंने तय किया कि मैं यह करूँगी। इसलिए मैंने थोड़ी मेहनत की और मुझे बहुत मजा आया। क्योंकि यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। और वह इसे लेकर बहुत प्यारी थीं। वह जानती थीं कि उनके सामने कोई भी नर्वस हो जाएगा। मुझे लगता है कि मैंने उन्हें ज्यादा नहीं दिखाया कि मैं नर्वस हूँ। लेकिन मैंने कड़ी मेहनत की और मुझे लगता है कि गाना बहुत अच्छे से पिक्चराइज किया गया है।ष् विद्या और माधुरी के डांस की समीक्षा करते हुए कार्तिक ने कहा, ष्मैं उनका फैन हूं। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो मैं उनके घर पहुंच जाता कि प्लीज ये फेस-ऑफ करो। क्योंकि मैं उनके डांस का फैन हूं। ये एक मौका था और आइकॉनिक मूमेंट था। वाकई में, जैसा आपने कहा, ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। ऐसा नहीं है कि ये सिर्फ विद्या के अनुभव के लिए बड़ी बात थी, बल्कि हमारे अनुभव के लिए भी बड़ी बात थी।ष् विद्या के समर्पण और प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कार्तिक ने कहा, ष्और उन्होंने जो किया है, विशेष रूप से, मैं यह कहना चाहूंगा क्योंकि माधुरी जी माधुरी जी हैं। लेकिन उनके सामने खड़े होकर डांस करना और उनके सामने प्रदर्शन करना, यह हर किसी के बस की बात नहीं है। यह आसान नहीं है, यह बहुत कठिन है। और जिस तरह से उन्होंने प्रदर्शन किया, वह अवास्तविक, अविश्वसनीय है। मैं उन्हें एक साथ प्रदर्शन करते देखने के लिए एक फैनबॉय की तरह सेट पर आता था। यह बहुत खूबसूरत था।ष् फिल्म प्रमोशन के दौरान कार्तिक और विद्या ने कुछ मजेदार पल साझा किए, क्योंकि उन्होंने एक सीन को फिर से बनाया। विद्या ने कार्तिक को गर्दन से पकड़ रखा था, जिसे देखकर कार्तिक हंस पड़े। अमी जे तोमार 3.0 को श्रेया घोषाल ने गाया है, जबकि इसके बोल समीर ने लिखे हैं। गाने के नए वर्शन को अमाल मलिक ने फिर से गाया है। मशहूर कोरियोग्राफर चिन्नी प्रकाश ने इन शास्त्रीय नृत्य शैलियों का एक बेहतरीन मिश्रण तैयार किया है। अनीस बज्मी द्वारा निर्देशित और भूषण कुमार द्वारा निर्मित, भूल भुलैया 3 अपने पूर्ववर्तियों के नक्शेकदम पर चलती है, जिसमें हॉरर और कॉमेडी का मिश्रण है। फिल्म में त्रिप्ति डिमरी भी हैं, जिससे यह दिवाली पर रिलीज होने वाली बहुप्रतीक्षित फिल्म बन गई है। 1 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार श्भूल भुलैया 3श् को बॉक्स ऑफिस पर रोहित शेट्टी की सिंघम अगेनश् से बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। दोनों ही फिल्मों ने काफी चर्चा बटोरी है, ऐसे में सिनेमाघरों में होने वाली टक्कर काफी रोमांचक होने की उम्मीद है। फिल्म का निर्माण भूषण कुमार, कृष्ण कुमार और मुराद खेतानी ने किया है। इस गाने में विद्या और माधुरी के बीच एक शानदार फेस-ऑफ दिखाया गया है और यह डांस के दीवानों के लिए एक विजुअल ट्रीट है। एएनआई से बात करते हुए विद्या ने बताया कि जब निर्देशक अनीस बज्मी ने माधुरी दीक्षित के साथ डांस फेस-ऑफ का आइडिया दिया तो उनके दिमाग में क्या आया। उन्होंने कहा, ष्जब मुझे एक फिल्म ऑफर हुई, तो मुझे पता था कि हम फिर से अमी जे तोमर करेंगे। इसलिए, अनीस भाई और भूषण भी सोच रहे थे कि इसे कैसे बड़ा बनाया जाए। और फिर, जाहिर है, जब माधुरी जी ने फिल्म के लिए हाँ कहा, तो उनके दिमाग में आया कि हम एक फेस-ऑफ क्यों नहीं करते? तो, फिर वह मेरे पास आए और कहा कि क्या तुम यह करोगी? मैं सोच रही थी, तुम किस बारे में बात कर रहे हो? मैं उनके साथ फेस-ऑफ कैसे करूँगी? लेकिन फिर मैंने तय किया कि मैं यह करूँगी। इसलिए मैंने थोड़ी मेहनत की और मुझे बहुत मजा आया। क्योंकि यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। और वह इसे लेकर बहुत प्यारी थीं। वह जानती थीं कि उनके सामने कोई भी नर्वस हो जाएगा। मुझे लगता है कि मैंने उन्हें ज्यादा नहीं दिखाया कि मैं नर्वस हूँ। लेकिन मैंने कड़ी मेहनत की और मुझे लगता है कि गाना बहुत अच्छे से पिक्चराइज किया गया है।ष् विद्या और माधुरी के डांस की समीक्षा करते हुए कार्तिक ने कहा, ष्मैं उनका फैन हूं। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो मैं उनके घर पहुंच जाता कि प्लीज ये फेस-ऑफ करो। क्योंकि मैं उनके डांस का फैन हूं। ये एक मौका था और एक आइकॉनिक मूमेंट था। वाकई, जैसा कि आपने कहा, ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। ये सिर्फ विद्या के अनुभव के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे अनुभव के लिए भी बड़ी बात थी।ष् विद्या की लगन और परफॉरमेंस की तारीफ करते हुए कार्तिक ने कहा, ष्और उन्होंने जो किया, खास तौर पर, मैं ये इसलिए कहना चाहूंगा क्योंकि माधुरी जी तो माधुरी जी हैं। लेकिन उनके सामने खड़े होकर डांस करना और उनके सामने परफॉर्म करना, ये हर किसी के बस की बात नहीं है। ये आसान नहीं है, ये बहुत मुश्किल है। और जिस तरह से उन्होंने परफॉर्म किया, वो अवास्तविक, अविश्वसनीय है। मैं उन्हें साथ में परफॉर्म करते देखने के लिए एक फैनबॉय की तरह सेट पर आता था। ये बहुत खूबसूरत था।ष् फिल्म प्रमोशन के दौरान, कार्तिक और विद्या ने कुछ मजेदार पल साझा किए क्योंकि उन्होंने एक दृश्य को फिर से बनाया। विद्या ने कार्तिक को उसकी गर्दन से पकड़ लिया, जिससे बाद में हंसी फूट पड़ी। अमी जे तोमार 3.0 को श्रेया घोषाल ने गाया है, जिसके बोल समीर ने लिखे हैं। गाने के नए संस्करण को अमाल मलिक ने दोहराया है। प्रशंसित कोरियोग्राफर चिन्नी प्रकाश ने इन शास्त्रीय नृत्य रूपों का एक मंत्रमुग्ध मिश्रण तैयार किया है। अनीस बज्मी द्वारा निर्देशित और भूषण कुमार द्वारा निर्मित, भूल भुलैया 3 अपने पूर्ववर्तियों के नक्शेकदम पर चलती है, जिसमें हॉरर और कॉमेडी का संयोजन है। फिल्म में त्रिप्ति डिमरी भी हैं, जो इसे एक बहुप्रतीक्षित दिवाली रिलीज बनाती है। 1 नवंबर को सिनेमाघरों में आने के लिए तैयार, श् भूल भुलैया 3 श् का सामना रोहित शेट्टी की श्सिंघम अगेनश् से बॉक्स ऑफिस पर बड़ी चुनौती है फिल्म का निर्माण भूषण कुमार, कृष्ण कुमार और मुराद खेतानी ने किया है।

एक्टर शरद कपूर पर यौन शोषण का केस

एक्टर शरद कपूर पर महिला ने छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, महिला ने खार पुलिस स्टेशन में केस दर्ज कराया है। इसमें बताया कि एक्टर से उसकी फेसबुक पर दोस्ती हुई थी। दोनों ने वीडियो कॉल पर बात की। शरद ने उसे काम दिलाने का वादा किया। शूटिंग के बारे में बात करने के बहाने उसे ऑफिस बुलाया। शरद ने उसे खार में अपने ऑफिस आने के लिए लोकेशन भेजी। लेकिन जब वह वहां पहुंची, तो पता चला कि वह ऑफिस नहीं, बल्कि शरद का घर था। वहां उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। फिलहाल, शरद कपूर ने इस मामले पर कोई बयान नहीं दिया है। शरद कपूर 1996 से फिल्म इंडस्ट्री में एक्टिव हैं। पीड़ित ने कहा- एक्टर ने बैड टच करने की कोशिश की पीड़ित ने पुलिस को बताया- जब वह शरद कपूर के घर की तीसरी मंजिल पर पहुंची, तो एक व्यक्ति ने दरवाजा खोला और शरद ने अंदर से आवाज देकर उसे अपने बेडरूम में आने को कहा। इसके बाद उसने बॉडी टच करने की कोशिश की। वह वहां से भाग आई तो शाम को शरद ने महिला को वॉट्सऐप पर गाली-गलौज के मैसेज भेजे। पीड़ित ने इस घटना के बारे में पहले अपने एक दोस्त को बताया, फिर भारतीय दंड संहिता की धारा 74 (महिला पर हमला या बल प्रयोग), 75 (यौन उत्पीड़न), और 79 (महिला की इज्जत का अपमान) के तहत केस दर्ज कराया। शरद राजकुमार कोहली की मल्टीस्टारर फिल्म जानी दुश्मन में भी नजर आए थे। सुष्मिता के साथ डेब्यू, पूर्व सीएम की पोती से शादी शरद कपूर ने हिंदी और बंगाली फिल्मों में काम किया है। उन्होंने 1996 में फिल्ममेकर महेश भट्ट की फिल्म दस्तक में पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन के साथ डेब्यू किया था। यह सुष्मिता की भी डेब्यू फिल्म थी। इस फिल्म में उन्होंने श्साइको लवरश् का किरदार निभाया था। शरद ने शाहरुख खान, गोविंदा, संजय दत्त, ऐश्वर्या राय जैसे बड़े सितारों के साथ काम किया है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर की थी। शरद कपूर जोश, एलओसी कारगिल और लक्ष्य जैसी फिल्मों में नजर आए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, शरद ने 2008 में पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु की पोती, कोयल बसु से शादी की थी। शरद कपूर को आखिरी बार फिल्म द गुड महाराजा में देखा गया था। यह फिल्म साल 2022 में रिलीज हुई थी। जबकि उनका आखिरी टीवी शो चाहत और नफरत था, जो 1996 में आया था। मलयालम इंडस्ट्री में सेक्शुअल हैरेसमेंट के कई मामले, सरकार ने कमेटी बनाई इसके अलावा फरवरी 2017 में मलयालम फिल्म इंडस्ट्री की एक एक्ट्रेस के साथ चलती कार में सेक्शुअल हैरेसमेंट हुआ था। इस घटना के पीछे एक्टर दिलीप का नाम सामने आया था, जिसके बाद मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर कई लोगों ने आवाज उठाई थी। इस घटना के बाद सरकार ने हेमा कमेटी का गठन किया। इस कमेटी ने दिसंबर 2019 में अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी, जो 5 साल बाद अब सामने आई थी, जिसमें मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में चल रहे कास्टिंग काउच और सेक्सुअल हैरेसमेंट जैसे गंभीर मुद्दों का जिक्र है। गूगल पर लगातार ट्रेंड कर रहे हैं शरद कपूर छेड़छाड़ के आरोपों के बीच शरद कपूर को गूगल पर सर्च करने का ग्राफ अचानक से बढ़ा है।

इस एक्टर से अनुष्का शर्मा को लगता है डर

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा इन दिनों अपने बच्चों और पति विराट कोहली संग क्वालिटी टाइम स्पेंड कर रही हैं. इसी बीच हम आपको लिए उनका एक दिलचस्प किस्सा ढूंढकर लाए हैं. बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा इन दिनों अपने बच्चों और पति विराट कोहली संग क्वालिटी टाइम स्पेंड कर रही हैं. इसी बीच हम आपको लिए उनका एक दिलचस्प किस्सा ढूंढकर लाए हैं. फिल्म 'रब ने बना दी जोड़ी' से शाहरुख खान संग बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली अनुष्का शर्मा अपनी एक्टिंग के साथ चुलबुले और बेबाक अंदाज के लिए भी काफी फेमस हैं. हर कोई ये बात जानता है कि अनुष्का काफी फनी हैं और वो आसानी से दोस्त बना लेती हैं. यही वजह है कि इंडस्ट्री में एक्ट्रेस एक नहीं बल्कि कई गहरे दोस्त हैं. लेकिन यहां हम आपको उस एक्टर से मिलवा रहे हैं. जिससे अनुष्का भी काफी डरती हैं. जानिए उनका नाम.... अनुष्का शर्मा ने अपने अभी तक के एक्टिंग करियर में कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया है. इतना ही नहीं अनुष्का का नाम उन एक्ट्रेसेस की लिस्ट में भी शुमार है. जो इंडस्ट्री के तीनों खान यानि शाहरुख , आमिर और सलमान खान संग काम कर चुकी है. वहीं अब आप ये सोच रहे होंगे कि आखिर इतने बड़े स्टार्स के साथ काम कर चुकी अनुष्का को किस एक्टर से डर लगता है. तो चलिए हम बता देते हैं कि वो कोई और नहीं बल्कि इंडस्ट्री में सबके चहेते भाईजान यानि सलमान खान हैं. जी हां इसका खुलासा खुद अनुष्का शर्मा अपनी जुबानी ही कर चुकी हैं. दरअसल सलमान खान और अनुष्का शर्मा ने एकसाथ फिल्म 'सुल्तान' में काम किया था. जो ब्लॉकबस्टर हिट रही थी. इस फिल्म में अनुष्का और सलमान खान पहलवान का दमदार का किरदार निभाया था. जो दर्शकों को भी खूब पसंद आया था. वहीं दोनों स्टार्स फिल्म की रिलीज से पहले इसका प्रमोशन करने कपिल शर्मा के शो पर पहुंचे थे. इस दौरान अनुष्का और सलमान ने फिल्म की शूटिंग के कई दिलचस्प किस्से फैंस के साथ शेयर किए थे. जिसे सुन हर कोई हंसी से लोटपोट हो गया था. इसी बीच जब कपिल ने अनुष्का से सवाल किया कि आपको सबसे ज्यादा डर किस एक्टर के साथ काम करने में लगता है. तो एक्ट्रेस काफी डरते-डरते सलमान खान का ही नाम लेती हैं. ये सुनकर सलमान भी काफी चौंक जाते हैं. इसके बाद अनुष्का कहती हैं कि पता नहीं क्यों लेकिन ये जब भी सेट पर होते हैं तो मुझे थोड़ी घबराहट होती है. हालांकि ये कभी कुछ कहते नहीं है, पर मुझे थोड़ा डर लगता है.

भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच डे नाइट टेस्ट, जानें वेन्यू, मौसम, पिच, हेड टू हेड, लाइव टेलीकास्ट और स्ट्रीमिंग समेत पूरी जानकारी

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत दूसरा टेस्ट मैच से एडिलेड में खेला जाएगा। ये मैच डे-नाइट होगा और इसमें पिंक बॉल का इस्तेमाल होगा। पर्थ में शानदार प्रदर्शन करने वाली भारतीय टीम की निगाहें एडिलेड में 4 साल पुराना बदला चुकता करने पर होगी। साल 2020 में एडिलेड में ही पिंक-बॉल टेस्ट खेला गया था। भारतीय टीम उस मैच में 36 रन पर आउट हो गई थी। हालांकि, वह सीरीज जीतने में सफल रही थी। भारतीय टीम दूसरे टेस्ट में आत्मविश्वास से लबरेज होकर मैदान पर उतरेगी। आत्मविश्वास इसका कि पर्थ में पहली पारी में 150 पर आउट होने के बाद 295 रन से जीत दर्ज की। आत्मविश्वास इसका भी कि 2016 के बाद से वह कभी बॉर्डर-गावस्कर नहीं हारी। जहां ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अपनी प्लेइंग इलेवन का ऐलान कर दिया है। जहां जोश हेजलवुड की जगह टीम में स्कॉट बोलैंड को मौका मिला है। वहीं संभावना जताई जा रही है कि, भारतीय टीम में कम से कम 2 बदलाव होंगे। रोहित शर्मा और शुभमन गिल की वापसी होगी। देवदत्त पडिक्कल और ध्रुव जुरेल को बेंच पर बैठना होगा। वहीं यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ओपनिंग करेंगे जबकि कप्तान रोहित शर्मा बीच में किसी भी पोजिशन पर खेल सकते हैं। साथ ही वॉशिंगटन सुंदर की जगह रविंद्र जडेजा को मौका मिल सकता है। ऑस्ट्रेलिय की बात करें तो जोश हेजलवुड चोटिल हैं। वॉशिंगटन सुंदर की जगह रविंद्र जडेजा को मौका मिल सकता है। भारत की संभावित प्लेइंग 11 यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत, रोहित शर्मा, नितीश रेड्डी, वाशिंगटन सुंदरध्रविंद्र जडेजा, हर्षित राणा, मोहम्मद सिराज, जसप्रीत बुमराह। भारत और ऑस्ट्रेलिया हेड टू हेड रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया में भारत ने 53 टेस्ट मैच खेले हैं। इसमें से सिर्फ 10 में जीत मिली है और 30 में हार का सामना करना पड़ा है। खास बात ये है कि इन 10 में से 5 जीत पिछले 2 दौरों और मौजूदा दौरे में मिली हैं। ऑस्ट्रेलिया ने अब तक खेले गए 12 पिंक-बॉल टेस्ट में से 11 जीते हैं। वह 2024 में वेस्टइंडीज के खिलाफहारी थी। भारत ने 4 डे-नाइट टेस्ट में से 3 जीते हैं। इसमें से उनकी एकमात्र हार 2020-21 सीरीज के दौरान एडिलेड में हुई थी टीम दूसरी पारी में 36 रन पर आउट हो गई थी। एडिलेड ओवल के पिच क्यूरेटर डेमियन हॉफ ने पुष्टि की है कि बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट मैच में विकेट पर घास की एक समान परत होगी। सटीक तौर पर 6 मिमी। बुधवार 4 दिसंबर को प्रेस ससे बात करते हुए हॉफी ने कहा कि परिस्थितियां तेज गेंदबाजों के लिए मददगार होंगी। भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया दूसरा टेस्ट टॉस और मैच शुरू होने का समय एडिलेड टेस्ट भारतीय समयानुसार सुबह 9.30 बजे शुरू होगी। टॉस आमतौर पर मैच शुरू होने से आधे घंटे पहले होता है। इसलिए टॉस भारतीय समयानुसार सुबह 9 बजे होगा। भारत और ऑस्ट्रेलिया दूसरा टेस्ट लाइव टेलीकास्ट डिटेल्स भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे टेस्ट मैच स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर लाइव देख सकते हैं। भारत- ऑस्ट्रेलिया दूसरे टेस्ट मैच की लाइव स्ट्रीमिंग डिटेल्स भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे टेस्ट मैच की लाइव स्ट्रीमिंग डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर देख सकते हैं। मौसम रिपोर्ट वहीं एडिलेड के मौसम की बात करें तो, यहां बारिश की संभावना है। एडिलेड ओवल के पिच क्यूरेटर डेमियन हफने मौसम की जानकारी देते हुए।

एडिलेड टेस्ट में 10 विकेट से जीता ऑस्ट्रेलिया

रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम की लगातार चौथी हार

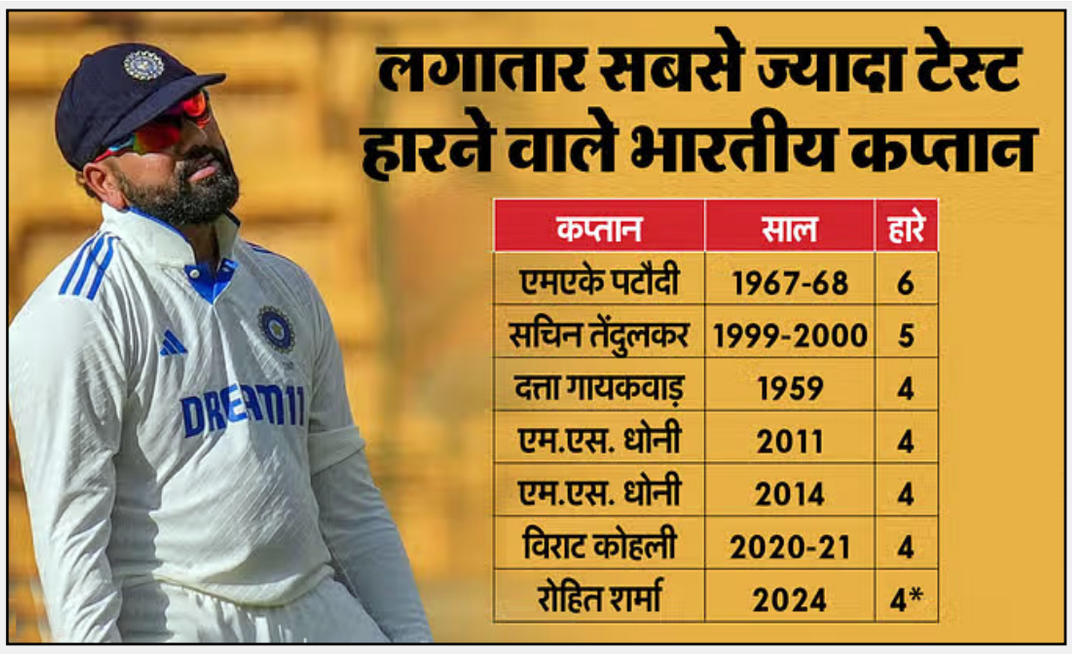

एडिलेड। पहले बैटिंग करते हुए टीम इंडिया ने 180 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 337 रन बनाए और 157 रन की बढ़त हासिल की। भारत की दूसरी पारी 175 रन पर समाप्त हुई और रोहित एंड कंपनी ने 18 रन की बढ़त हासिल की। 19 रन के लक्ष्य को ऑस्ट्रेलिया ने बिना कोई विकेट गंवाए हासिल कर लिया। ऑस्ट्रेलिया ने एडिलेड में खेले गए दूसरे टेस्ट में भारत को 10 विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ ही कंगारू टीम ने सीरीज में वापसी की है और पांच मैचों की सीरीज को फिलहाल 1-1 से बराबर कर दिया है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। पहले बैटिंग करते हुए टीम इंडिया ने 180 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 337 रन बनाए और 157 रन की बढ़त हासिल की। भारत की दूसरी पारी 175 रन पर समाप्त हुई और रोहित एंड कंपनी ने 18 रन की बढ़त हासिल की। 19 रन के लक्ष्य को ऑस्ट्रेलिया ने बिना कोई विकेट गंवाए हासिल कर लिया। उस्मान ख्वाजा नौ रन और मैकस्वीनी 10 रन बनाकर नाबाद रहे। सीरीज का तीसरा मुकाबला ब्रिस्बेन में 14 दिसंबर से खेला जाएगा। पहला टेस्ट भारतीय टीम ने 295 रन से अपने नाम किया था। रोहित की कप्तानी में लगातार चौथी हार रोहित की कप्तानी में टीम इंडिया की यह टेस्ट में लगातार चौथी हार है। इस सीरीज के पहले टेस्ट में बुमराह ने कप्तानी की थी। रोहित ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पिछली सीरीज में कप्तानी की थी। कीवियों ने भारत को उसके घर में 3-0 से हराया था। इसी के साथ रोहित पहली बार लगातार चार टेस्ट हारे हैं। इस मामले में उन्होंने विराट कोहली और धोनी की बराबरी कर ली। इन दोनों ने भी लगातार चार टेस्ट गंवाए थे। ऑस्ट्रेलिया में सबसे कम समय में खत्म हुए टेस्ट (गेंदों के हिसाब से) मैच में कुल गेंद फेंकी गईं मैच स्थान साल 656 गेंद ऑस्ट्रेलिया ऐ दक्षिण अफ्रीका मेलबर्न 1932 866 गेंद ऑस्ट्रेलिया ऐ दक्षिण अफ्रीका ब्रिस्बेन 2022 911 गेंद ऑस्ट्रेलिया ऐ इंग्लैंड सिडनी 1895 1031 गेंद ऑस्ट्रेलिया ऐ भारत एडिलेड 2024 1034 गेंद ऑस्ट्रेलिया ऐ इंग्लैंड ब्रिस्बेन 1950 भारत की दूसरी पारी टीम इंडिया ने रविवार को पांच विकेट पर 128 रन से आगे खेलना शुरू किया और 47 रन बनाने में बाकी बचे पांच विकेट गंवा दिए। टीम इंडिया को रविवार को ऋषभ पंत के रूप में पहला और ओवरऑल छठा झटका लगा। वह 28 रन बना सके। पंत तीसरे दिन के पहले ओवर में स्टार्क का शिकार बने। इसके बाद अश्विन कुछ खास नहीं कर सके और सात रन बनाकर पवेलियन चलते बने। हर्षित राणा खाता नहीं खोल सके और कमिंस का शिकार बने। नीतीश रेड्डी ने छोटी मगर उपयोगी पारी खेली। वह एक बार फिर अर्धशतक से चूक गए और 47 गेंद में छह चौके और एक छक्के की मदद से 42 रन बनाए। वह टीम इंडिया की ओर से हाईएस्ट स्कोरर रहे। वहीं, बोलैंड ने सिराज को हेड के हाथों कैच करा कर भारतीय पारी को 175 रन पर समेट दिया। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान कमिंस ने पांच विकेट लिए, जबकि बोलैंड को तीन विकेट मिले। वहीं, स्टार्क ने दो विकेट लिए। इससे पहले शनिवार को टीम इंडिया ने पांच विकेट गंवाए थे। यशस्वी जायसवाल 24 रन, केएल राहुल सात रन, शुभमन गिल 28 रन, विराट कोहली 11 रन और कप्तान रोहित शर्मा छह रन बनाकर आउट हुए थे। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 337 रन बनाए। उस्मान ख्वाजा को शुक्रवार को बुमराह ने आउट किया था। शनिवार को कंगारुओं ने एक विकेट पर 86 रन से आगे खेलना शुरू किया और 251 रन बनाने में आखिरी के नौ विकेट गंवा दिए। शनिवार को पहले सत्र में मैकस्वीनी (39), स्टीव स्मिथ (2) और मार्नस लाबुशेन के रूप में तीन विकेट गंवाए। लाबुशेन ने 64 रन बनाए। मैकस्वीनी और स्मिथ को बुमराह ने आउट किया, जबकि लाबुशेन को नीतीश रेड्डी ने आउट किया। इसके बाद दूसरे सत्र में ऑस्ट्रेलिया के लिए ट्रेविस हेड ने खूब रन बनाए और टेस्ट करियर का आठवां शतक जड़ा। यह भारत के खिलाफ उनका तीसरा टेस्ट रहा। उन्होंने 141 गेंद में 17 चौके और चार छक्के की मदद से 140 रन की पारी खेली। मिचेल मार्श नौ रन, एलेक्स कैरी 15 रन बनाकर आउट हुए। ऑस्ट्रेलिया को आठवां झटका पैट कमिंस के रूप में लगा। बुमराह ने पैट कमिंस को क्लीन बोल्ड किया। कमिंस 12 रन बना सके। डिनर ब्रेक के बाद मिचेल स्टार्क भी 18 रन बनाकर आउट हो गए। वहीं, सिराज ने बोलैंड (0) कर ऑस्ट्रेलिया की पारी को खत्म किया। भारत की ओर से जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज ने चार-चार विकेट लिए। बुमराह और सिराज के अलावा नीतीश रेड्डी और अश्विन को एक-एक विकेट मिला। भारत की पहली पारी टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया की पहली पारी 180 रन पर सिमट गई। भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही थी। यशस्वी मैच की पहली ही गेंद पर एलबीडब्ल्यू आउट हो गए थे। वह खाता नहीं खोल सके। इसके बाद केएल राहुल और शुभमन गिल के बीच दूसरे विकेट के लिए 69 रन की साझेदारी हुई। इस साझेदारी को स्टार्क ने तोड़ा। उन्होंने राहुल को पवेलियन भेजा। राहुल 37 रन बना सके। उनके आउट होते ही विकेट की झड़ी लग गई। विराट कोहली सात रन, शुभमन गिल 31 रन और कप्तान रोहित शर्मा तीन रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद ऋषभ पंत ने टिकने की कोशिश की, लेकिन कमिंस ने उन्हें भी पवेलियन भेज दिया। पंत ने 21 रन बनाए। जहां भारत का स्कोर एक वक्त एक विकेट पर 69 रन था, वो कुछ देर बाद पांच विकेट पर 87 रन हो चुका था। यानी 18 रन बनाने में भारत ने चार और विकेट गंवा दिए थे। अश्विन ने नीतीश रेड्डी के साथ पारी संभालने की कोशिश की और सातवें विकेट के लिए 32 रन की साझेदारी निभाई। स्टार्क ने फिर एकबार खलल डाला और अश्विन को चलता किया। वह 22 रन बना सके। हर्षित राणा और जसप्रीत बुमराह खाता खोले बिना आउट हुए। नीतीश आखिरी विकेट के रूप में 54 गेंद में तीन चौके और तीन छक्के की मदद से 42 रन बनाकर स्टार्क के छठे शिकार बने। स्टार्क के अलावा पैट कमिंस और बोलैंड को दो-दो विकेट मिले। स्टार्क ने 48 रन देकर छह विकेट लिए जो उनके करियर के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी आंकड़े हैं। उनके टेस्ट करियर का यह 15वां फाइव विकेट हॉल रहा।

भारत पर मंडराया एडिलेड में हार का खतरा

तेज गेंदबाजी आक्रमण के सामने शीर्ष बल्लेबाजों का समर्पण

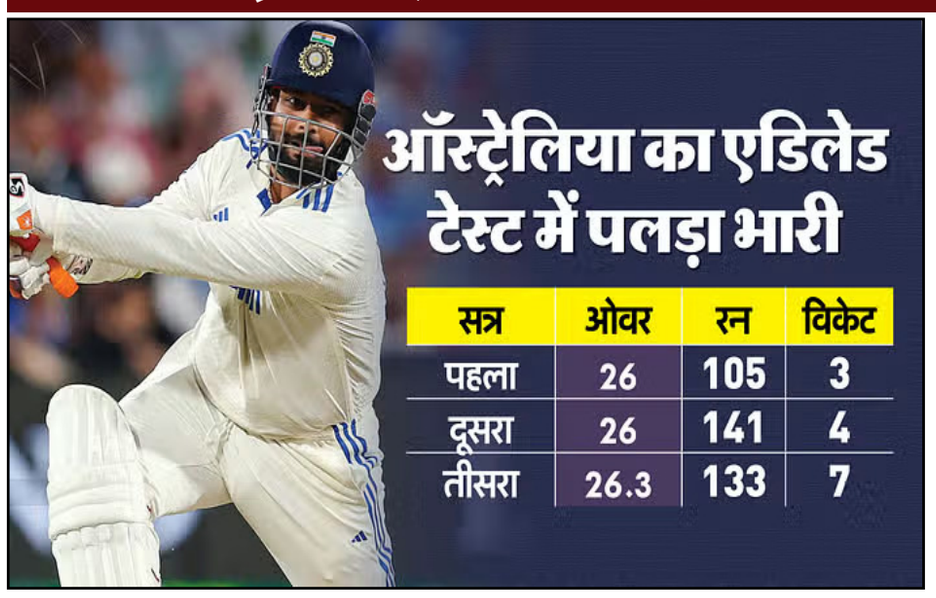

एडिलेड। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक भारत ने दूसरी पारी में 128 रन पर अपने पांच विकेट गंवा दिए। भारतीय टीम अब भी ऑस्ट्रेलिया से 29 रन पीछे है। स्टंप्स के समय ऋषभ पंत 28 रन और नीतीश रेड्डी 15 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। ऑस्ट्रेलिया के लिए पैट कमिंस और स्कॉट बोलैंड ने दो-दो विकेट लिए, जबकि मिचेल स्टार्क को एक विकेट मिला। भारत पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफएडिलेड में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच में हार का खतरा मंडरा रहा है। ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में ऑलआउट करने के बाद उतरी भारतीय टीम की बल्लेबाजी दूसरी पारी में फ्लॉप साबित हुई और शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों का तेज गेंदबाजी आक्रमण के सामने समर्पण जारी रहा। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 337 रन बनाकर 157 रनों की बढ़त हासिल की थी। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक भारत ने दूसरी पारी में 128 रन पर अपने पांच विकेट गंवा दिए। भारतीय टीम अब भी ऑस्ट्रेलिया से 29 रन पीछे है। स्टंप्स के समय ऋषभ पंत 28 रन और नीतीश रेड्डी 15 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। ऑस्ट्रेलिया के लिए पैट कमिंस और स्कॉट बोलैंड ने दो-दो विकेट लिए, जबकि मिचेल स्टार्क को एक विकेट मिला। भारत का जिस तरह का प्रदर्शन रहा है, उससे इस डे-नाइट टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया का पलड़ा भारी नजर आ रहा है। भारत ने जसप्रीत बुमराह की अगुआई में पर्थ में खेले गए पहले टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया को हराया था, लेकिन रोहित शर्मा की कप्तानी में वह दूसरे टेस्ट में मुश्किल में घिरती दिख रही है। भारत की दूसरी पारी ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में ऑलआउट करने के बाद उतरी भारतीय टीम की बल्लेबाजी दूसरी पारी में बेहद खराब रही। यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल की ओपनिंग जोड़ी विफल रही और टीम को मजबूत शुरुआत नहीं दिला सकी। सबसे पहले राहुल आउट हुए जिन्हें कमिंस ने सात रन के स्कोर पर पवेलियन भेजा। फिर बोलैंड ने यशस्वी (24) और विराट कोहली (11) को आउट कर भारत को दोहरा झटका दिया। शुभमन गिल भी अच्छी शुरुआत को बड़ी पारी में तब्दील नहीं कर सके और उन्हें 28 रन के स्कोर पर स्टार्क ने बोल्ड किया। कप्तान रोहित शर्मा की खराब फॉर्म दूसरी पारी में भी जारी रही जो कमिंस की गेंद पर छह रन बनाकर पवेलियन लौटे। ऑस्ट्रेलिया के लिए दूसरे दिन सभी पांच विकेट तेज गेंदबाजों ने झटके और भारत के शीर्ष बल्लेबाजों का उनके सामने समर्पण साफनजर आया। रोहित का फ्लॉप शो जारी भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का वापसी के बावजूद फ्लॉप शो जारी है। पिछले कुछ समय से रन बनाने के लिए जूझ रहे रोहित से दूसरी पारी में काफी उम्मीदें थी, लेकिन एक बार फिर कप्तान ने निराश किया। रोहित खुद को मिले जीवनदान का फायदा भी नहीं उठा सके, जो उन्हें स्टार्क की गेंद पर मिला था जब वह खाता भी नहीं खोल सके थे। यह घटना 18वें ओवर की है। स्टार्क ने इस ओवर की तीसरी गेंद बाउंसर फेंकी, जिस पर रोहित ने आगे बढ़कर डिफेंड करने की कोशिश की। लेकिन गेंद सीधे उनके पैड पर जा लगी। अंपायर ने तुरंत उन्हें आउट करार दिया। वहीं, रोहित ने रिव्यू ले लिया। थर्ड अंपायर ने देखा कि स्टार्क ने ओवरस्टेप किया है, जिसके कारण इसे नो बॉल करार दिया गया जिससे रोहित आउट होने से बचे। रोहित इस साल 14वीं बार दहाई अंक का आंकड़ा पार नहीं कर पाए हैं और वह दुनिया के दूसरे ऐसे बल्लेबाज हैं जो इस साल सर्वाधिक बार सिंगल डिजिट स्कोर पर आउट हुआ है।

वह अपनी सेहत के लिए डिसिप्लिंड

नुष्का शर्मा ने बताया कि विराट अपनी हेल्थ और पर्सनालिटी के लिए बहुत सजग हैं और वह अपनी दैनिक दिनचर्या का सख्ती से पालन करते हैं। उन्होंने कहा कि, विराट अपनी सेहत के लिए डिसिप्लिंड हैं। व रोज सुबह उठकर कार्डियो करते हैं और हर रोज मेरे साथ क्रिकेट प्रैक्टिस करते हैं। उनका खान-पान बहुत साफसुथरा है।

टीम इंडिया के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली जितने ज्यादा मैदान पर अपने प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं उतने ही फिटनेस के लिए भी जाने जाते हैं। बेस्ट फिटनेस के तौर पर अक्सर विराट कोहली का नाम लिया जाता है। उनकी जैसी बॉडी और पर्सनालिटी हर कोई पाना चाहता है। 35 की उम्र में भी वह काफी फिट और यंग दिखते हैं। विराट कोहली की फिटनेस को हासिल करना हर किसी का ख्वाब होता है। इसके लिए टीम इंडिया के स्टार खिलाड़ी खूब पसीना बहाते हैं कड़ी मेहनत करते हैं। इस उम्र में उनकी फिटनेस का क्या राज है इसका खुलासा उनकी पत्नी और बॉलीवुड स्टार अनुष्का शर्मा ने किया है। विराट कोहली कई लोगों की प्रेरणा हैं। अनुष्का शर्मा ने बताया कि विराट अपनी हेल्थ और पर्सनालिटी के लिए बहुत सजग हैं और वह अपनी दैनिक दिनचर्या का सख्ती से पालन करते हैं। उन्होंने कहा कि, विराट अपनी सेहत के लिए डिसिप्लिंड हैं। व रोज सुबह उठकर कार्डियो करते हैं और हर रोज मेरे साथ क्रिकेट प्रैक्टिस करते हैं। उनका खान-पान बहुत साफ सुथरा है। वह जंक फूड बिलकुल भी नहीं खाते वा शक्कर या ड्रिंक्स लेते हैं। उन्होंने 10 साल से बटर चिकन नहीं खाया है। अनुष्का ने आगे बताया कि, वह नींद से समझौता नहीं करते और इस बात का ख्याल रखते हैं कि उन्हें पूरा आराम मिले ताकी वह अपने काम और खेल में अच्छे से फोकस कर सकें। उनकी फिटनेस के लिए कमिटमेंट ही दिखाता है कि वह दुनिया के टॉप खिलाड़ी बने हुए हैं।

मिचेल स्टार्क ने कपिल देव-रिचर्ड हेडल को पछाड़ा, यशस्वी जायसवाल को पहली ही गेंद पर किया बोल्ड

भारत और ऑस्ट्रेलिया पिंक बॉल टेस्ट की शुरुआत यशस्वी जायसवाल के विकेट से हुई। मिचेल स्टार्क ने शुक्रवार को पहली ही गेंद पर बाएं हाथ के ओपनर बल्लेबाज एलबीडब्ल्यू कर दिया। जायसवाल ने पर्थ में खेले गए पिछले टेस्ट में ऐसा प्रदर्शन किया था कि किसी को ये उम्मीद नहीं थी कि भारत की शुरुआत ऐसी होगी। स्टार्क ने ऐसा करके दिग्गज कपिल देव और रिचर्ड हेडली जैसे खिलाड़ियों को पीछे छोड़ दिया। उन्होंने तीसरी बार मैच की पहली गेंद पर विकेट लिया। मिचेल स्टार्क ने 140.0 किलोमीटर प्रतिघंटे से गेंद फेंकी। ओवर द विकेट ऊपर पिच हुई गेंद देरी स्विंग हुई। यशस्वी जायसवाल ने फ्लिक करने की कोशिश की। गेंद पैड पर लगी। बॉल ट्रैकिंग से पता चला कि गेंद लेग स्टंप पर लगी। जायसवाल ने केएल राहुल से बात की और रिव्यू नहीं लेने का फैसला किया जो कि ठीक भी रहा। जायसवाल ने पर्थ में 161 रन की बेहतरीन पारी खेली थी। इस दौरान उन्होंने स्टार्क से कहा था कि तुम बहुत धीमी गेंदबाजी कर रहे हो। स्टार्क ने इस मैच में पहली ही गेंद पर आउट करके बदला लिया। मिचेल स्टार्क ने तीसरी बार टेस्ट मैच की पहली गेंद पर विकेट लिया। रिचर्ड हैडली, ज्योफ अर्नाल्ड, कपिल देव और सुरंगा लकमल ने दो-दो बार ऐसा किया। मिचेल स्टार्क के अलावा वेस्टइंडीज के पेड्रो कॉलिंस ने 3 बार ऐसा किया है। जायसवाल के बाद शुभमन गिल क्रीज पर उतरे। उन्होंने स्टार्क को लगातार 2 चौके लगाए।

केएल राहुल बिना आउट हुए लौट रहे थे पवेलियन, थर्ड अंपायर ने दे दिया जीवनदान

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच एडिलेड ओवल में दूसरा टेस्ट मैच खेला जा रहा है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया की शुरुआत तो अच्छी नहीं रही, लेकिन केएल राहुल और शुभमन गिल की जोड़ी ने अर्धशतकीय साझेदारी कर टीम को संभाला। एक समय ऐसा था जब राहुल बिना खाता खोले पवेलियन लौटने लगे थे, लेकिन थर्ड अंपायर के कारण उन्हें जीवनदान मिला। हालांकि, इस जीवनदान का भी फायदा राहुल नहीं उठा पाए और महज 37 रन बनाकर मिचेल स्टार्क का शिकार बन गए। केएल राहुल को जीवनदान मिलने की घटना पारी के 8वें ओवर की है। ओवर की पहली गेंद लेकर आए स्कॉट बोलैंड ने राहुल को अपने जाल में फंसा लिया था। पहली ही गेंद पर राहुल चकमा खा गए थे और विकेट के पीछे अपना कैच थमा बैठे थे। विकेट कीपर के हाथों में गेंद जाते ही राहुल निराश होकर पवेलियन की ओर बढ़ने लगे थे। लेकिन उसी दौरान अंपायर ने उन्हें रोका और थर्ड अंपायर के कहने पर बोलैंड की पहली गेंद को नो बॉल करार दिया। राहुल को इस तरह जीवनदान मिला। लेकिन कुछ देर बाद जब स्निको मीटर में देखने को मिला केएल राहुल के बैट पर गेंद ही नहीं लगी थी, वह बिना आउट हुए ही पवेलियन लौट रहे थे। हालांकि, नो बॉल ने उन्हें बचा लिया अगर थर्ड अंपायर उस गेंद को नो बॉल करार नहीं देते तो राहुल बिना आउट हुए ही पवेलिय लौट जाते।

एडिलेड टेस्ट मैच पर बारिस का साया? जानें पिच रिपोर्ट और मौसम का मिजाज

भारत और ऑस्ट्रेलियाई टीम 10 दिन के ब्रेक के बाद एक बार फिर आमने-सामने होगी। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का दूसरा टेस्ट मैच एडिलेड में खेला जाएगा। भारत ने पर्थ में जीत हासिल की थी जिसके बाद वह सीरीज में 1-0 से आगे है। अब उसकी नजर एडिलेड टेस्ट पर है जिसे जीतकर वह इस सीरीज में बढ़त हासिल करने पर होगी। जबकि ऑस्ट्रेलिया इस मैच से सीरीज में वापसी करना चाहेगी। पिच क्यूरेटर डेमियम हॉफने एडिलेट टेस्ट की पिच को लेकर बड़ा बयान दिया है। उनका कहना है कि पिच पर 6 मिमी घास होगी, जहां तेज गेंदबाजों को मदद मिलेगी। गेंद स्विंग और सीम करेगी। हालांकि, क्यूरेटर ने ये भी कहा कि वह बैलेंस विकेट बनाना चाहते हैं ताकि बल्लेबाज और गेंदबाज को समान फायदा मिले। भारत ने 2020 में यहां पिंक बॉल टेस्ट खेला था जब भारत 36 रन के स्कोर पर ऑलआउट हो गया था। पहले दिन बारिश की संभावना पिच पर मौसम का भी असर होगा। एडिलेड टेस्ट पर काले बादल भी मंडरा रहे हैं। मैच के पहले दिन बारिश की संभावना है। एक्टूवेदर के अलावा पिच क्यूरेटर का भी कहना है कि पहले दिन आंधी-तूफान के कारण खेल में खलल पड़ सकता है। पहले दिन शुक्रवार को 88 प्रतिशत बारिश के आसार हैं। रात में बादल छाए रहते हैं तो फिर यहां बल्लेबाजी करना मुश्किल है। गेंदबाज बल्लेबाजों पर हावी रहेंगे जबकि दूसरे दिन से मौसम साफरहने की उम्मीद है। भारत ने एडिलेड में 13 टेस्ट मैच खेले हैं जहां उसे सिर्फ2 में जीत मिली है जबकि 8 टेस्ट मैच में उसे हार झेलनी पड़ी हा। वहीं एडिलेड में दोनों के बीच 3 टेस्ट मैच ड्रॉ रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ने एडिलेड में कुल 82 टेस्ट खेले हैं जिसमें से उसे 45 में जीत नसीब हुई है जबकि 18 में हार तो 19 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं।

ऑस्ट्रेलियाई टीम में दरार की अफवाहों पर ये क्या कह गए कप्तान रोहित शर्मा

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी टूर्नामेंट के तहत खेले जा रहे 5 मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबल एडिलेड में खेला जाएगा। ये मैच भारतीय समय के मुताबिक सुबह 9.30 बजे से खेला जाएगा।

चौंपियंस ट्रॉफी के हाइब्रिड मॉडल को अंतिम रूप दिया, 2027 तक सभी आईसीसी टूर्नामेंट के लिए यही योजना

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) में अगले साल होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी को हाइब्रिड मॉडल में आयोजित करने को लेकर आम सहमति बन गई है जिससे भारत को अपने मैच दुबई में खेलने की अनुमति मिल जाएगी।

एडिलेड टेस्ट में जीत की लय बरकरार रखने उतरेगा भारत, प्लेइंग 11 में हो सकते हैं दो बदलाव, जानें

एडिलेड। रोहित शर्मा ने आदर्श कप्तान की मिसाल पेश करते हुए दूसरे टेस्ट मैच में मध्यक्रम में खेलने का फैसला किया है। पहले टेस्ट में बड़ी जीत से उत्साहित भारतीय टीम गुलाबी गेंद से अपने रिकॉर्ड में सुधार करने की कोशिश करेगी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच शुक्रवार से एडिलेड में पिंक बॉल से दूसरा टेस्ट खेला जाएगा। पर्थ टेस्ट में शानदार जीत के साथ भारतीय टीम पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 1-0 से आगे चल रही है। अब उनकी नजर सीरीज में बढ़त बनाने पर टिकी होगी। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा वापसी के लिए तैयार हैं।

पहले मुकाबले में वह अपने दूसरे बच्चे के जन्म के कारण शामिल नहीं हो सके थे। उनकी वापसी से प्लेइंग 11 में क्या बदलाव होंगे यह देखने वाली बात होगी। रोहित शर्मा की गैरमौजूदगी में केएल राहुल ने यशस्वी जायसवाल के साथ पारी की शुरुआत की थी। दोनों के बीच पहले टेस्ट की दूसरी पारी में 201 रन की साझेदारी हुई थी। जायसवाल ने 161 और केएल ने 77 रनों की पारी खेली। हिटमैन अब दूसरे टेस्ट में खेलने के लिए तैयार हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ खेले गए मैच में रोहित चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे। गुरुवार को मैच से पहले भारतीय कप्तान ने अपने बैटिंग ऑर्डर को लेकर चल रही अटकलों पर पूर्णविराम लगा दिया। रोहित शर्मा ने आदर्श कप्तान की मिसाल पेश करते हुए दूसरे टेस्ट मैच में मध्यक्रम में खेलने का फैसला किया है। पहले टेस्ट में बड़ी जीत से उत्साहित भारतीय टीम गुलाबी गेंद से अपने रिकॉर्ड में सुधार करने की कोशिश करेगी। कप्तान ने वापसी पर मध्य क्रम में बल्लेबाजी करने का फैसला किया है ताकि अच्छी फॉर्म में चल रहे यशस्वी जयसवाल और केएल राहुल पारी का आगाज कर सकें। इन दोनों ने पहले टेस्ट मैच में भारत की दूसरी पारी में बड़ी शतकीय साझेदारी निभाई थी। शुभमन गिल भी अंगूठे की चोट से उबर कर इस मैच में वापसी करेंगे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।